RNI UTTBIL/2014/75489

डाक पंजीकरण संख्या यू0ए0 नैनीताल–275/2018–2020

उत्तराखण्डी भाषाओं की मासिक पत्रिका

कुमगढ़

वर्ष : 07
अंक : 2–3
जुलाई–अगस्त 2020
मूल्य रू. 25/–

उत्तराखण्ड की लोक भाषाओं के दस्तावेजीकरण का सामूहिक प्रयास

प्रभात कुमार उप्रेती

जन्म/मूल गौं/शहर– 2 जून 1944, अल्मोड़ा।
इजा–बौज्यू– श्रीमती भगवती उप्रेती श्री के0एस0 उप्रेती
घरवाई– श्रीमती रीता उप्रेती
च्येलि– कात्यायनी उप्रेती (नवभारत टाइम्स में कार्यरत)
च्यल– परितोष उप्रेती (जयहरिखाल रा0 महाविज्ञालय पौड़ी में प्रवक्ता)
शिक्षा– एम0ए0 (राजनीति शास्त्र)
व्यवसाय– अध्यापन, सेवा निवृत प्रोफेसर–रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़।
शौक– पर्यटन, पढ़ना, पर्यावरण पर लेखन, सामाजिक कार्य।
प्रकाशित ग्रंथ–
1. हिन्दी में– शबंदर हासमी, आदमक कद, इन्सान जिन्दगी में कविता, उत्तराखण्ड की लोक एवं पर्यावरण गाथाएँ व पगलाए लोग आदि ग्रंथ, जिन्दगी में कविता, फागूदास की डायरी, सियासत ए उत्तराखण्ड।
2. कुमाउनी में– पहरु, कुमगढ़ में प्रकाशित लेख, नवभारत टाइम्स में कुमाउनी लेख, आकाशवाणी से कुमाउनी में वार्ताए प्रसारित।
शौक– पर्यटन, पर्यावरण यात्राँए, गाँव गाँव भ्रमण कर सामाजिक कार्य।
संप्रति– आनंदम्, विवेकविहार, गैस गोदाम रोड, कुसुमखेड़ा (हल्द्वानी) नैनी0
मो0 – 9411333434

शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल'

जन्म तिथि– 21, आषाढ़, विक्रमी सं0 2018:
माता–पिता का नाम– स्व० श्रीमति सुभागा देवी भट्ट तथा स्व0 श्री केशवानन्द भट्ट।
जन्म स्थान– ग्राम पोस्टः भट्टवाड़ी, अगस्त्यमुनि, (रुद्रप्रयाग), उत्तराखंड।
संप्रति– श्रीनगर, (पौड़ी), उत्तराखंड।
रचनाकर्म– तीन पुस्तकें प्रकाशित तथा अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय स्तर पर शासकीय व गैरशासकीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, साहित्य संकलनों आदि आदि में निरंतर अनेकानेक आलेखों तथा रचनाओं का प्रकाशन जारी है।
प्रसार भारती दूरदर्शन में कवि सम्मेलन में प्रभावशाली प्रतिभागिता।
साहित्यिक व सांस्कृतिक यात्रा के तहत देश के विभिन्न प्रदेशों के अलावा देश के बाहर– बैंकाक (थाईलैंड), हांगकांग तथा मकाऊ विदेशी शहरों के भ्रमण करने का सुअवसर प्राप्त।
कार्यरत्त– साहित्यिक सामाजिक सेवाकार्य तथा कर्मकाण्ड–ज्योतिषीय एवं अधिवक्ता (वकालात) कार्यांतर्गत कानूनी सलाह व सहयोग।
विधा– गद्यात्मकता पद्यात्मकता। समसामयिक समीक्षा, समालोचना, शोधपरक, धर्म व अध्यात्म तथा वन एवं पर्यावरण, तीर्थाटन व पर्यटन पर आधार आलेख एवं कविता।
सम्मानोपलब्धि– अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्तर के साढ़े तीन दर्जन से भी कई अधिक सुप्रतिष्ठित सम्मानोपाधि एवं अलंकरण प्राप्त।
पत्र–व्यवहार का पता– शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', स्नेहिल साहित्य सदन, निकटः आंचल दुग्ध डैरी, उफल्डा, श्रीनगर, 246174, (जिला–पौड़ी), उत्तराखंड, मो.नं. 9760370593.

RNI UTTBIL/2014/75489

डाक पंजीकरण सं० यू.ए./नैनीताल-275/2018-2020

साहित्यसेवा संस्कृतिसेवा समाजसेवा

उत्तराखण्डी भाषाओं की मासिक पत्रिका

कुमगढ़

वर्ष 7 अंक 3-4 जुलाई-अगस्त 2020

संरक्षक मण्डल : डॉ. मदन चन्द्र भट्ट, शिवराज सिंह रावत 'नि:संग', डॉ. जीवन सिंह मेहता, प्रो. एल.एस. बिष्ट 'बटरोही', ताराचन्द्र त्रिपाठी, ललित मोहन पाण्डे, दान सिंह रौतेला, कौस्तुब आनन्द पन्त, डॉ. सत्यानन्द बडौनी, डॉ. के.बी. मेलकानी, देवकी महरा, दमयन्ती उप्रेती, विमला जोशी 'विभा', अशोक पाण्डे 'जज फार्म' नरोत्तम पाण्डे, हरीश चन्द्र सिंह पांगती, श्रीमती हेमा पाठक (प्रवक्ता)

परामर्शदाता मण्डल : डॉ0 देव सिंह पोखरिया, डॉ0 दिवा भट्ट, डॉ. शेर सिंह बिष्ट (विभागध्यक्ष), मथुरादत्त मठपाल, डॉ0 अचलानन्द जखमोला, प्रो0 उमा भट्ट, गिरीश चन्द्र जोशी, डॉ0 शेखर पाठक, डॉ0 कपिलेश भोज, विमल नेगी, डॉ. देवीदत्त दानी, गोविन्दबल्लभ बहुगुणा, जगमोहन सिंह जयाड़ा 'जिज्ञासू'

सलाहकार सम्पादक : गोपाल दत्त भट्ट, बीना बेंजवाल, श्याम सिंह कुटौला, विपिन जोशी 'कोमल', महावीर रवांल्टा, देवकीनंदन कांडपाल

सम्पादक : दामोदर जोशी 'देवांशु'

सह सम्पादक : रतन सिंह किरमोलिया, डॉ. उमेश चमोला, नवीन डिमरी 'बादल', डॉ. जे.सी. पन्त

सम्पादक मण्डल : नरेन्द्र कठैत, डॉ0 मनोज उप्रेती, डॉ0 प्रभा पन्त, डॉ0 विपिन शाह, दीपक कार्की, पूरन चन्द्र काण्डपाल, नीता कुकरेती, डॉ0 दीपा काण्डपाल, जगदीश जोशी, तारा पाठक, जगमोहन रौतेला, डॉ0 दीपा गोबाड़ी, अनिल भोज, प्रो. चन्द्रकला रावत।

सहयोगी मण्डल : जुगल किशोर पेटशाली, डॉ0 महेन्द्र महरा 'मधु', गिरीश सुन्दरियाल, जोत सिंह नेगी 'उत्तराखण्डी', डॉ0 आशा रावत, दिनेश भट्ट, डॉ. गिरीश चन्द्र पंत, गौरी शंकर निर्भीक।

समन्वय सम्पादक : डॉ0 जगत सिंह बिष्ट, डॉ0 मधुबाला नयाल, नरेन्द्र सिंह नेगी, डॉ0 बिहारीलाल जलंधरी, नन्दकिशौर ढौंडियाल, डॉ. उमा मैठाणी, मोहन राम टम्टा 'मोहन कुमाउनी', भीष्म कुकरेती, उदय किरौला, घनानन्द पाण्डे 'मेघ', डॉ0 नंद किशोर हटवाल, डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी।

प्रबन्ध सम्पादक : कृपाल सिह शीला, विनायक जीवन चन्द्र जोशी, रामकृष्ण कोठारी, राजेन्द्र सिंह ढैला, भोपाल सिंह बिष्ट 'कलयुगी', डॉ. डी.के. पांडे।

विधि परामर्शदाता : चन्द्रशेखर करगेती (एडवोकेट), दुष्यन्त मैनाली एडवोकेट

प्रसार व्यवस्थापक : मोहन जोशी (गरुड़), डॉ. प्रदीप उपाध्याय, नारायण सिंह बिष्ट 'नरैण दा', प्रकाश जोशी 'शूल'।

कला सम्पादक (आवरण सज्जा) : विजय काण्डपाल

प्रेरणा – बी. मोहन नेगी (पौड़ी)

आवरण परिकल्पना – नितीश जोशी

पत्रिका साहित्य संस्कृति समाज सेवा हेतु समर्पित
(सभी अवैतनिक)

सदस्यता राशि

सदस्यता (संरक्षक)	-रु. 5000/-
आजीवन सदस्यता	-रु. 1000/-
विशेष सहयोग	-रु. 500/-
वार्षिक सहयोग	-रु. 200/-
एक प्रति	-रु. 25/-

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 2
- वन्दना – एम.एन. लोहनी, त्रिभुवन गिरि 3
- उटपटाड सोच और नचार पुरहेत– जगदीश जोशी
- लड़ै कठिण लडणू मनखि – बीना बेंजवाल 6
- बौळ्या बरखा –जगमोहन सिंह जयाड़ा "जिज्ञासू" 7
- ठुल हुँण पर– बचीराम श्रीकृष्ण पन्त 7
- काम अग्नि – बचीराम श्रीकृष्ण पन्त 7
- स्वतंत्रता दिवस – अश्विनी गौड़ 8
- देवभूमि – ताराचन्द्र त्रिपाठी 9
- गौंकि नरै –प्रो. शेर सिंह बिष्ट 10
- अपणु घौर – शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल' 11
- हरेला अशीस – कुलदीप उप्रेती, चम्पावत 11
- सुन्दरकांड में बर्णित काथ– डॉ. मनोहर चन्द्र जोशी 12
- कोरानाम चमत्कर – दामोदर जोशी 'देवांशु' 15
- पलायन क् दंश, सावनी मन 'औरै हैरे' – 16
- देवकी नंदन भट्ट 'मयंक'
- वाह रे दारू – जोत सिंह नेगी 16
- कोरोना (कोविड–19) महामारि– डॉ. जगदीश चन्द्र पन्त 17
- अंत भल सब भल – रतन सिंह किरमोलिया 18
- शहीदो कोटि–कोटि प्रणाम– डॉ. गजेन्द्र बटोही 18
- खुशी – उमेश चन्द्र जोशी 19
- गीत – नन्दाबल्लभ पांडे 21
- दोहा–चौपाई – शेर सिंह मेहता 'कुमाउनी' 21
- अच्छु ह्वै – डॉ. महावीर प्रसाद गैरोला 22
- बड़ो आनन्द ऊंछी– बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' 22
- पढ़ाओ रे इस्कूला – कृपाल सिंह शीला 22
- कुमाउनी इंटरव्यू–राजेंद्र ढैला 23
- रत्ते क भुली ब्याल घर पूजनयी – ज्योतिर्मई पंत 25
- बखता तेरि बलाई हैगे– प्रेमा गड़कोटी 26
- गीत – एम.एन. गौड़ 'चन्द्रा' 26
- पच्छांण – डॉ. सत्यानन्द बड़ोनी 27
- अरड़ कानि – शेखर जोशी 29
- सिमरन की संवेदना – अश्विनी गौड़ 30
- हमार गौं में – नवीन जोशी 'नवेन्दु'
- रिट दाणी – महेन्द्र मटियानी 32
- कमाऊ स्यैंणी – मो0 अली अजनबी 32
- धार में'क दिन – नवीन जोशी 'नवेंदु' 33
- न्योली गीत – एम.डी. अंडोला 34
- न्हें गईं – प्रभात उप्रेती 35
- तपो उजाळु – डा. उमेश चमोला 38
- मिशाल – जोत सिंह नेगी 'उत्तरांचली' 38
- पहाड़ि बोलींक व्याकरण 5. प्रत्यय प्रकरण– डॉ. भवानीदत्त काण्डपाल 39
- समाचार 40

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) कि सबैं सुधी पाठकौ कैं भौत–भौत बधाई।

प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक-दामोदर जोशी 'देवांशु' द्वारा हिमानी वाङ्मय सृजन पीठ की ओर से खेड़ा (हल्द्वानी) नैनीताल से प्रकाशित एवं ईथोस सर्विसेज, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित। फोन : 05946-284292

सम्पादक – दामोदर जोशी 'देवांशु'
पत्र व्यवहार का पता - हिमानी वाङ्मय सृजन पीठ, पश्चिमी खेड़ा, पो0 काठगोदाम (नैनीताल) - 263126
मोबाइल नं. - 9719247882, ईमेल- kumgarh@gmail.com

संपादकीय -

उत्तराखंडैकि चंद राजाओंकि राजभाषा रई कुमाउनी और पवार राजाओंकि राजभाषा रई गढ़वालि कें हालांकि संविधानैकि अठूं अनुसूचि में शामिल करणैकि मांग संसद में करि हाली। यो द्वियै (गढ़वाली और कुमाउनी) हिंदीकि सहोदरी भै–बैंणी जा हिंदीक अस्तित्व में ऊंण है पैली बै न केवल प्रचलित छी बल्कि राजभाषा तक रई छन। भाषाविद् डा. तारा चंद्र त्रिपाठी ज्यू और इतिहासकार मदन चंद्र भट्ट ज्यूकि पुस्तक 'कुमाऊं की जागर कथायें' क अनुसार कुमाउनीक शाके 911 यानी सन् 989 और गढवालीक शाके 1377 यानी सन् 1455 तकाक दान पत्र मिलनी। अधिल कै 12वीं–13वीं शताब्दी बटी 18वीं शताब्दी तक चंद राजवंश और उनार पछिलैकि नानि–नानि ठकुराइयोंक दानपत्र व ताम्रपत्र कुमाउनी भाषा में'ई लेखी मिलनीं। वांई प्रो. शेर सिंह बिष्ट ज्यूकि पुस्तक 'कुमाउनी भाषा का उद्भव और विकास' में डा. महेश्वर प्रसाद जोशीक हवालैल बताई जैरौ कि सन् 1728 में रामभद्र त्रिपाठी ज्यूल संस्कृत में लेखी 'चाणक्य नीति' क कुमाउनी भाषा में गद्यानुवाद करौ, यानी तब बटी कुमाउनी में साहित्य लेखणैकि शुरुआत है गेछी। दगड़ै यो लै बताई जैरौ कि चंद राजाओ द्वारा कुमाउनी कें राजभाषाक रूप में अपणाई गो।

यैक अलावा 13वीं शताब्दी में सहारनपुर बटी हिमांचल तक फैली गढ़वाल राज्यक राजकाज गढ़वाली भाषा में ही हुंछी। देवप्रयाग मंदिर में मिली महाराजा जगतपालाक सन तेर सौ पैंतीसक दानपात्र पारि लेखी, देवलगढ़ में अजयपालाक 15वीं शताब्दीक लेख व बदरीनाथ एवं मालद्यूल आदि अनेक स्थानों में मिली ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण लेखोंक अनुसार गढ़वाली भाषाक देशैकि प्राचीनतम भाषाओं में बटी एक हुंणाक प्रमाण लै मिलनीं। वाईं डा. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' ज्यूक अनुसार तो गढ़वाली भाषा में 10वीं शताब्दीक साहित्य लै मिलूं।

पर यो दुर्भाग्य छू कि आज लै यो भाषा, भाषा नैं बोलि'ई कई जानीं। और कई लै किलै नि जाओ, यो भाषाओंक बुलांणी तो छोड़ो, इनार रचनाकार, स्वनामधन्य झंडाबरदार लै आजि यों भाषाओं में परिनिष्ठित भाषा नैं, बल्कि इनैरि उपभाषाओं में ई 'अल्झी' रईं। उं आपंण इलाकैकि स्थानीय उप भाषाओंक मोह न छोड़ि सकनाय। सांचि बात यो लै छू कि आज जब कुमाउनी–गढ़वाली में भरपूर लेखी जांणौ, गीत गाई जांणई, वीडियो–फिल्म बणंणई। आधुनिक दौर में यो भाषाओंक दर्जनों फेसबुक–ह्वाट्सएप ग्रुप, यूट्यूब चैनल लै चलणईं, और इन भाषाओं में यूट्यूब चैनल चलूणियोंक लाखों सबस्क्राइबर लै है गईं। यानी यो भाषाओं में भौत काम हूंणौ, लोग यों भाषाओंक बल पारि कमाइ लै करंण फै गईं, पर सबूं है ठुल जो काम करणैकि जरूरत छू, उ नि हुणंय। उ काम छू, यो भाषाओंक मानकीकरण करणंक। किलैकि जब यो भाषाओंक मानकीकरण ह्वल, तबै यो भाषाओंक स्तर मिलि सकौल। तबै इनूंकैं संविधानैकि अठूं अनुसूचि में शामिल करणक बाट लै खुलल।

याद धरंण पड़ल कि हिंदी लै तबै भाषाक रूप में स्थापित है सकी, जब वीक साहित्यकारोंल वीक खड़ी बोली, अवधी, ब्रज, देसी, अपभ्रंश, प्राकृत और हिंदुस्तानी हिंदी जास अनेकानेक रूपों कें छोड़ि बेर एक मानक रूप कें स्वीकार करौ। यसै एकजुट प्रयास कुमाउनी और गढ़वाली भाषाओं में लै करी जांणैकि जरवत छू।

यै संबन्ध में सुप्रसिद्ध भाषाविद डॉ0 के0डी0 रूवाली ज्यूक विचार कतुक सटीक और प्रेरणादाई छन कि– कोई लै भाषा कैं कठोर नियमन में बादि बेर धरण संभव न्हैं और न कोई भाषा प्रयोगशाला में तैयार करी जैं। सारि बात प्रयोग पर आधारित छु साहित्यकार लोग जो एक मानक प्रयोग कैं व्यवहार में ल्याल भविष्य में एक दिन वी प्रयोग मानक कई जाल। हाङ फाङ जस उपबोलिनक शब्दनक सहयोग जरूर ल्हिंण पड़ल ताकि लोगभाषाक शब्द भंडार समृद्ध है सकल। कुमगढ़ पत्रिका उत्तराखण्डी भाषाओं क दस्तावेजीकरण सामूहिक प्रयास क दगाड़ उपबोलिनक मोह–त्याग बेर स्तरीय व सर्वस्वीकार्य मानक भाषा में लेखणक आह्वान करैं। व्यक्तिगत संकलनै हौत और भै। भविष्य में कम से कम सामूहिक संकलन मानक भाषाक प्रतिनिधि रूप में पाठकोंक सामणि ल्यूंणक प्रयास करी जाण चैं।

पाठकों से विनम्र निवेदन

कुमगढ़ विषम आर्थिक परिस्थितियों से गुजर रहा है। कई माह से 'कुमगढ़' प्रकाशन का व्यय भार स्वयं ही उठाना पड़ रहा है। आपको यह पूर्व से ही ज्ञात है कि पाठकों व शुभचिन्तकों के अपार स्नेह एवं आर्थिक सहयोग से 'कुमगढ़' छः वर्षीय साहित्य सेवा में सफलता के शिखर को चूम रहा है।

कुमगढ़ की वार्षिक सहयोग राशि 200 रुपये एवं आजीवन सहायोग राशि 1000 रुपये मात्र है। पाठकगण विशेष सहयोग एवं संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके भी साहित्य के इस यज्ञ में अपना योगदान दे सकते हैं। सहयोग राशि 'कुमगढ़' पत्रिका के IDBI सेविंग बैंक खाता सं. 1208102000001151 IFSC : IBKL0001208 MICR 263259003 में जमा की जा सकती है। यह पत्रिका पाठकों की है, जो लोक भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए निःस्वार्थ भाव से काम कर रही है। इसमें पाठकों की रचनाओं का हमेशा स्वागत है। कृपया रचनाऐं MS-WORD की फाइल में Krutidev–10 फॉन्ट में टाइप करके ही हमारे E-MAIL- kumgarh@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

–धन्यवाद !

संपादक

वन्दना

–माधवानन्द लोहनी, हल्द्वानी

हंस वाहिनी, हंस हृदय दे,
समुन्नत कर दे बुद्धि विवेक,
भलाभाल शब्द ल्यखण कि मति दे,
हंस क जस दे सम्यक ज्ञान,
मां शारदे ! कोटि प्रणाम।।
कमलासनी, कमल जस मन दे,
स्वच्छ प्रफुलित तन–मन कर दे।
जगत पंक वै वैराग्य दिलै दे,
भरि दे मुख में मृदु मुस्कान।
ज्ञान दायिनी, कोटि प्रणाम।।
बीणा वादिनी ! वीणा जस स्वर दे,
हृदय तंत्र कें झंकृत कर दे,
मानवता क भाव हमन में भरि दे,
साहित्य सरिता बगै दे तमाम,
विद्या देवी ! कोटि प्रणाम।।
काव्य रस बगते जावौ,
काव्य पीयूश जन–जन पीवौ,
हर प्राणी क मन हर्शावौ,
कर काव्य अमृत क पान,
ममतामयी कोटि प्रणाम।।
त्यार खुटां में अर्पित तन–मन
बणै दे मां ! म्यर जीवन कें चन्दन,
हर ल्है हर अज्ञानी क क्रन्दन,
दि दे प्रेम सुधा अनुदान
श्वेताम्बरी मां ! कोटि प्रणाम।।

–त्रिभुवन गिरि, हुक्का क्लब, अल्मोड़ा

ऑखरों की फूलपाती, ऑखरों की धूप बाती।
ऑखरों की सतलड़ी, हम तिहणी लै रयूँ।।
ऑखरों में तेरो नाम, ऑखरों में तेरो धाम।
ऑखर फोकी दे सुण ! थान तेरा ऐ रयूँ।।
आसन सुकिलो तेरो, वाहन सुकिलो तेरो।
सुकिलो ऑचल तेरो, वीका स्योल भै रयूँ।।
हमछॉ पोथिला त्यारा, त्वीलै दिखा भल बाटा।
आजि लै दिखाली कै मॉ, आश हम लै रयूँ।।
बरमा, बिश्नु अर महेश, रिद्धि–सिद्धि अर गणेश।
पुजा पाठ करनी इजी, हम कुमति लै लै रयूँ।।
ऑखरों नौ लखा हार, हमू कैं दि दिये भागी।
अन्यारों को जाव ओ ई, काटली कै चै रयूँ।।
हम छॉ अपस माता, कुमति नसाई दिये।
मांजी दैंण हई जाये, तेरी देई भै रयूँ।।
ऑखरों की भेट औ पखोव हम दिनू तुकैं।
अज्ञानी छॉ ज्ञान दिये, मनै झोली लै रयूँ।।
बिणाई सुणै दे माई, मनक अज्ञान भाजो।
अज्ञाना का भवा पार, पुजाली कै ऐ रयूँ।।
के ल्यै सकैं यो कंगाली, के बॉचलैं यो बैचाली।
छिमा करि दिये अम्बे, खाली हाथ लै रयूँ।।

उटपटाङ सोच और नचार पुरहेत

—जगदीश जोशी, हल्द्वानी

कभैं–कभैं मैं बड़ उटपटाङ सोचण लागुं। जैक जड़–टुक, फाङ–पात, सीङ–पुछड़– के लै नि हुन। उ दिन लै मैं यस्सै करण लाग्यूं। एक बर्‌यात में बरेति जाण है पैलि मैं सोचण लाग्यूं– जो बर्‌यात में मैं जाणयूं वांक चेलि व्‌वना् क पुरहेत और आपण पुरहेत कैं एक्कै त् न्हैंतन। जब कि उभत तक मैं कैं यो लै पत्त नि छि कि बर्‌यात कां जाणै। गौं में जाणै या शहर में जाणै।

उ दिन एक बाजि तक त् इस्कूलै में रिङी रयुं। घर पुजण तक डेढ़ बाजि गो न्होल। आपण ह्‌थूंल खाणु बणै, खै–पि कमर सिदि करुंल, झिटघड़ि लधरुंल कूनै रै छ्‌यूं– पत्त नै श्रीमती ज्यू नौ म्‌मौ च्यल नवीन कां बै ऐ धमकौ। ऊन–ऊनै कूंण लागौ, ''हिटौ बर्‌यात में। हम दन्यां बजार में गाड़ि ठाड़ि करि ऐ रयां। सबै जाणी तुमन कैं जागि रई।''

''कांकि बर्‌यात?कैक ब्या'', मैंल पुछौ।

''कैलाश दा भैक ब्या छ्, के तुमन कैं काड नि मिलौ?''

''ना'' मैं ल कौ।

कैलाश, श्रीमती ज्यूनौ कैंजौ च्यल भै। वी ब्या में जाई भयूं। ठुल सावा ब्या में जाई भयूं। न्‌ान सावा ब्या में नि जान्यूं आफत है जानि। खुदा की खुदाई एक तरफ, जोरों का भाई एक तरफ। जाण हुँ मन और आङ में उज कत्तई नि छि। तबियत लै ठीक नि भै। सर्दि–जुकामा मारि औरि हई भै। मैं ल बहान करौ, ''इस्कूल में इन्त्याान चलि रई। छुट्‌टि लै मिलैं छ् नि मिलनि। किलै कि लगन–पात हुणा वील और लोग लै छुट्‌टि जै रई। इन्त्यानों में कम्र में ठाड़ हुणा लिजी लै की मास्टर चैनी।'' हमार पिन्सपुल सैप भैर बै ठाड़ है कनसुणा लागी भै। कूंण लागि, ''भोव, छन्जरै छुट्‌टि ल्हि ल्हियो। यांकि चिंता नि करौ। हम सब लागि–पड़ि यांकि फेड़ि ल्हयूंल''। आ्‌ब बहान करण क के फैद छि नै। कोतवाल जब सईयां मोरे, तब काहे का डर है लाला? हम्‌ार पिन्सपुल सैप सा्‌वा्क काख लै कोतवाल बणि बेर ठाड़ है गा्‌य।

खिसान, लुकुड़ बदेइ उन्‌ार दगै बजार में पुज्यूं। देखण जानै कैलाश बुलै गोय, ''फटाफट जीप में बैठौ, देर हुणै।''

''पैलि यो त् बता, बर्‌यात जाण कां रै?'' मैं ल पुछौ।

इत्ति नैनताल जिल्ला, ढुकाने इन्टर कालेजा नजीक सिमराड़ गौं में।'' वील बता और म्‌यार लिजि आघिल बै एक सीट खालि करै मैं कैं बैठै दे। बर्‌यात में आ्‌ब जाणै छि। बांकि मैं ल के नि पुछ। अल्माड़ करबला पार करण जाणै साड़ि छै है गो छी। रुड़ि दिन छि। दिन आइ ओछै नि रौ छि। आँखन में त्यूर ला्‌गनौ छि। डराइबर कैं लै बार–बार आपण हाथ कपाव में धरि जीप चलूंण पड़नै छि। क्वारब पू बै सबै गाड़ि, मौना–ल्वेसाल उज्याणि मुड़ि गे। ल्वेसाल पुजण तक भलिकै अन्यार है गे। नथुवाखाना आस–पास तक सड़क पक्की छी। भैरा अन्‌यारपट में जीप पत्त नै कां बै दैण ह्‌थ उज्याणि, तलि हुँ कच्ची सड़क में मुड़ि गे। ख्वारा बाव और लुकुड़ सब माटै ल सानीण फै गे। आंख–कान, नाख–मुख– सब माटैल भरी गे। भयंकर खांसि शुरु है गे। जो म्हैंणेक तक हुनी रै। हजारेक रुपैंकि धौव लागि, तब छुटि। ऐन्टिवायोटिका जाणि कतुक सुइ लगूंण पड़ि।

राता दस बाजि गे। बर्‌यात ल आइ कतुक जाण छ्, के पत्त नि भै। ''जाणि आइ कतुक टाड़ जा्‌ण छ्? कमर सिद करण हुँ लै ठौर मिलैं या नि मिलनि?'' एक बरेतियैल पुछौ। म्‌यार उटपटाङ सोचन कैं फिर खुराक मिलि पड़ी। ''फिकर नि करौ। तुमा्र दगाड़ एक मास्टर छ्। मास्टर कैं क्वे फाङुड़ पकड़ि नरक में लै चोटयै देलौ– वां लै वीक पढ़ाई, वीक पछ्‌याणौ– क्वे नै क्वे जरूड़ मिलि जा्‌ल।'' मैं ल बता तब तक और गाड़िन दगै हमरि जीप लै रुकि गे। इत्ति एक चहा–पाणिकि दुकान छी। ब्योलि व्‌वना तरफ बै बरेतिनौ चाहा–पाणि क इन्तजाम यैं करी भै।

खड़्‌यार पड़ि सड़क में जीपा धांकूं ल हाँट–भाँट दुखन है गो छी। माटा थुपुड़ झाड़ि, मुख–हाथ ध्वे, चहा–पाणि पि– जरा तराण जौ आ। घड़िल राता इग्यार बजै हैल छि। करीब एक कीलोमीटर सव क जंगल छि। तब ऐं छि ब्या–कुड़ि। ग्यस–उज्या्व में सबै बरेति एक–एक कबेर बा्‌ट लागी। बा्‌ट यतुक असाङुड़ छि कि द्वि जाणी दगड़ै नि हिटि सक छि। उ में लै तिख हुला्‌र। मैं और म्‌यार दगड़ि (तीन और बरेति) सबन है आघिल छियां। ब्या–कुड़ि लै भलिकै देखीण फैगे छि। हमूंल उज्या्व देखूंणी थैं कौ, ''हमन कैं घरै तक छोड़ि दियो। हम वां पुजि, बर्‌यात पुजण जानै भै

रूंल। तुम लौटण चाला, लौटि अया। और बरेतीना लिजि बा्ट देखूंण हुँ एक ग्यस सकर है जा्ल। वील उसै करौ। हम पुजि बेर पड़ौसा कै एक खा्व में भिणि में भै गयां।

झिटघड़ि में पुरि बर्यात पुजि गे। बर और ब्योलि भै कि छात नै अदेइ–बदेइ हुनै। बरेती नाचणै। दगाड़ में क्वे–क्वे घरेति लै। इतु कै में मेरि नजर धुलैर्ग हुणि चौकि उज्याणि पड़ी। वां बैठी भै निशिणी त्याड़ि ज्यू। उनूंल लै मैं कैं देखि हैल छि। आपण जागि बै उठि, म्या्र पास ऊन–ऊनै पुछण ला्ग, '' तुम यां कसी?

'' मैं ल लै उनारै कई आंखरन में पुछौ, '' तुम यां कसी?''

'' यो हमा्र पुस्तैनी जजमान भै, जसिक तुम। '' उनूल बता। म्यर नामकन उना्र बाज्यू ल कराई भै, ब्या–दाज्यू ल। दाज्यू उना्र आ्ब हल्द्वाणि में जजमानी करनी। पराइमरी में मास्टरी लै कर छि। आ्ब रिटैर है गी। उना्र चारि उना्र कत्तुक जजमान लै आ्ब हल्द्वाणि बस गयी। उनूंल हल्द्वाणि कि जजमानी समाई राखी और उनार भै ल पहाड़ै।

बरेतीन कैं खा्ण खाणै धात लागी। सबै बरेती एक गोल घ्यर में, एक खा्व में दरि बिछै बैठाई गे। सबना आघिल बै एक–एक माऊ पातनौ पत्तल और एक–एक गिलास धरी गे। क्वे घरेतिय ल गिलास में पाणि भरि दे और कै लै साग बांटि दे। इसी कै उ रस्यो में जे लै बणी भै उ बरेतिन कैं पसकी गे। खै–पि बेर सबै बरेति डकार ल्हिण लागी। हम चार जाणि लै खवा भिंणि में भै गयां। एतुकै में एक अठार–उनीस सालौ लौंड म्या्र पास आ।

'' नमस्कार सर ''

'' मैं लै दन्यां में पढ़ुं ''

'' मैं नि सोचन्यूं मैं तुमन कैं पढ़ूं और नै फामै उणै मैंल कभैं, कैं तुमन कैं पढ़ा न्होल। ''

'' नै–नै मैं दन्यां बै आइ.टी.आइ. करनयूं। तुम इण्टर कालेज में पढ़ूं छा। ''

'' घरेति छा या बरेति?''

'' मैं ब्योलि काकौ च्यल भयूं। '' जरा देर रुकि हाथ जोड़ि कूंण लागौ, '' म्या्र लैक के सेवा होलि बतया। ''

'' चार जाणिन क लधरणक इन्तजाम है सकनौ भल हुन। हाँट–भाँट दुखन हैरी। '' मैं ल उ कैं बता।

'' मैं अल्लै ऊं। तब तक तुम इत्ति कैं भै रया। कैं इथकै–उथकै झन जया।'' कून–कूनै उ ल्हैगो। ''थ्वा़ड़ देर में उ लौटि बेर कूंण लागौ, '' हिटौ, मैं ल चार जाणि नक सितणौ इन्तजाम आपण घरा चाख में करि है लौ। '' काण कैं के चैनी द्वि आँख साण। चाख में जो लधरां त् राति उज्या्व हुण परि आँख खुलि। पत्त चलौ? मैं कस उटपटाङ सोचुं?

(2)

टाड़ै बर्यात छि। यै वील बरेतीन कैं नास्ता–पाणी जागि तिर दाल–भात खिलाई गे। खै–पि सबै बरेति भिणिन में बैठी भै। टिक–पिठ्यां इंतजाम हुनै। बैण्ड–बा्ज वा्ल लै ऐ गो छि। मशक बीन बाजण लागी। एक उन्नीस–बीस साल क दुबव–पतव लौंड ना्चण में आपण आङ कैं सरकसा नट ना चारि मरोड़नै। जाणि कौ लौ पेट पीड़ ल फुराड़ि रौ न्होल। खुटन वीक पुरा्ण हवाई चप्पल और झपरु जा ख्वरा बाव भै। जाणि कतुक म्हैण बै नि कटाई भै। मैं ल एक घरेति थैं पुछौ, '' त लौड को छ्?'' वील बता निशिणी कै छ्। मैं ल सोचौ– मैं यां यो सब अजमत का्व देखण–सुणनै हुँ ऐ रयूं! जब बैंड–बा्ज बजूनेर जरा थिर–था्म भई मैं ल उ लौंड थैं पुछौ, '' तुम निशिणि कै क भौ भया?'' '' गिरधर त्याड़ि ज्यू क'', वील बता।

आ्ब त् मेरि रणी नैकि बारि छि। गिरधर त्याड़ि ज्यून कैं त् में भली कै पछ्याण छ्यूं। उ एकलै कर्मकांडी पंडितै नि छि। भा्ल ज्योतिश और विद्वान लै छि। म्या्र बाबू दगै उनरि भलि दोस्ती लै छी। पुर गौं क पुरोहित हुणा वील गौं में उनर कैं लै क्वे काम किलै नि हौ हमा्र वां जरूड़ उनेर भै, एक फ्या्र । सबूं है ठुल च्यल क नाम सैद रमेश छि। उ एक सिद–सा्द मिहनती लौंड छि। वील अल्मोड़ा इण्टर कालेज, अल्मोड़ा बै इण्टर करौ वी बाद अल्माड़ आई.टी.आइ. बै इस्टैनोग्रैफी। कुछ दिन बाद वीकि नौकरी जङलाता क्वे ठुल औफिस में नैनताल लागि गे पड़ि। आस–पासा गौन ना लोग कूंण लागि, '' गिरधर त्याड़ि ज्यूकि मेहनत सफल है गे। उना्र दुखा दिन सकी गयी।'' सैद भगवान कैं के औरै मन्जूर छि। टिटरि लेखि कैं को टाइ सकूं?एक दिन नैनताल बै खबर ऐ– रमेश कैं रात करै बांजा जगी क्वैल नकि गैस लागि पड़ि और उ जानै रौ। ज्यट्ठै च्यलै मौतै खबर सुणि गिरधर त्याड़ि ज्यू यास लमतम भई– फिर कभैं नि उठ सक। सैद उ तकान मृतक आश्रित कैं नौकरि नि दिई जांछि। रमेश है कांश महन त्याड़ि ज्यू लै बृति करि आ्पण खर्च–पाणि चलूं छि। कुछ साल पैलि उ लै यो दुनि बै जानै रई।

गिरधर त्याड़ि ज्यू अल्माड़ै रामलिल दगै बर्शों तक जुड़ि रई। पर मैंल उनर खेलि रामलिल क पाठ एक्कै फ्या्र देखौ। नन्देबी थानै रामलिल में। उ दिन उनूं ल ताड़िका क

पाठ खेल छी। मैं कैं उनर खेलि ताड़िका पाठ भौतै भल लागौ। पीताम्बर पांडे ज्यूल जना्र लेखि ' भ्रमर गीत ' और ' गंगानाथ गीतावली ' मैं ल पढ़ छि, ढौर में ' महाभारत ' नाटक क मंचन करा। उसिक पांडे ज्यू नाटक मंडलि बुलै बेर नाटक करूंनै रूं छि। उ एक भौत भा्ल हास्य कलाकार लै छि। मेरि इज कई कर छि, '' पीताम्बर पांडे ज्यू हँसून–हँसूनै हाँट–भाँट टोड़ि दिनि। '' '' महाभारत '' में उनूंल कै क पाठ खेलौ मैं कैं फाम न्हैं पर गिरधर त्याड़ि ज्यू ल उ में द्रोपदी क पाठ खेल छी।

फिर बर्यात क बा्ज बा्जण लागौ। बरेति–घरेतिन दगै उ लै नाचणौ छि। आ्ब म्या्र कैल उत्ति जाधे नि बैठीण। मन उचाट जौ है पड़ौ। आङै सार्रि उज गई जै गे छि। यस लागण लागौ जाणि कतुक दिन बै लङण करि राखि। फिर लै मरन–तरन उठ्यूं। गाड़ि क सड़क तक ल्हि जाणि सव क जंगल क उका्व उकवण ला्ग्यूं। बर–ब्योलि बट्यै हैल छी। ब्योलि कैं डोलि में बैठ्यूणै। ब्या क बा्ज बा्जनै और उ आइलै आङ मरोड़ि, कमर टोड़ि, उसिकै ना्चनै। उ उसिकै ना्चनै रौल, ना्चनै रौल। कदिनै यो जजमाना यां और कदिनै उ जजमाना वां। और सीजन में नैनताल फ्लैट्सा दाङड़ में। द्विडबल कमूणा लिजि, पेटै आग निमूणा लिजि, ट्यूरिस्ट नक गिरदा्म में। जाणि कब तक।

●●●

लड़ै कठिण लड़णू मनखि

–बीना बेंजवाल, देहरादून

लड़ै कठिण लड़णू मनखि
बलि वैश्विकतै चढ़णू मनखि
अपणि सक्याऽ धीरज का बल
दिन कोरोना गणणू मनखि

खांसि–छींक छै छ्वीं साधारण
कसूर ह्वेगि कोरोना कारण
देखी अपणौं तैं हि आज
जाणीऽ अजाण बणणू मनखि
लड़ै कठिण.....

गिच्चा मास्क जब हवा साफ
घड़ि–घड़ि धोण पड़णा हात
फिकर अपणि मा कै अपणै
गति–मुक्ति कन्नौ डरणू मनखि
लड़ै कठिण.....

कबि भूकु तीसु रै तैं
कबि रेलै पटर्यूं स्ये तैं
कबि सड़क्यूं चलि मीलों पैदल
सांस आखिरी गणणू मनखि
लड़ै कठिण .....

समझद छौ जौं तनीऽ समाज
कोरोना यो(ा बण्यां सी आज
सोच पुराणी करी सैनिटाइज
विचार नया गढ़णू मनखि
लड़ै कठिण.....

दुन्यै छोड़ी भागमभाग
स्वार्थ लालचौ करी त्याग
बैठी अपणा दगड़ा यूं दिनों
अफु तैं अफ्वी पढ़णू मनखि
लड़ै कठिण.....

अद्येखा बैरी द्येखी तागत
दुगणा कन्नू अपणि हिकमत
मुल्क मनख्याता औलि सुबेर
खाड अंध्यारा तैं खणणू मनखि
लड़ै कठिण.....

तालाबंदी देस दुन्या जब
ऑनलाइन काम–धाम सब
नया हिसाब से ह्वे अपडेट
बाटा नया बढ़णू मनखि
लड़ै कठिण.....

दिखेणू दूरै बिटि हिमाल
छाल़ा ह्वे बगणा गंगाल़
धर्ति का सब्रो द्येखी फल
अंद्वार भोल़ै गढ़णू मनखि
लड़ै कठिण.....।

बौळ्या बरखा

–जगमोहन सिंह जयाड़ा "जिज्ञासू", दिल्ली
मो. : 9654972366

बसगाळ बौड़ि ऐगि अब,
हरी भरी ह्वेग्यन गौं की सार,
पापी कुयेड़ि दौड़दु जान्दि,
डांड्यौं मा वार पार।
चौक मा लगिं चचेन्डी त्वमड़ि,
ग्वदड़ि, काखड़ी, मुंगरी,
बौळ्या बरखान भिगण लगिं,
रौंत्याळि डांडी हरी भरी ।
चौमासा कु द्यौरु गिगड़ान्दु,
बरखा बत्वाणि घनाघोर,
काळु बसगाळ डरौण लग्युं,
बरखा डांडौं ओर पोर ।
सार्यौं का बीच बाटौं फुंड,
घसेर्यौं की लंबी लंगट्यार,
बरखा मा भिगेणि छन,
बरखा लगिं लगातार ।
ब्वडा भितर बैठि बैठि,
हबरि द्यखणु भैर,
बौळ्या बरखा दिन भर की,
ओबरा बासणु मैर ।
भैर बरखा भितर सरका,
दूर गाड गदन्यौं कु सुंस्याट,
ब्वडा भितर सेयुं फंसोरि,
सुपिनु द्येखि कन्नु बबड़ाट ।
बौळ्या बरखा आफत ल्हौन्दि,
पणगोळा भि फूटि जान्दा,
कैकि मवासि घाम लग्दि,
बाटा घाटा भि टूटि जान्दा ।
बौळ्या बरखा की जग्वाळ रन्दि,
सरग दिदा पाणी बास्दि चोळी,
बौळ्या बरखा जब बौड़िक औन्दि,
ख्यल्दि छप्प पाणी की होळी ।
मनख्यौं की जिंदगी मा बसगाळ,
सुख की गंगा बौड़ैक ल्हौन्दु,
बौळ्या बरखा तैं बथौं बिचारु,
अपणा मन सी नचौन्दु।

थाती

ठुल हुँण पर

–बचीराम श्रीकृष्ण पन्त

ठुल हुँण पर खुशि कॉ भै, मौत नजिक ऊँनी रै।।
दश महैंण प्यट पन काटी गै,
भ्यैर ऊँण पर और कटी गै।
सुख–दुख में औ खेलकूद में,
भोग नीन में उमर नसी गै।।
कभै डाढ़ भै कभै हॅसी भै, इकनसि कैकी नी रै।।
ऑङ निबल भै थरथराट भै,
बड़ो कठिन अब हिटणो है गै।
दृष्टि मन्द कफ खॉसी है गै,
अन्न नि पचनो, भूख हरै गै।।
बल तौ सबै घटी गै, तृष्णा एक बची गै।।
घर वालन कैं घींण हई गै,
मरणा पर अब सुख समझी गै,
कृष्ण अन्त में प्राण पखेरु,
ऑङ पिंजर कैं जब छोड़ी गै।।
सबै दगड़िया छुटि गै, साथै एक करम रै।।
ठुल हुँण पर खुशि कॉ भै, मौत नजिक ऊँनी रै।।

थाती

काम अग्नि

–बचीराम श्रीकृष्ण पन्त

काम अगिनि तौ कम है गै, पर मन अगनी कम नी भै।।
बुढ़ी गयॉ सब बाव स्यता भै, कमर धनुष आकार भई।
हिटि नी सकना थरथराट भै, ऑखन की सब ज्योति गई।।
पाचन शकती कम है गैछौ, दॉत टुटी मुख की शिरि भै।
कान बन्द भै कुछ नी सुणना, इन्द्रिय शकती सब गिरि गै।।
अब तौ भारी विपति पड़ी गै, घींण सबन कै है गै।
कृष्ण करम फल सामणी आछ, मन की मन में सब रै गै।।

स्वतंत्रता दिवस

–अश्विनी गौड़ दणकोट, रूद्रप्रयाग

उन्नीस सौ सैंतालिस का प्रभात का पर्व बटि आज द्वी हजार बीस अर अगने भी उमरभर सदानि यु देस यनि स्वतंत्र खुला बथौ मा, स्वतंत्र रौजणू पौजणू रोलू।

यी देश की माटी मा, गौं मुल्क, स्कूल, दफ्तर हर जगा कोणा–कोणों पंद्र अगस्त, स्वतंत्रत ह्वोण कु त्योहार खूब धूमधाम से मनाये जांदू।

अंग्रेजुन बड़ी पिड़ा दीनी यी माटी तै, ग्यान विज्ञान वेद पुरांण की धर्ती भारत बटि तौंन सदानि नयु नयु सीखी
अर अपडि ही भाषा संस्कृति का बीज बूति दीन्या यख।
अंग्रेजों कि सांगळ मा देस जकड्यूं रै, यख आम मनखि तै अपडि मनै मर्जी कनै छूट नि छे।

यन माहोल मा मातृभूमि की माटी कु तिलक लगे, देश का भौत सारा जाबांज, वीर–देशभक्त,मुंड मा, केसरिया साफा बांधी जिकुडि हाथ मा धरी, क्रांति की मशाल जगै अगने ऐन।
घौर–परिवार रिश्ता नाता का स्वार्थ छोड़ी मातृभूमि की स्वतंत्रता की बन्याथ मा जतर्वे बणिन।
धरम–जाति, वर्ण का गांठा पुचाळि सि एक परिवार बणींतै आजादी की धै–धाद मार्दि रैन।

स्वारथ का कांडा–मूंडा काटी खुली बथौ का स्वींणा द्येख्दरा यि, वीर–क्रांतिकारी देवदूत से कम नि छा!

एक तरफ जोश दगडि, होश कु रळो–मिस्सो कर्दरा, सेळा–नरम दल का लोग छा, जौंमा मातमा गांधी जी, जवार लाल नैरू जी, सरदार बल्लभ भै पटेल जन दाना–स्यांणा मनखि छा, तखि हैकि तरफां ताता खून दगडि, हौंसिया,क्रांतिकारी वीर, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव जन ज्वान वीर छा।

मीरा बेन, सिस्टर निवेदिता जन विदेशी महिला भी हमारा ये आंदोलन मा स्वामी विवेकानंद जी का आदर्श अर महात्मा गाँधी जन ब्यक्तित्वों से हुर्स्येन अर सक्रिय रैन।
येका अलौ सरोजनी नायडु जन महिला भी पिछने नी रेन, महिलाओं का योगदान तै भी कतै कम नि आंकि सकदा हम, स्वतंत्रता आंदोलन मा।

यि सब लोग जौंका प्रताप हम खुलि बथौं मा, फफरांणा छिन, यि आंदोलन का क्रांति गीत, अर देशभक्ति का नारा स्येंदि खांदि लगोंदि गैन। भूख–तीस, हरचे तै, देश की स्वतंत्रता खातिर तौंकी क्रांति की बिज्वाड़ डाळी रे, तबेत चंद्रशेखर, भगत सिंग जन जाबांज हैंसदि– हैंसदि फांसी का फंदा पर झूली गैन, त हैकि तरफ नै–नै क्रांतिकारी, ये स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन मा, ओंदि रैन, जुडदि गैन।
भारत की माटी का ये ही हौंसला तै देखी तै, अंग्रेजी रियासत की श्चौंश हलकण बैठी छे, उम्मीद का श्भीड़ाश खपच्यांण बेठ्या छा!

यन श्स्यू–सगतश जमी–जमांई ब्रिटिश रियासत का पसर्दा जौड़ा काटण मा, ईं माटी का भौत सारा वीर– क्रांतिकारी शहीद ह्वेन।
जौंकु अमिट योगदान, वीरगाथा, का पंवाणा भारत का हर मुल्क का कोणा कुमच्यारों मा लगाये जांदा।
स्कूल दुकान ऑफिस दफ्तर गौं–मुल्क हर जगा शहीदों क्रांतिकारियों की जै–जैकार होंदि।
भारत माँ की अखंडता का नारा लगाये जांदन।

स्कूलि बच्चों की देशभक्ति की झाँकी देखी सबुकू जोश –जज्बात अर तन– मन मातृभूमि मा रमि जांदू।
देशभक्ति का गीत, राष्ट्र वंदना, राष्ट्रगान दगडि हर प्रतिष्ठान मा तिरंगा फैरै जांदू, अर हम सब गर्व से
'जै हिन्द, जै हिन्द' 'भारत माता की जै' अर अमर वीर क्रांतिकार्यूं जै–जैकार कर्दन।

दिल्ली लालकिला प्राचीर पर खड्डु ह्वेक, भारत का प्रधानमंत्री बड़ा जोश–गर्व से पूरा देश तलक स्वतंत्रता दिवस कु रैबार–संबोधन द्येंदा, तख हर राज्य अपडि बन–बनि संस्कृति की झाँकी निकाळदन।

अर पूरु देस एक धागा, एकसूत्र मा गठ्ये जांदू
ऐंच पाड़ बटि निस गंगाड, कश्मीर बटि कन्याकुमारी, गिर–गुजरात बटि असम–मेघालय तक संगति केसरिया सफेद हर्यू तिरंगा भारत माता की अखंडता की गवै द्येंदू।

यन देस जैंकि स्वतंत्रता मा वीर अमर सपूतों कु ळवे रळयूं च, ते स्वतंत्रता दिवस तै हम कनुके बिसरे सकदा!

देस की सीमा पर हिमाळै जन सगत सैनिकों कु पैरा हमुतै सुनिंद स्योण द्योंदु यन अमर वीर देश का जवानों अर वीर अमर क्रांतिकार्यूं तै एक रचना दगडि–––

– जय हिन्द जय भारत

देवभूमि

—ताराचन्द्र त्रिपाठी

हम लोग हिमालय वासी छाँ। याँ हरी.भरी जंगल छन हैं। स्वच्छ परिवेश छ। लू नीं चलैनि। छोइनक और गाड़ गध्यारनक पाणि स्वच्छ छ। गंग और वीक दगडु सब गाड़.गध्यार हमारे डान. कानन बटि निकलनी। याँ गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ, और लै कतुक तीर्थ छन। कैलास.मानसरोवरोक असल बाट लै योइ छ। उसी कूँछा त पार्वती क मैतै नै शिव ज्यू कि तपैकि भूमि लै योई भै।

महाभारताक शान्तिपर्व में तो यै कन परलोक कै राखौ। यस लोक जो सारि दुनि है बिलकुल अलग छ। पवित्र छ शान्त छै। याँ जैक प्राण छुटनी वीकँ परमपद मिलँऽ। यो सर्वगुणवान, पवित्र, मंगल करनेर यस लोक छ जैकि द्याप्त लै कामना करनी।

उसिक देख छा तो देसिनाक हिसाबैल यो दुसरै लोक छ। जब तक जनसंख्या कम छी, लोगनैकि जरूरत आदि लै कमै छी। अकालाक दिनन में लै जंगलन बटि कन्द.मूल.फलनैल भरण. पोषण संभव छी। धुरानाक् बुग्यालन में और डान काननाक दमसैणन में मस्त घा पात मिलि जाँछी। भैर वालनाक लिजी यो बहुतै दुर्गम भै। फिरि कभैं क्वे फौज फर्र ल्हि बेर ऐ लै गयो तो आपुँक बचूणाकि लिजी उड्यार और पाहाड़नाक् खोल लै कम नि भै।

उ जमान में जब ऊण.जाणाक साधन नि छिया, आजीविकाक साधन लै बहुत कम छिया, मैदानी भागन में भयंकर अकाल पड़न छिया, कभैं हैज, कभैं प्लेग, कभैं चेचक जसि महामारी फैलन छी, आये दिन देशाक् भैर बटी या भितर लै अनेक आक्रमण हूनै रौंछिया, लोग जाग.जाग बटि या ऐ बेर बसीं। भाग्यवादी और चुपचाप खोरि चौड़ि करि बेर हिटणि लोगनाक् लिजि संकट लै कम छियो। कोलाहल और कलह लै कमै छियो। आक्रमण हुण पर कै लै पहाड़ाक उड्यार में शरण ल्ही जै सकन्छि। मैदानी भागन में रूनेर लोगन कँ यो सब सुलभ नी भयो। यै का कारण उनन कँ यो अंचल स्वर्ग जसो लागन्छियो। यै का कारण उनन कँ यो देवभूमि लागन्छि।

फिरि लोगनैकि धार्मिक आस्था परै जनैरि आजीविका चलैन्छि उनूल आपण इलाकाक खास.खास धार्मिक आकर्षण वालि जागानोक अनेक पुराणन में महात्म्य वर्णन करण आरंभ करि दे। यो महात्म्य वर्णन आजाक जमानोक विज्ञापनक पुराण रूप भै।

यो 'देवभूमि' लै उनैरि देन छ। आजाक जमान में जनैरि आजीविका पर्यटन पर छ, उँ यै कँ भुनूण में पिछ्याड़ि न्हेंतन। जब हिमाचल प्रदेशाक पर्यटन व्यवसायिनैल यै देव.भूमि विशेषणोक मस्त लाभ उठा त उत्तराखंडाक पर्यटन व्यवसायिन कँ लागौ कि जब बिना विशिष्ट तीर्थनाकै हिमाचल प्रदेश 'देवभूमि' शब्दोक ऐतुक व्यापारिक लाभ उठूणोछ त हम किलै पिछाड़ि रूँ। हमार पास त जम्मै तीर्थ छन। केदारनाथ छ, बदरीनाथ छ, गंगोत्री छ, यमुनोत्री छ और लै कतुपै तीर्थ छन।

आब के छि देवभूमिक सामणि उत्तराखंड नाम लै ठंड पणण लाग। कुछनैल त फिरि लै उत्तराखंड शब्दोक लिहाज करौ, पर औरन लै त उत्तराखंड शब्द कणि गोल कर दे। देखो त कतुक संस्थानाक नाम में उत्तराखंडोक नाम ल्हिणी लै नि रै। जस 'देवभूमि उद्योग.व्यापार मंडल', 'देवभूमि सांस्तिक कला केन्द्र', ' होटल देवभूमि', 'देवभूमि पर्यटन', देवभूमि यो, देवभूमि उ। यै देवभूमि दगै न मालूम कतुकुप संगठन पनपण लागि रयीं। कामैल बात नी बणनै त धैं नामैलै बणि जौ।

दुनि प्रगति की दौड़ में काँ पहुँचिगे, पर हम आपणि देवभूमि कँ ल्हिबेर बैठि रै गयाँ। गति में और प्रगति में बहुत पिछ्याड़ि। हिमालय लै बुड़न लाग। लोग पेटाक लिजि देस हूँ भाजण लाग। 'पहाड़ी' शब्दोक अर्थे भानमजू है गोय। हम मार खानै राय और आपण घौन में देवभूमिक मल्लम लगूनै राय।

साँचि कूँछा त यो 'देवभूमि' आम जनता कँ उल्लू बणूणाक लिजि मस्त ढेपु टाक वाल वर्ग द्वारा उनोर ध्यान मूल समस्याओं पर बै हटूणोक एक प्रयासाक अलावा के न्हें। योई समझो कि अरे तुम त देव भूमिक निवासी छा तुमन कँ बाँकि के चौं।

आज लै पंजाब, हरियाणा, गुजरात और दक्षिणाक सब्बै प्रदेश प्रगति की दौड़ में विश्वस्तर का नजदीक छन। देशाक विभाजनाक कारण आपण घर बटि खदैड़ि गई फटेहाल स्थिति में शरण ल्हिणाक निजी आई लोगनैल हमैरि दलदली और बीमार तराई कँ फिरि चौरासी लाखैकि माल या अन्न और वैभवाक भंडार में बदलि दे , पर हम वाईं देवभूमि में रयाँ।

आजादी है पैलिक जै अंचल में केवल शार्की कई जानेर गोरखियै सुरापान करन छिया वाँ पुर्रै अंचल सुरामय है गोछ। लोग बाग आपण सारैं सुरम्य स्थलन कँ बेचि बेर लै सुरा पिण में पिछाड़ि नि राय। सबूँ है बेरे प्रभावशाली मानि जानेर ग्वाल्ल द्याप्ताक चितई स्थित मंदिराक द्वार पर लटकि सुरा व्यवसायीक विशाल घंटाक सामणि ग्वाल्ल द्याप्तैकि लै के औकाद नि रै।

उसिक साँचि कूँछा त हो,यो देवभूमि भै। सैणिनाक बल पर

टिकी खेति, मनीआर्डर पर टिकी भरणपोषण, होटलन में और खोमचन में चहा घुटक और बिड़ीक फूँक दगै लगातार फसकन पर फसक और राजनीति, खन्यारन् में अध्यापक विहीन विद्यालय, न डाक्टर और न दवाइ पाणि फिर लै नाम अस्पताल, आपण जल, जंगल, जमीन और पितरूँकि थात कँ नीलाम करण हुँ लै तैयार जननायक, आपण मैतै में गू.मूतैकि गंग बड़न हुँ मजबूर गंगा, थ्वाड़.थ्वाड़ कै तामि खोरि जा हूनै जाणी परभत, भूकैल बेहाल है बेर घरन में घुसणई बाग, हर साल हजारूँ लोगनैकि बलि ल्हिणी सड़क, उजड़ी गौं, शुकनै जाणि धार और नौल, कंगाल होते जाणि हिमालय और वी कँ बेचि बेर मालामाल हुणि नेता, अफसर और माफिया – हमैरि 'देवभूमि'।

आज लै यै तेर जिल्लन वाल नानू नान प्रदेश में साठ हजार सौनकादि ऋषि (एन.जी.ओ.) जनताक करोड़ों रुपैं हजम करि बेर केवल पुराण (कागजी कार्यवाही) लेखणईं। आज लै हम भारतीय त बहुतै ठुलि बात भै, उत्तराखंडी लै नि है सकाँ। अल्मोड़िया, सोर्याल, पौड़्याल जसी मध्ययुगीन पछ्याण कणि आपण सर्वस्व मानि बेर बैठि छाँ। आजि लै हमार बुद्धिजीवियन कँ आपण गढ़ तक सीमित थोकदार या गढ़पति सम्राट अशोक है बेर लै महान लागँऽ।

तब यो लागँ कि वास्तव में हम देवभूमिक निवासी छाँ। शरीरैल संसार में और दिमागैल स्वर्गवासी। किलै कि असली देवभूमि त स्वर्ग छ और स्वर्ग वास्तविकता न्हेंति एक स्वैण मात्र छ।

●●●

गौंकि नरै

–प्रो. शेरसिंह बिष्ट, डी.लिट., हल्द्वानी

ल्हिगो धो–धो आपण दगाड़
गौं–बासि बाप कैं ऐल साल
के कौल कै क्वीड़ी बिरादर
च्याल–ब्वारींक शहर में ठाट
लोटी रौ बुड़ गौंकि पटखाट
के चैं तसि निठोर औलाद!
चार दिन लै आजि है न सक
बुड़ज्यु कैं हैगो चुड़फुड़ाट
अपछ्याण जा्ग में मन उचाट
लु–सीमेंटक घनघोर जंगल
गौं में कां फसकोंक दंगल
न कै दगड़ि बात–ब्यवहार
घटनै जाणौ बुड़ांक आहार
न चितूणै उन आपण सहार!
हैगो शहरी घर जेल जस
खा्ण–पिण छु राजोंक जस
न चितूणै स्वाद घरक जस
को कर सकैं उनर मनकस
लागण फैगो गौंक निस्वास
चेलि कैं जसिक नौल सौरास!
कूण लागीं, न्है जांछूं आ्ब
हैगै हुन्याल पिनालुक गा्ब
फेड़ि है नरै नाति–प्वाथां दगै
दिण छु उनरि नामकि बधै
आया नौर्तों में ऐलाक साल
पुजण छु द्याप्त हर हाल!
कूणौ च्यल, डर–डर बेर
के करछा तुम गौं जैबेर
रुकि जाओ यांई अलीबेर
देखूंल अस्पताल भली कैबेर
न्हैथैं उमर आ्ब इकलै रूणी
गौं में नैं क्वे चानी–चितूनी
नैं खा्ण–पिणकि तैं पुछणी
नैं क्वे सज–समाव करणी!
होलि गौं में हमरि बदनामी
रुकि जाओ, के छु परेशानी!
कूण फैटीं तमतमानै गर्स में
दम घुटनौ म्यर यां शहर में
मरुंल तो मैं आपणै घर में
कै जै रईं पुरा्ण मैंस–
कैं रया तुम जिंदगी भर
आया मरण बखत आपणै घर!
हित–मितुरों दगै भेट कर जूंल
बिरादरोंक का्न में चड़िबेर जूंल
लागल चित पितरोंक तिथान
लागि जूंल पितरघुणि, तरि जूंल!
जब तक छु शरीर में पराण
को छाड़ैं घर–कुड़ि बिलाण
किलै करूं ऐलै बै नौं हराण
औनो आ्ब अशौजक म्हैण
लगै राखीं गदू–तोर्यां–कका्ड़
है गै हुन्याल बाड़ि में घ्वाग
भेजुंल तुमूहीं ऐलाक फ्या्र
खा्ल नाति–प्वाथ लै म्या्र!
आई करौ च्याला कभै–कभार
हुनी साल में कतुक जै त्यार
औनी परदेशि होलि–दिवालि में
औरै रौनक है जैं घर–घर में
आए अलीबेर नानतिना ल्हिबेर
पछिल कै चाणैई नैं घरहै जैबेर!
कून–कूनै भरी आछ गव उनर
के कै दिनी जाणी, मन में डर
ऐगो भैर मनक दबी गुबार
आंसु भर लाई, दिल में आग
सकसकानै भरभरान आवाज
को जाणि सकैं मनक राज
के छु जाणी दिल में तकलीफ
हालत देखिबेर लागणै झीस!
जा्ण छु घर दिवालि में यै साल
कां मिलनी फिरि आपण मै–बाप
आपणि बोलि–भा्श, आपणि थात
बिरादरों दगै भेटघाट कुशलबात!
कतुकै अन–धन कमै ल्हियो
पद–प्रतिश्ठा नाम कमै ल्हियो
को चुकै सकैं मै–बाबुक रिण
को है सकैं कभै वीहै उरिण!
ऐछि याद फिरि बालि उमरकि
गौंक इस्कूलकि घर–बणकि
लागण फैटै जनमभुमिकि नरै
का्स ग्वाव खेल दगड़िया दगै
छोड़ि आयां हम जनू पछिल
कतुक न्है गयां हम अघिल
कटि गयां आपण जड़ों बै
पछ्याण हमरि घर–गौं दगै!
जाओ जां लै देश–परदेश
न्हैतन कैं आपण जस देश
बोलि–भा्शक छु स्वादै और
म्यर कुमाउं जस कैं न्हैं हौर!

अपणु घौर

–शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', श्रीनगर, पौड़ी

यु मेरू घौर यु तेरू घौर, घौर कुड़ी च यख सबुकि।
घरूं मा हि रैन्दा छिन, सुखी–संपन्न सभी मनखि।।

बौल्दां छां घौर तैकु, जख बसदि च मां ममता।
ब्वै–बालै कि ममता मा, सरग जन्नु सुख मिलदा।।

ब्वै–बाल का प्रेम कु जख, संजोया जांदा छां स्वीणा।
छ्वा नौन्यालु खुश करण, बुझौणा रौंदा छां भ्वीणा।।

भै–बैणु का प्रेम कु जख, बगदी रैन्दी च गंगा।
तखी मिलण चैन्द सबु तैं, सदानि रौंण कु संगा।।

सदा आशीष मिल्दु जख, छ्वटा नौन्यालु अपणु कु।
पति–पत्नी रैन्दा यन्नि, कभि नि हौन्दु छ झगडु।।

बौडा–बौडी, चचा–चाची, सदानि रैन्दा जख मिलीक।
यन्नि परिवार–घौरूं मा, सुख–शान्ति औन्दी चलीक।।

मिल्दु च जै घौर मा, ददा–दादी कु अपणुपन।
लगदु नि तै घौर मा, कभि–भि क्वै परायुपन।।

लगदु घौर स्वै अच्छु, सदानि प्रेम जख सच्चु।
अपणों प्रेम का बिगर, घौर क्वै भि नी छ अच्छु।।

भले ह्वो घौर क्वै छ्वटु, कभि प्रेम न ह्वो हल्कु।
मिल्दी शान्ति जख सबु तैं, घौर स्वै मंदिर व्होन्दु।।

जख सम्मान अपणु कु, भर्यूं भण्डार अन्न–धन कु।
कुटुम्बी जन सुखी रैन्दा, व्हन्द दुख नि वख मन कु।।

करदां प्रभु से विनति हम, कृपा बरखे तेरि हरदम।
सब्यों कु घौर व्हौ यन्नु, सदानि रौ सुखी–संपन्न।।

यु मेरू घौर यु तेरू घौर, घौर कुड़ी च यख सबुकि।
घरूं मा हि रैन्दा छिन, सुखी–संपन्न सभी मनखि।।

हरेला अशीस

–कुलदीप उप्रेती, चम्पावत

जी रया जागि रया
काम–धन्द में भलि कै लागि रया
इन दिन–बारौ भेटनैं रया
खूब झुलन–फुलन है जाया
बाग जत्ती बलवान
हंस जत्ती बुद्धिमान
हनुमान जत्ती गुणवान
कुबेर जत्ती धनवान है जाया.....जी रया.....
निरोगी काया होवौ
ईष्टदेवै छाया होवौ
परिवार में सुख–शांति पाया
मन में भ्रान्ति कभै झन ल्याया.....जी रया.....
दुबै न्यात पलीनैं रया
समुद्रै न्यात भरीनैं रया
अक्काश जसा उच्चा है जाया
सकल पदारथ तुम पाया.....जी रया.....
ठुला इज्जत नान प्यार दिया
नन्तिना आपन भल संस्कार दिया
खुद खन सद्विचार दिया
भलि बातौ परचार दिया.....जी रया.....
बुर बचन कै थैं झन कया
चार हाथ सबौ है दूरै रया
गर्ब–गुमान कभै झन करिया
मल्ली वाल बठे हमेशा डरिया.....जी रया.....
जत्ती चद्दर छ खुट उत्ती फैलाया
तेर–मेर में झन उमर गंवाया
आज द्वी–चार डाल–बोट जरूरै लगाया
ये अलख जाग–जाग जगाया.....जी रया.....

सुन्दरकांड में बर्णित काथ

—डॉ0 मनोहर चन्द्र जोशी, प्रधानाचार्य(से0नि0), हल्द्वानी

पिछले अंक से जारी .....

हनुमान ज्यू पेड़ा क पत्तों में लुकि रौछि और सोचन लागि रौछि कि मैं आब कसिक सीता माता क दुःख कें दूर करों। उई बखत बौहौत स्याणियों कें आपण दगाड़ ल्हिबेर रावण वां ऐगै। उ दुश्ट सीता कें बौहौत प्रकार समझौन लाग। साम, दान, भय और भेद देखैबेर रावण सीता थें कौन लाग कि— हे सुमुखी! मंदोदरी और आपणि सब रानियों कें मैं तेरि दासी बणै द्यौल यो म्यर प्रण छु, तु एक बारि म्यार उज्याणि कै देख तो सही। तब आपण परमस्नेही अवधपति श्री रामज्यू क ध्यान करिबेर और एक घासा क तिनड़ै कि ओट करिबेर सीता कौन लागि—हे दशमुख रावण सुण, जुगुनू क उज्यावै ल कभै लै कमलिनी नै खिलि सकनिं, तू आपण लिजि लै योई बात समझ। अरे दुश्ट तुकें श्री रघुबीरा क बाणों कि कोई खबर न्हां ?अरे पापी तु मेंकें एकलै देखिबेर म्यर हरण करि लाछै, रे अधम, निर्लज्ज त्वैकें जरा लै सरम नै ओंनि। सीता मुख बै यास बौहौत कठोर बचन और आपणि तुलना जुगुनू दगड़ि और राम कें सूर्या क समान तेजवान सुणिबेर रावण खिसिया जैगै और बौहौत गुस्स में ऐबेर कौन फैट (9)

सीता त्वेल म्यर बौहौत अपमान करि हालौ मैं त्यर ख्वर कें आपणि यो तलवारै ल काटि द्यौंल, नतरि तू जल्दी मेरि यो बात कें मानि ल्हे। हे सुमुखी! मेरि बात नै मानन पर मैं त्वेकें मारि द्योंल। तब सीता ल कौ हे दशग्रीव! म्यार प्रभु श्री रामज्यू कि भुजा जो कि श्याम कमलै कि मावै कि समान सुन्दर और हाथि कि सूड़ा क समान मजबूत और विशाल छन या तो उई भुजा म्यार कंठ मै पड़ाल या तेरि भयानक तलवार यो म्यर प्रण छु। सीता कौन लागि हे चन्द्रहास(तलबार)! श्री रामज्यू कि बियोगै कि अग्नि में पैद हई मेरि यो जलन कें तू शान्त करि दे। हे तलवार! तेरि धार तेज और शीतल छु तु म्यर यो दुख कें दूर करि दे। सीता कि यो बात सुणिबेर रावण सीता कें मारन्हों दौड़ौ, तब मय दानवै कि पुत्री मन्दोदरी ल वीकें अनेक नीति बचन सुणैबेर समझा। तब रावण सब राक्षसियों कें बुलैबेर कौन फैट कि सीता कें अनेक प्रकारैल डर देखावौ। यदि म्हेंण भरि में यो मेरि बात नै मानलि तो मैं येकें तरवारै ल मारि द्योंल। यो कैबेर रावण वांबै न्हैगै। तब बौहौत राक्षसी वां ऐबेर आपण भयंकर रूप देखै—देखै बेर सीता कें डरोंन लागि गै। (10)

उनूंमें एक त्रिजटा नामै कि एक राक्षसी छि जो कि श्री रामज्यू कि भक्त छि, उ बौहौत ज्ञानवान छि, वील उन सब राक्षसियों कें बूलैबेर आपण स्वीण सुणा और कौ कि सीता कि सेवा करिबेर सब आपण भल करि लियो। त्रिजटा कौन लागि कि वील यस स्वीण देखौ कि एक बानरै ल सारी लंका जलै हालै, राक्षसों कि सारि सेना मारि हालै, रावण नंग हैबेर गधा में भैठि रौ वीक सिरों मुंडन करि राखि और बीसों भुजा कटि छि। ये प्रकार उ दक्षिण(यमपुरी) दिशा तरफ हों जान लागि रौछि और यस लागना छि कि बिभीशण कें राजपाट मिली रौ,सारै नगर में रामचन्द्र ज्यू कि जै—जैकार हुंनै तब उं सीता कें यांबै ल्हि जानी। मैंकें यो लागों कि म्यर यो स्वीण कुछै दिनों बाद जरूर सांचि हैजाल। यो बात सुणिबेर सब राक्षसि बौहौत डरि गै और सीता थें माफि मांगन फैगै। तब ये बाद सब राक्षसी वां बै एथकै—उथकै हों न्हैगै। सीता आपण मन में यो सोचन लागि कि एक म्हैंण पुर हई बाद रावण मैंकें मारि द्यल। (11)

सीता हाथ जोड़िबेर त्रिजटा थें कौन फैटि कि —हे माता! तु मेरि यो बिपत्ति कें भली कै जाणछि, जल्दी कोई यस उपाय करि दे कि मैं आपण यो शरीर कें छोड़ि सकौं, किलैकि आब म्यर दुख असहनींय हैगौ। मेरि लिजि लाकड़ों कि चिता लगै बेर उमें आग लगै दे और म्यर यो प्रेम कें सत्य सिद्ध करि दे, रावणाक शूल जास बचन म्यार कैल आब सहन नै है सकन। यो बात सुणिबेर त्रिजटाल सीता क खुट पकड़ि बेर वीकें समझा और श्री रामज्यू क बल और प्रताप सुणा और यो कौ कि हे सुकुमारी सीते राता क बखत में यां आग नै मिलि सकन यो कैबेर उ आपण घर हों ल्हैगै। सीता सोचण लागि कि आब कि करों बिधाता लै म्यार बिपरीत है गई, न आग मिलनै और नै मेरि यो पीड़ दूर होलि। अगास में तार लै आग जास देखीनाईं पर कोई तार आग बणिबेर म्यार पास धरती मै लै नि औनै। चन्द्रमा लै आगै जस देखीनां, पर उ लै म्यार लिजि अग्नि कि बर्शा नै करि सकनै। आब हे अशोक बृक्ष! तुई मेरि प्रार्थना सुण म्यर शोक कें दूर

करिबेर आपण नाम (अशोक) सही सिद्ध करि दे। त्यार नई–नई कोमल पत्त आगै जास मैंकें देखीनाई, तू मैंकें अग्नि दिबेर मेर दुख कें शान्त करि दे। सीता कें ये प्रकार बौहौत दुखी देखते हुये हनुमान कें यो बखत एक युगाक बराबरि लम्ब लागन लाग। तब हनुमान ज्यू ल मन में बिचार करिबेर सीता क सामणि मुद्रिका(अंगुठि) गिरै दि, सीता यो समझन लागि कि वीकि प्रार्थना सुणि बेर अशोक क बोटै ल वीकें आगक अंगार दि हालौ और खुशि हैबेर वीकें उठै ल्हि।(12)

तब राम नाम लेखि हुई सुन्दर अंगुठि सीता ल देखी, उ अंगुठि कें पछ्याणि बेर सीता चाइये रैगै, और मन में बौहौत खुशी और डरा मारि ब्याकुल जसि हैगै। उ सोचन लागि कि श्री राम त यास छन जनुकें कोई हरै नै सकन और छल–कपटै ल येसि अंगुठि बणाई नै जै सकीन जब सीता यो प्रकार आपण मन में सोचन लागि रैछि जब हनुमान भली–भलि कै रामचन्द्र ज्यू क गुणगान करन लागि गै,यो सुणते ही सीता क मन क डर कम हैगै और उ मन लगै बेर उनरि बात सुणन लागि गै,तब हनुमान ज्यू सीता कें शुरू बै सब काथ सुणै दि। सीता कौन लागि कि जैल मैंकें यो अमृता क समान भली–भलि काथ सुणै उ म्यार सामणि प्रकट किलै नै हुनै। तब हनुमान सीता क पास में न्हैगै, उनूंकें देखिबेर सीता ल आपण मूंख दुसर तरफ हों करि ल्हि। हनुमान ज्यू ल कौ कि हे माता जानकी! मैं श्री राम ज्यू क दूत छों, मैं करूणानिधान श्री राम ज्यू कि कसम ल्हि बेर कौन लागि रयों कि यो अंगुठि मैई लै रयों, रामज्यू ल अंगुठि मैंकें तुमुकें आपण निसाणि रूप में पच्छाणै लिजि दि राखै। यो सुणि बेर सीता ल यो पुछ कि आदिम और बानरों क दगड़ कसिक है सकौं ? तब हनुमानै ल उ सारी काथ बतै जै प्रकार उनरि रामचन्द्र ज्यू दगड़ि मित्रता भै। हनुमाना प्रेम पूर्ण बात सुणिबेर सीता क मन में विश्वास हैगै और उनूंल यो समझि लि कि यो मन, बचन और कर्मैल कृपासिंन्धु श्री रामज्यू कै सेवक छु। (13)

भगवान राम क सेवक समझि बेर हनुमाना क लिजि सीता क मन में बौहौत प्रेम पैद हैगै, आंखों में आंसु औन फैगै और मन खुशि हैगै, कौन लागि कि हे हनुमान! दुखा क समुद्र में डुबनेर वालि म्यार लिजि तुम जहाज बणि बेर ऐ रौछा। आब लक्ष्मणा क दगाड़ै म्यार स्वामी कि कुशल–मंगल बताओ। श्री राम तौ कोमल मन वाल छन पर म्यार लिजि यतुक कठोरता किलै ?कभै मेंकें लै याद करि करनीं। ये प्रकार बुलान–बुलानै सीता क आंखों में आंसु औंन फैगै और कौन लागि गै कि हे नाथ! तुमूंल मैंकें बिल्कुलै भुलै हालौ। तब सीता कें ब्याकुल देखिबेर हनुमान कौन लाग कि हे माता! कृपासिंधु श्री राम लक्ष्मणा क दगाड़ कुशलपूर्वक छन, तुम आपण मन में नक नै मानौ किलैकि प्रभु राम ज्यू क मन में तुमार है दुगुण प्रेम तुमार लिजि छु। अब धैर्य धरिबेर श्री रधुनाथ ज्यू क यो संदेश सुणौ– यो कैबेर हनुमान प्रेम मगन हैगै और उनार आंखों बै आंसु औंन फैगै। (14)

हनुमान बतौन लाग कि श्री रामज्यू ल कै राखौ कि हे सीते! त्यार बियोग में मैंकें संसारै कि सब चीज उल्ट लागनाई, पेड़ों क नई–नई पत्त लै आग जस देखीनीं, रात कालरात्रि जसि और चन्द्रमा सूर्य जस लागों। कमलों क वन मन में चुभन पैद करों, शीतल सुगन्धित हाव लै आब मेंकें जहरिलि और गरम लागनै। मन क दुख कैबेर थ्वाड़ कम हैजां, पर मैं कैथें कों, यो दुख कें कोई नि जाणि सकन, त्यार और म्यार यो प्रेम क रहस्य कें एक म्यरै मन जाणों और म्यर उ मन सदा त्यारै दगाड़ लागि रों, बस योई त्यार लिजि म्यर प्रेम क जबाब छु। श्री रामज्यू कि यो बात कें सुणिबेर जानकी रामज्यू क प्रेम में मगन हैगै और उनूंकें आपण शरीरै कि लै सुध–बुध नैरै। हनुमान ज्यू ल कौ हे माता! मेरि यो बात कें सुणिबेर तुम दुखी नै होऔ और श्री रामज्यू कि बीरता कें मन में याद करिबेर धैर्य धारण करौ। राक्षसों कि सेना किड़–मकौड़ों जास छन और श्री रामज्यू क बाण अग्नि समान ये प्रकार आपण मन में धैर्य धारण करिबेर राक्षसों कें भसम हई समझौ। (15)

हनुमान कौंनी कि हे माता! यदि श्री रामज्यू कें तुमर पत्त लागि जान कि तुम कांछा त उं तुमुकें लिजान में जरा लै देर नै लगौन। मैं तुमुकें यांबै लि जै सकौ पर मैंकें म्यार प्रभु कि यो आज्ञा न्हांतन, हे माता! थ्वाड़ दिन और धैर्य धारण करौ फिरि जल्दी बानरों कि सेना कें दगाड़ ल्हिबेर श्री रामज्यू यां ऐजाल और सब राक्षसों कें मारिबेर तुमुकें आपण दगाड़ लिजाल। सीता ल कौ कि हे पुत्र! सब बानर तुमी जास नान–नान ह्वाल, यां तो राक्षस बौहौत बलवान छन, म्यर मन में यो समझि बेर संदेह हुना कि तुम राक्षसों कें कसिक मारि सकला। यो सुणिबेर हनुमान ज्यूल सुमेरू पर्वत जस आपण विशाल और बलवान शरीर जो कि युद्ध में आपण शत्रुओं कें डरने वाल छि धारण करौ। सीता क मन में यो देखिबेर परम विश्वास प्राप्त भौ, तब हनुमानै ल आपण उई नान रूप फिरि धारण करि ल्हे। हे माता! सुणौ बानरों में ज्यादा बल–बुद्धि नै हुनि पर प्रभु कि कृपा ल नान–नान सर्प लै गरूड़ कें खैजां। (16)

हनुमानै कि ये प्रकार भक्ति, प्रताप और

तेजवान बात सुणिबेर सीता कें बौहौत संतोश भौ, उनूंल हनुमान कें रामज्यू क प्रिय मानिबेर आशीर्वाद दे कि हे तात तुम बलवान, अजर, अमर और सदगुणों वाल होओ। श्री रामज्यू कि तुमार ऊपर आपणि कृपा बणि रौ, यो सुणिबेर हनुमान प्रेम मगन हैगै और बार–बार सीता क चरणों में आपण ख्वर धरि बेर हाथ जोड़िबेर कौन लाग कि हे माता मैं आब कृतार्थ है गयों, तुमर आशीर्वाद अमोघ छु यो सारै संसार जाणौ। हे माता! यां बौहौत सुन्दर फलों क पेड़ों कें देखिबेर मैंकें बौहौत भूख लागि गै, सीताल बता कि यो बन कि भयंकर राक्षस पहरदारी करते रोंनी। हनुमान ज्यू ल कौ कि माता यदि तुम खुशि हैबेर मेंकें फल खानें कि आज्ञा दि दियो त मेंकें उनर कोई डर न्हां। हनुमान कें बल और बुद्धिमान समझि बेर कौ कि हे तात! जाओ और श्री रामज्यू क चरणों कें आपण मन में धारण करिबेर मीठ फल खाओ। (17)

हनुमान सीता कें प्रणाम करिबेर अशोक बाटिका में न्हेंगै,वां फलों कें खैबेर पेड़ों कें उखाड़न फैगै। वां बौहौत पौहरदार छि जनूंकें उनूंल मारि दि, कोई भाजिबेर रावणा क पास पुजी और कौन लाग कि हे नाथ! एक भयंकर बानर ऐरौ जैल अशोक बाटिका उजाड़ि हालै बोट–डाव सब टोड़ि हालि और हमार राक्षसों कें लै मारि हालौ। यो सुणिबेर रावणैल आपण बौहौत योद्धा वां भेजि दि,जनूंकें देखिबेर हनुमान जोरै कि गर्जना करै और उनूंकें लै मारि दि कोई अदमरि हैबेर फिरि रावणा क पास पुजि, तब रावणैल आपण च्यल अक्षयकुमार कें भेजौ जो बौहौत योद्धाओं कें ल्हिबेर वां पुजौ, वीकें वां औन देखिबेर हनुमानैल एक ठुल्ल बोट कें उखाड़ि बेर अक्षयकुमार कें मारि दि और जोरै कि गर्जना करन लागि गै, राक्षसों कि सेना में कतुवां कें मारि हाल, कतुवां कें अधमरि करि हाल और कतुवां कें जमीन पन पटकि हाल, फिरि कैलै जैबेर रावण कें बता कि उ बानर तौ बौहौत बलवान छु। (18)

आपण च्यल अक्षयकुमार क मरिय क समाचार सुणिबेर रावण बौहौत गुस्स में ऐगै,तब वील आपण ठुल च्यल मेघनाद कें भेजौ और कौ कि उ बानर कें बादि बेर म्यार पास लाओ, यो देखि जाओ कि उ बानर यां कां बै ऐरौ। इन्द्र कें जितनेर वाल योद्धा मेघनाद वांहों जान फैगै, आपण भाई क मृत्यु ल उ बौहौत गुस्स में छि। हनुमान ज्यू देखौ कि आब कोई भयानक योद्धा औंन लागि रौ तब उं आपण दांतों कें कटकटै बेर जोरै कि गर्जना करिबेर दौड़न फैगै। उनूंल एक ठुल्ल बोट उखाड़िबेर वीक रथ में खेड़ि दि तब रावण क च्यल मेघनाद रथ बै छुटि पड़,वीक दगाड़ आई योद्धाओं कें लै मारि दि, फिरि उं मेघनाद दगड़ि लड़न फैगै यस लागनाछि जाणि द्वि हाथि लड़न लागि रई। तब हनुमानै ल मेघनाद कें एक जोर क मुक्क मारौ उ थ्वाड़ देर बेहोस है पड़ौ और फिरि उठिबेर आपणि माया देखौन फैटौ फिरि लै हनुमान कें नै पकड़ि सक । तब अंत में वील ब्रह्मास्त्र क सन्धान करौ जैकै देखिबेर हनुमानै ल बिचार करौ कि ब्रह्मास्त्र कें नैं मानन पर म्यार प्रभु कि अपार महिमा खतम है जालि। (19)

ब्रह्मास्त्र लागते ही हनुमान पेड़ बै जमीन में छुटि गै और बेहोस हैगै, पेड़ बै छुटन बखत उनूंल बौहौत राक्षसों कें लै च्यापि दि, फिरि वील हनुमान कें नागपाशै ल बादि दि। शिबज्यू कौंनी कि हे भवानी! सुणो, जैक नाम जपिबेर ज्ञानी लोग संसाराक बंधन कें काटि दिनी उनर यो दूत कें कोई बादि सकौं ?हनुमानै ल आपण प्रभु लिजि आफौ कें आफि बंधै ल्हे। बानर कें बादि सुणिबेर सब राक्षस दौड़ि–दौडि बेर देखनौ औंन फैगै। तब हनुमान ज्यू ल रावणै कि सभा कें देखौ, जां द्याप्त और दिक्पाल लै हाथ जोड़िबेर डरि–डरि बेर रावण कें देखि रौछि। हनुमान कें वां जरा लै डर नै लाग, उ राजसभा में उसिकै ठाड़ हैरौछि जसिक भयंकर सर्पों क बीच में गरूड़ रौं। हनुमान कें देखिबेर रावण बौहौत खराब बचन कैबेर जोर–जोरै ल हंसन फैट, फिरि आपण च्यलै कि याद औन पर उ दुखी लै हैगै।(20)

रावण कौन फैट अरे बानर! तू को छै ? और कैकि ताकत पर त्वेल अशोक बाटिका उजाड़ै ?त्वेल कभै म्यर नाम नै सुणि राख?रे मूर्ख! त्वेल के कारण एतुक राक्षसों कें मारौ, बता तुकें आपण प्राणों क कोई डर न्हां?। तब हनुमान ज्यू ल कौ कि हे रावण! सुण, जैक प्रतापैल यो सृश्टि चलि रै, और जैक बलै ल ब्रह्मा, बिश्नु, महेश यो सुश्टि कें बणौनी,पालन करनी और संहार करनी, जैकि ताकतै ल शेशनाग पर्वत और बनों सहित यो ब्रह्मांड कें धारण करनी, जो द्याप्तों कि रक्षा लिजि आपण अनेक अवतार धारण करिबेर त्वे जास मूर्खों कें शिक्षा दिनी, जनूंल भगवान शिवज्यू क भयंकर धनुश कें टोड़ि बेर घमंडि राजों क घमंड चूर करि दे, खर, दूशण, त्रिशरा और बालि कें जनूंल मारि हालौ,जो सबासब अतुलित बलवान छि, जनूंथें है जरासि जाकत पैबेर त्वेल यो सारै चराचर जगत कें आपण अधीन करि राखौ और जनरि प्रिय घरवाई कें तु चोरिबेर हरण करि लैरौछै , मैं उनरै दूत छों। (21).....

(बाकि अघिल अंक में.....) –मो0 7579232500 ●●●

कोरोनाक चमत्कार

–दामोदर जोशी 'देवांशु', पूर्व प्रधानाचार्य

बीस बरस बटि छी मैं गौं है भ्यार
रुजगार रुजगार कै खाणौ छी मार
ब्या भौ वाई नानतिन पाली
कमाई करी भौत मगर जेब रै खाली
घर–घरनकि नौकरी करनै रईं
कती लुकुड़ घ्वै कती जुठ भान मॉजी
नानतिन पढ़ि लेखि विदेश भाजीं
हारीं जुवारि जौ मैं ठगी गईं
आपूँ कै आफी छलते रईं
एकाएक कोरोनाक कहर आ
ताव भितेर बन्द रोजगारक ठिया
ग्राफ कोरोनाक रक्तबीजकि चार बढ़ते गो
मौतोंक आकड़ा अगास हुं चढ़ते गो
ऑखन में म्यार रिटण लागौ पहाड़
बुलूंण लागौ म्यर पहाड़
मनल छोड़ी म्यार दुखकि च्याड़
गौं लौटण हुँ आफी बढ़ण लागीं खुट
तब जै लागौ य परदेश कतुक छु झुट
गौं वालोंल टुक में टिकूँण नि दी
कोरोंना समझि कुकुर कैं लै बुकूण नि दी
क्वारंटाइन करि दे इक्कीस दिन तक
कोरोना रोगि मैं उनूकैं सक
वाईं बटि देखी मैंल गौंकि सूरत
सुधारुल समझौ आब यैकि मूरत
भानि भदेलि छी छानि छापरि
भाङ फूँफै रौछी तऊपूरै स्यरि
यति कति छी म्यरि डाब जै कुड़ि
रूँछी बौज्यू दगाड़ इज छी बुढ़ी
गोरु–भैसोंक वॉ क्वे पत्तै नै
खेति पातिकि वॉ क्वै गतै नै
गाड़–भिड़न कैं देखि बेर बंजर
मनम म्यार बुड़ौ खंजर
नाज पाणिकि छी भलीकै पट्ट
सौल–शुङर, गुणि–बानर करि जाणौछी चट्ट
लटकी ताव छी जाग–जाग बडुवाक जाव छी
खेति करणक कैक न मनम चाव छी
सुकी छी नौल मनम हौल छी
सरकारि सस्त राशनकि बड़ि चौल छी
यो देखि मनम म्यार ऊँण लागों उमाव
जनम भूमि कैं आब हालौ अङवाव
स्वार–बिरादरोक गयूँ मैं पास
सहार दे उनुल जो छी खास
खॉण पिणकि जुगुत सब हुनै रै
धिनालि पाणि मुखुत हुनै रै
आब खुटन में ठाड़ हुणक छी काम
इष्ट देबूक ले ल्हिणै छी नाम
दूद दिंणी जानवर पावण लागीं
दी–बात थान में बावण लागीं
बॉज गाड़ भिड़न कैं कैम करौ
मुर्गी पालन माछ पालन हुँ मणि टैम धरौ
खूब खाईं अण्ड और बेचौ दूद
तब तक विदेश बटि लौटि आई म्यार पूत
द्विया द्विउद्योगक कौशल देखूँण लागीं
काथ आपणि नई लेखण लागीं
घर भितेर सूर्जक जस उज्याव भौ
कर्मक सबुल हात में मुच्छयाव ल्हौ
नई टेकनीकल सबुल ल्है काम
मेहनतक मिलण लागों दाम
हरी–भरी छाजण लागीं जंगल
जंगल में फिर भौ मंगल
सरकारि राशन फिर चितैईण लागौ बबाल
भरी भकार कर्मक यस देखौ कमाल
सौल सुङर गुणि बानरों पर पड़ी घन्तर
लागण लागी जब उनूकैं हण्टर
आब नौल–धारन में बगणौ पाणि
धर्ति बणि गे फिर धनकि खॉणि
दिशनाक फिर खुलण लागीं द्वार
जानै रौ फिर पलायनक बुखार
मैं मनु बणि लौटि घर आई
मेरि जोड़–जुगुत देखि सब सरि आई
मणी मणि कै भरीणौ गौं
गौक दुणी में है गोय नौं
सावनाक झुल में सब झुलण लागीं
पलायनक दुख सब भुलण लागीं
कोरोनाल करै दे यो चमत्कार
देवभूमि त्वैकैं म्यर नमस्कार।।

पलायन क् दंश

ऐ जा रे ! कौवा लौट बे ऐजा,
टुटि उधरी घोल कैं चैजा।
त्यार दगैड़ै मैं लै भै रौंलौ,
उधरी घोल कैं फिर बसॅूलौ।
फिर पिपल क् बोट म आलै,
फिर पितरों कैं तू बुलालै।
उनर सोल–सराद करूंलौ,
पैंलिकै चार तुकड़ि बुलौंलौ।
त्यार दग्ड़ि पड़ोस बसोंलौ,
दुःख सुखं फिर क्वीड़ लगूंलौ।
किस्स–कहांणां फिर पुरांणा,
बिति बखतै कैं याद करूंलौ,
टुटि उधरी कुड़ि छा उं लौ,
न चुल लगै बेर भात पकालौ।
डाव–बोटि–जड़ि–बूटि उगौलौ,
हाव दुषित कैं शुद्ध करूंलौ।
गोरु–बाछा–बकार पालुंलौ,
दै–दूदाक् मट्याड़ भरुलौ।
धार–नौला–चुप्डांव बनूंलौ,
पाणि–पन्यार–पन्याव लगूंलौ।
प्रीत पुरांणि कि रीत जगूंलौ,
फिर 'लोक–संगीत' बनूंलौ।
फिर उछ्याण–पुछयाण करुंलौ,
फिर नई पछ्याड़ लगूंलौ।
मैं तुकैं द्यौंलौ जे लै मांगलै,
'घुघुति–त्यार' में जब लै आलै।
या मेरि दगाड़ घुघुत बनालै,
खुदै घुघुतों कि माव गठयालै।
भुभरि बेर 'भाबर' नि जालै,
आपुंणै पहाड़ रू'बरु रौलै।
आजा कौवा म्यार भैट दगड़ै,
आज बै तू म्यौर भाई लागलै।
मैं छु त्येरि तू म्यौर पराण,
नि जारे कौवा देश विरांण।
फिर एक बार पहाड़ में रौंलौ,
फिर नई कारबार जुटौंलौ।
फिर प्रकृति कि रचना सारी,
नई घर–बार संसार बसौंलौ।
ऐ जा रे ! कौवा 'उड़ि बे ऐ जा,
फिर हिल–मिल बे दगैड़ै रौलौ।।

सावनी मन 'औरै हैरै'

–देवकी नंदन भट्ट 'मयंक', हल्द्वानी

औरै हैरै–औरै हैरै/पौरै–ध्याव होलि हैरै।
भागुलि भौजी भिजि बेर/निझूति लै औरै हैरै।।
भांङौ–नशा औरै लैरौ/भंगिरु लै औरै हैरौ।
भ्वानि दि लै औरै हैरै/भंगिदा लै औरै है रौ।।
अबीर–गुलाल–तवौ–झौलै–झोल/औरै है रौ।
आंगन में हिल्ल है रौ/भितेर हिलपट है रौ।।
दाज्यु छैं या बाज्यु छैं/कै कै लै लकार नि रै।
होली कि होलिकार है रै/पांणि कि फुहार लै रै।।
जे लै औंछौ मुंख बटि/औरै–औरै–औरै कौंनि।
होली हैरै–होलि हैरै/होली हैरै–होली कौंनि।।

वाह रे दारू

–जोत सिंह नेगी,
कुलाईखान्द, पौड़ी

आदमि कु मान–सम्मान च दारू
ब्यौ–बरत्यों की शान च दारू
सुबैर दुनरि–ब्याखुनि दारू
मनख्यॅू कु सबसे बड्डु सारू च दारू
बिन दारू कु नि हून्द क्वी काम काज
कथा जागरों मां भि दारू कु रिवाज
मुरदा घाट मा भि नि आंदि लाज
पिइणी च पीपल–पाणी म भी आज
बरत्या–घरत्या बामण अर औजि
छवटा–बड़ा, सभि दादा–भौजि
गुरु–शिष्य अर कुलि बेलदार
प्रधान अर छवटा–बड़ा दुकानदार
घर गौं म क्वी इनु छुटयॅू नी च
आज दारू कु जु आशिक नी च
धन रे दारू ! वाह रे दारू
कख पौं छाली दुन्या थैं पे दारू ?

कोरोना (कोविड–19) महामारि

–डॉ0 जगदीश चन्द्र पन्त, हल्द्वानी

लगभग सौ साल में हमर देश भारत में महामारि ऐ रै। एक पीड़ करणी व चिन्ताजनक वातावरण बन रौ। अब इकैं देख बेर यौ लागण रौ कि अब समाज प्रकृति क निर्मम शौषण नी कर सकन। आज जलवायु संकट, अनियन्त्रित मौसम, वायु, भूमि व महासागर में प्रदुषण ल दुनिय कैं एक खतरनाक मोड़ पर ठाड़ करि हालौ। जब तक यौ पुराण स्थिति में नी ए जान आजि लै हम संकट में छन। एक शुभ संकेत यौ बणौ कि लोकडाउन में प्रकृति संवरन भै गे। कतु सालौं में निल आसमान देखो, वायुमण्डलीय प्रदुषण क स्तर कम हौंछ। पंछी, किड़, तितली क अनेक पुतई प्रजातियों कैं नवीन जीवन मिलौ। अब यौ प्रयास करण पड़ौल कि इनन कैं कष्ट नी हवौ प्रकृति कैं और ज्यादा सम्मान दिण पड़ौल।

अब हमन कैं आपण योजनाओं कैं नई ढंग ल बणौन पडौल। शिक्षा, स्वास्थ्य पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कम से कम तीन प्रतिशत आवंटन जरूरी करण चैं। अगर भारत इनन में खर्च नी करौल तो वैश्विक शक्ति बनणक उमीद बिखर जालि। यौ हमारी कमजोरि रै कि हमूल आजादी बाद इन क्षेत्रन में कम ध्यान दें। अब यौ ले जरूरी है गो कि केन्द्र व राज्य मे कारोना काल में तारतम्य बणी रवौ चाहे क्वे ले राजनीतिक दल हो।

यद्यपि स्वास्थ्य राज्य सरकार क अधीन विषय छू फिर लै यौ संकट में जमीनी तौर पर सूबों व केन्द्र को मिलकर लड़न चै। अतएव टकरावादी संघवाद बजाय सहकारी संघवाद क जरूरत छू।

वैक्सीन खोज क लिजी शोध में अंतराष्ट्रीय सहयोग लै अनिवार्य है गो। पीपीई किट व दवाई कैं उपलब्ध करौणा लिजी लै वैश्विक सहयोग जरूरी छू। हमर वैदिक विचार 'वसुधैव कुटुंबकम्' ऐल काम औण चै। क्वै लै राष्ट्र कतुकै शक्तिशाली किले नि हवो यौ संकट में एक द्वीप जस बन बेर नी रै सकन। नतर मानव जाति एक साथ डुब जालि या उबरि जालि। आज दुनि में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक व शोधकर्ता छन। भारत में लै कोरोना वायरस क टिक खोजणा लिजी दिनरात प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक लागी रई। इसी अन्य देशों क सहयोग 'सोने में सुहागा' जस साबित है जाल। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डव्लू0एच0ओ0) क भूमिका लें महत्वपूर्ण दू यद्यपि अनेक देश यैक आलोचना करण रई फिर लै संगठन क अनुभव कैं नकारि नी जै सकन। अचानक लोकडाउन करिबेर लाखों मजदूर जॉ तॉ इकठ्ठ है गाय उ लें एक राष्ट्रीय शर्म क बात भई। वीक इन्तजाम पैली होण चैंछी बाद में एक व्यवस्था बणैबेर रेल द्वारा उनुकैं उनार घर पुजाई गोय। कतु मजदुर मजबुर छी। घर जान बखत बाटपन मर गाय। अब ठीक है गो, उ बाकी सब घर पुज गई और उनार खातों में सहयोग राशि लें डाली गे। अब बितीय योजन में उनार रोजगार क व्यवस्था करण चैंछ। देशक मौद्रिक नीति में वी प्रकारल बदलाव लें जरूरी है गों।

भारतीय संस्कृति क अनुकुल बुजुर्गो, महिला व बच्चों हैं भ्यार नी निकलो तो कई जाण रौ पर उनार इन्तजाम को करल। बुजुर्गो की आय कसी बढ़ौ, वीक परीक्षण जरूरी है गो। 65 लाख (केन्द्रीय उपक्रम व असंगठित क्षेत्राक) सेवानिवृत कर्मचारि छन जनन कै न्यूनतम पेंशन देई जाण रै, जमा पुंजी पर बैंक में ब्याज कम कर देई गो। अब उ कसी स्वावलम्बी बणाल यो ल विचारणीय छू। इन वर्गो पर अनुचित व्यवहार नी होण चैंन। जनप्रतिनिधि जो तीन–तीन पेंशन पाण रई उनौर लें परीक्षण करि जाओ। सादी–ब्याह पर अनावश्यक खर्च नी करि जाओ। 40–50 अतिथि संख्या तय करि जाऔ। बेसहारा लोगो क भोजनक व्यवस्था राजनैतिक पार्टी क फण्ड बटि होण चैं।

कोरोना वायरस ल मौन व एकान्त रौण सिखें हालौ। ताकि खुद भीतेर झांक सकौ। आपण चेतना कै जगौणक मौक मिल रौ। अध्ययन करणक मौक मिलौ, जमी आपण धर्म ग्रन्थों के देख सकौ। आजतक दौड़–भाग जिन्दगी में मैस कें समय नी मिलछी। घर र वौ घर र वौ एलान हान होण पर खूब समय मिल रौ हमन कैं आपण भितेर महापुरुषो द्वारा बिताई गई दिव्य प्रकाश कैं खोजणाक समय मिलौ। जमी मैसक अस्तिव्य क मूल छू। ऐल प्रत्येक इन्सान व समाजक भौत ठूल वर्ग कै फैद ह्वल।

अब हाव–पाणी साफ है रौ, ध्वनि प्रदुषण कम है रौ, डिस्को संगीत बन्द है गौ, अनावश्यक बैण्ड–बाज क बाढ़ बिल्कूल खत्म छू। पंछी चहचहाव रई। जानवर लै खुस देखी रई। घुमन्तु घ्वाड़ व गोरु पर स्थानीय प्रशासन लगाम लगॅूण

रई। सड़को पर सफाई साफ नजर ऊँण रै। नाली लै साफ कराई जाण रई।

सावधान धरण फिर लें झन भूलिया। हात झन मिलाया, दूर बटि अभिवादन स्वीकार करिया, हाथ में बार–बार सफाई, सैनेटाईजर प्रयोग करण भौय। नाक मूख मास्क (मुहाव) जरूर लगौण भौय। भीड़–भाड़ वाल जाग में कम जाण भौय, भ्यार खाण–पीन कमै करण चै। फल, शब्जी आदि घर लै बेर, ध्वै बेर भली भाँति प्रयोग करण भौय। बिना मतलब अस्पताल नी जाण भौय। आरोग्य सेतु ऐप चालू करि बेर धरण चै आदि–आदि। कोरोना खत्म होण क बार में समय तय न्हाती।

●●●

अंत भल सब भल

–रतन सिंह किरमोलिया, बागेश्वर

सोचछां जसै
करो लै वसै
करछां जसै
सोचोलै वसै
तबै के बात छू
यै बातकि बात छू
कै रौ भगवान वैकि मदद करनी
जो आपणि मदद खुद करनी
उठण तो तुमूकणी छू
उठण तो हमूकणी छू
उठण तो सबू कणी छु
वू तो एक्कै जणी छू
पर चलूण रौ सार संसार
जस संसार तस मनसार
जस मनसार तस संसार
यो तो छू जीवन क सार
बस हमेशा भल सोचो
बस हमेशा भल करो
नक कैं तिराओ
भल कैं बिराओ
भल करला भलै ह्वल
नक करला नकै ह्वल
जस बोला उस लवाला
जस लवाला उस पाला
कर भल ह्वल भल
अंत भल सब भल।।

शहीदो कोटि–कोटि प्रणाम

– डॉ. गजेन्द्र बटोही, ऊंचापुल

देशक् तिरंगा कैं ओढ़ि–ढ़की बेर
उँणी च्यलो आप्ण गाँव,
धन्य तुम वीरो च्यलो
रण में नि पलट तुमार पाँव।
दुश्मण्क करि आच्छा
सबै काम–तमाम
तुमरि खुटि हमरित
कोटि–कोटि सलाम।
धरतिक् स्वर्ग कश्मीर बा्ट
स्वर्गारोहरण पर न्है ग्या
इजा्–बाबु दगाड़
गौं–गाड़क नाम लै
धन्य–धन्य बढ़ै ग्या।
जन्म–भूमिक ऐ ग्या काम,
तुमरि खुटि हमरि
कोटि–कोटि प्रणाम।
घर, गौं, दुकान, बजार मॉ
लौटि उँणक वैद करि
आप्ण खुटि न्है ग्या,
लौटा, इजा–बाबु पास
तो चार कॉधों बैठि आया।
मातृभूमिक चरणों–चढ़ै आया ज्यॉन
तुमरि खुटि हमरि
कोटि–कोटि प्रणाम।
बरफ भरि ऊँचा–ऊँचा डाँड–काँठों
ठ्ाड़–ठ्ाड़ै रात–दिनॉ,
पाका–क नापाक इरादॉ कैं
माटि मुड़ि मटियामेट कर आ्या
धन तुमर साहस, शौर्य–बल
बढ़ै गया देशक मान,
तुमरि खुटि हमरि
कोटि–कोटि प्रणाम।

खुशी

— उमेश चन्द्र जोशी

हमार यॉ कूनी जतुक चौड़ गिज खुलाल उतुक लम्बी तुमरि उमर होलि। जे तुम सोचनछा, जे तुम कूंछा और जे तुम करन छा यो तीनन में समन्वय हुॅण चैछो यमैई सुख छ। जो जीवन में खुश रूॅनी उॅ काम लै भल करनी। मानसिक शान्ति हुॅण चैछ। मानसिक शान्ति सबुन है ठुल खुशी छ। आदिमैल सोचण लै उई चीज चैनी जो खुशी और स्वास्थ्य दिनी।

सच्ची खुशी सम्पत्ति, डबल या यश प्राप्त करण में नि मिलन बल्कि लोगन दगै गुणवत्तापूर्ण रिश्तन में मिलें। खासकर उन लोगन दगैं जनूॅके आप प्यार करनछा, जनर सम्मान करन छा। खुशी लिजी मस्ती उत्कृष्ट गुण और सकारात्मक सोच जरूरी छन।

खॉण और पिण लै जरूरी छन पर यनूॅ कें डायनिंग टेबल तक सीमित धरण चैंछ। जीवन में स्पीड ब्रेकर अर्थात कष्ट, दुःख, दर्द सब ऊनी पर हॅसी नि रूकण चैंछ। हम सबन कैं हर समय खुशी प्राप्त करणोंक हक छ। सबनैल खुशी प्राप्त करणेंकि इच्छ करण चैंछ, कोशिश लै।

इच्छाऐं, तृष्णाऍ आदि सब शारीरिक वासनाऐं छैं। लोग पैलिक अपार धन संग्रह करण लागनील। फिर वीक मददल आपण इच्छाओं कैं पुर करनी। यों जादेतर अनियमित काम क्रीड़ा खाण पिंण, आराम देह घर, स्वार्थ साधन में लिप्त रूनी। पर इन्द्रिय सुख कभ्भै लै सन्तुष्ट नि हुन। और—और कूॅनी सब इन्द्रिय। उनन के सन्तुष्ट करण असम्भव हुॅछ। इन्द्रिय बलवान हुॅनी। उॅ भलभल विद्वानन कें आपण तरफ खींच ल्हिनी। जब इन्द्रिय सन्तुष्ट नि हुन त बहुत दुःख हुॅछ। क्षणिक सुख फिर अनंत दुःख।

अगर खुशी प्राप्त करण हो तो आन्तरिक श्रेष्ठता में ध्यान दिण चैंछ। आन्तरिक श्रेष्ठता में ऊनी त्याग, संयम, आपस दगै कड़ाई, दुहारनॉक दगै उदारता, गरीबन कैं मदध। कमजोरन कैं सहायता आदि में।

आज हम एक शत्रुतापूर्ण तथा प्रतिकूल दुनिं में रूणयॉ। आज सब चानी कि उनन कैं स्वीकार करी जाओ। उनार दगै प्रेम करी जाओ। सब लोग उनेरि प्रशंसा करन। तबै उनन कें खुशी मिलैलि। सब स्वर्थी है गयी। सबुनकैं सब चैंध। लोग के ले दिण हूॅ तैयार न्है तन। यो सोचण कि मैं सदैव सुखी और खुश रूॅल बेवकूफी छ। दुःखै होल। जीवन दगै त सुख दुःख जुड़ी छैं।

यो संसारक ठुल है ठुल चीज लै सम्पूर्ण खुशी नि दि सकन। न मर्क (ब्यूक) कार और नं0 12 गुलाब। केवल निश्छल प्रेम खुशी दिलो सकों। योई प्रेमेकि उपस्थिति संसार कैं खुश और सुखी बणौछ। आपण चाहत के छ। के आपूॅ केवल एक सख्त कार्य सारण चॉछा ?पारिवारिक समस्या छन आब त उत्तरदायित्व ले कम होते जॉणई। एकल परिवार छें। हम केवल आपण जीवनॉक वास्ते उत्तरदायित्व छॉ। दुहार चीजनॉक एवज में खुशी चुणि सकनूॅ।

खुशी प्राप्त करणॉक हमार इराद के छें और प्रयास के छें। जब इनपुट न्हेति तो खुशिक आऊटपुट कॉ बटिक होल। के हम चानू के हमूॅकें मिलणो। बिना प्याराक के न्हें। जब द्याला तबै मिलोल।

खुशिक कोई रस्त न्हेति। वास्तव में खुशी स्वयं एक रस्त छ। खुशी कैं बचाओ। सन्तुष्ट रवो। कोई दिखावा, आडंम्बर, तड़कभड़क नै। खालि द्विमिनटैकि हॅसि, अस्थायी रोमांच है सकें, वास्तविक खुशी नै। खुशी त शान्ति और सन्तोष छ। ह्रदय में गीत। खुश रूॅण मनुष्यैकि संरचना में छ। अनुवॉशिक गुण। ठुल—ठुल हादसनॉक बाद ले धीरे—धीरे मनुष्य आपण खुशिक सहज भाव में लौट जॉछ।

नान नान सुख, क्षणिक सुख जीवन में बहुत उनी। संगीत, खॉण, पिंण, सिनेमा, टी0वी0, दोस्ती, रिश्तेदारी, घुमण—फिरण, सूरज, चॉद, बर्ख नींद, पाणि, रेत, पेड़ महिला, मर्द, हॅसी, नानतिन, जानवर, कहानि, कविता, ईश्वर यो सब खुशी दिनी। सैंणी जरा सा में खुश है जानी। उनार गुण अपनूण चैंनी। जितण छूॅ दिमॉग हुॅछ और खुश रूॅण हूॅ दिल।

आजकल लोग कूॅनी तुमल पुर कपड़ नि पैर राख। तुम नांगड़ै छा। अगर तुमुल मुस्कुराहट नि ओड़ि राखि। खुशी छ यदि हॅमू के उ सब मिल जाओ जो हम चॉनू। अमीर हूॅण, प्रसिद्ध हुॅण, बुद्धिमान हुॅण, सुन्दर हुॅण और सन्तुष्ट हुॅण खुश हुण छ। एक मुस्कान खुश करैं। गुड मार्निंग ओर बैस्ट ऑफ लक खुश करेनी। मैं हेडमास्टराक साक्षात्कार हूॅ इलाहाबाद गयी भयूॅ। चौक में लक्ष्मी होटल में रक्यूॅ। रत्ते 8 बजे चैक आऊट करौ। काउन्टर में डबल दिं। बांई मैनेजर ले बैठी भै। अचानक बलॉणो, ''गुड मार्निस सर'' मैंल ले जवाब देछ। मैं जॉण लाग्यूॅ तो बलाणो। बैस्ट ऑफ लक। मैंल बैग तली घरो। सिध वीक

पास गयूँ। उ ठाड हैगै। मैंल विमै उंग्वाल हाल दि। थैंक यू। आज इसकी मुझे बहुत जरूरत थी, कौछ मैल। जने रयूँ।

सुख चॉछा तो विकार कम करो। सुखी जीवन मतलब सार्थक जीवन स्वैंण यस चैनी कि जीवन अनन्त छ। जियो यसिक कि भौले हूँ मय्यत छ। खुश रहो। हंसा जाई अकेला। पर रूँण समाज में छ हॅसे–खुशी। हॅसण सुकून दिछ। आत्मबल बढ़ों।

खुशी, वास्तविक खुशी प्राप्त करणॉक लिजिया ढैपूटाक खर्च करणौंकि आवश्यकता नि हुनि। थोड़ा हाथखुट हिलूँण हुनी बस। जीवन में आनन्दायक चीज करीब–करीब मुफत प्राप्त है जानी। आपण घराक आस–पास प्रकृतिक आनन्द ल्हियॉ। हमार पड़ौस में एक पंजाबि शर्माज्यू छें 65–70 क हुनाल। उ रत्तै–रत्तै पार्का में न्हे जानी वॉ बैठी रूनी या ठुल पेड़न बै अमर बेल निकालते रूनी। मिडुक, छिपकली आदि कें ले गोरेल देखते रूनी। पुछण पर बतूनी कि बहुत आनन्द आता है। दुहोर संगीत सुणें। तिहोर घराक भैराक नानतिन दगै खेलो। तुमेरि चेष्ठा देखि बेर उनन कें ले आनन्द मिलोल। चौथ घराक जानवरन दगै समय व्यतीत करो। कुकुर बिराऊ। गौं में गोर, बाछ, घ्वड़ सबनैकि सेवा कर सकन छा। पॅचू दोस्तनॉक दगे समय बिताओ। छट्ठ कोई किताब पढ़ो। सतूँ ठंडि जाग में रूँछा तो घाम में बैठी के लेखो। अठूँ प्यार करो। आपूँ आपण स्थिति अनुसार और ले कतुके काम कर सकन छा। जैमे डबल नि लागन पर आनन्द ऊँछ। मैं खुद अस्पताल में जे बेर मरीजनैकि मदद कर दिंछी।

हम लोग आपण साधरण बातचीत में ले आपण कष्ट दुःख और परेशानियूँक बात करनूँ। स्वयं दुःखी हुनूँ। दुहारन के ले दुःखी करनूँ। सुख सरसों, दुःख सुमेरू कूनू। आपण सुखनैकि बात करो, खुशिकी बात करो। तबै खुशी चारों और फैलेलि। हमार पूर्वज सुख दुःख के सम भावैल ल्हिनेर भै और वीत राग हुते हुए यकैं जीवनक नाम दिनेर भै। एक तरफ कोई मरणों। दुहार तरफ एक ब्या हुणों छ। योई संसार छ।

आपण नानछन्याक दोस्तन दगै मिलो। नानछन्याक दोस्ती निष्कपट और निष्छल हुँछ। बाद में त स्वार्थ भरीं। फिर लै दोस्तन दगुड़वन थैं मिला बहुत भल लागलो। बहुत खुशी हुँछ। तबै मैके ओल्ड बाइज वाल रियूनियन भल लागनी। फौज वाल ले रियूनियन कार्यक्रम करनी। मैं एन0सी0सी0 चौद साल कमीशंड ऑफीसर रयूँ। कतुकै रियूनियनन में जॉणेक मौक मिलो। सब बहुतै खुशिक साथ मिलनेर भे। कैप्टेन गजेघले विक्टोरिया क्रौस वाल दगै ले मुलाकात भै और ले कोई मिलेट्री क्रौस वाल, कोई वीर चक्रवाल आदि। बहुतै खुशी हुनेर भे उनन हूँ मिलि बेर। ऊ लड़ाई किस्स सुणूनैर भै। बहुत मज उनेर भै। उभत लागों दगड़ू कतुक महत्वपूर्ण हुनी। उनैरि याद ले।

उपभोक्तावादी या भोगवादी संस्कृति में लोग विलासिताक उपकरणन कें जादे महत्व दिनी। यों इन्द्रिय सुख सन्दरता, संगीत, स्वाद, सुगन्ध और यौन–क्रिड़ा दगे सम्बन्धित छें। आज सुन्दरता बढ़ूँण छूँ हजारों खर्च करणई। जब लोग प्रंशसा कराल तो खुशी प्राप्त होलि। विभिन्न प्रकाराक संगीत सुणनई। हर बखत कानम बटन लागी रूँछ। आपण आप में मस्त। चारों तरफ के हुँणो है अनभिज्ञ। जिव्हा स्वाद हूँ ले लोग कॉ कॉ जाणई। आज हर देशाक व्यन्जन हमार यॉ उपलब्ध छैं। मडुवाक र्व्वाट गूड दगै को खॉ आजकल। भैर गौन में ले लोग मैंगी, पाश्ता खॉणई। आज सैंणि मैसाक अलग–अलग इत्र सुगन्ध, नानतिनॉक लिजिया अलग। अब अखबारनौक 25 प्रतिशत भाग इन्द्रिय/सुख बढ़ूणी विज्ञापननैल भरि रूनी। आजकल यनूँ में ही सुख खोजनी। पर यो सुख यस छे जो सन्तुष्ट कभ्भै नि हुन। बल्कि भूख के और बढ़ूनी।

आज मनोवैज्ञानिक कूँणई कि यदि मैंस खुश ह्वाल तो काम भल होल। उत्पादन बढ़ौल। दफ्तर में हॅसी खुशी हो तो काम करण में आनन्द ऊछ औंर काम ले भल हुँछ। अगर तुम जस छा, जॉ छा, उमें खुश नि है सकना तो फिर आपूँ खुश नि है सकना। आज हर आदिम खुशीक वास्ते आपण आप के बदलण हूँ तैयार छ। हम सब समझनूँ कि खुशी बस अघिल मोड़ में छ। अंग्रेजि में यैथे 'जस्ट एराउन्ड द कोरनर' कूनी। पर यो 'जस्ट एराउन्ड द कोरनर' कतुक दूर हूँ मैंके बागशर में पत्त लागों। हम पॉच लोग चुनाव ड्यूटी में भयॉ। बस वालेल बागशर में उतार दि। वॉ लोगन थे पुछ फलॉ गौं कतुक दूर छ हो। उनल को पार रस्त छ, अघिल मोड़ में। जाने–जाने 2 घन्ट है गाय। रस्त में ले जो मिलो उ लें कूनैर भै ठीक जॉणेछा, अघिल मोड़ में छ। हम चार घन्ट बाद आपण स्थान में पुजा। जो अघिल मोड़ में छि।

आदिम कतुकै दुःख, कष्ट विपत्ति में हो फिर ले उमें एक आदिम एक कूँ में गिरणें वील एक कमजोर पेड़ोक फॉग पकड़ राख। कूँ में तली एक श्यॉप। ऊ फॉग के छत विमें बे शहद

टपकणें। आदिम सुख खोलि बेर शहद चाखणें। आज ले उ चित्रै कि याद कर बेर रोमांचित हुनू के कौला यथे जिजीविषा या के।

आज हमोर देश कल्याणकारी देश छ। सबुन थें सुख मिलो। यो लक्ष्य छ। दुनि में भारत सुखी देश छ। पैल बंग्लादेश भौतिक समृद्धि तक न्हेति पर सन्तोष छे। जे0 कृष्णमूर्ति कूनी उई सुखी छ जो कुछ ले न्हे। मोह न्हें, मोह दुःखी करों। धनी हुँण सुखी हुँण न्हेति। किग्स क्योर में दवाईक नाम पर एक सुखी मैसे कि कमीज पैरण छि। अफसोस सुखी मैसाक पास कमीजे नि भै। लगोटि भे, आज लै लाग छें तो तुमेरि मदद कर जाल। धन्यवाद ले नि ल्हाल। हमूल ले दुहारन वास्ते जीवित रूणोंक सोचण चैंछ। दहारनैकि ल्हियो। (म्यर यो निबंध आत्ममुग्धता, शब्द स्फीति और पिष्टपेषणेल भरि छ।)

●●●

गीत

–नन्दावल्लभ पांडे, ज्योलिकोट

पारकि धनुलि भौजी आपण मैत जैरै
घर में आपणि सासु कैं, एकलै छाड़ि जैरै
वीक स्वामी पल्टन में, कश्मीर बौडर जै रई
नानतिन वीक, पढ़ाई में मगन है रई
आजकल कश्मीर बौडर, लड़ाई लागी रै
वीक स्वामीकि, बौडर में ड्यूटी लागि रै
भूमिया थान में, हिफाजतकि मनौती माङणै
परमेश्वर थैं हात जोड़ो, विनती करनै
स्वामी लड़ाई जिती, सकुशल घर आई जाला
तो मंदिर में इष्ट देवों कैं, पुज पाती चढूला
स्वामी सकुशल घर ऐ गया, धनुलि भौजी खुश है गेछा
धनुलि भौजी मैत बटी, आपण घर ऐ गेछौ
स्वामी के सकुशल देखी, इष्ट देवों कैं धन्यवाद दिनैछौ।।

थाती–

दोहा–चौपाई

–शेर सिंह मेहता, 'कुमाउनी', पौलीशीट, काठगोदाम

चौपाई–

दण्डवत्प्रणाम उ करनाय, दयालु रघुनाथ खुशि है गाय।।
सुणिबेर बाणी प्रसन्न भाय। स्नेह बस आपणि छाति लगाय।।
भाइ समेत साथ बैठौनी। आब कुशल तुम सुणाओ कौनी।
कसिक रौछा तुम दुष्टन बीच। निर्दयी दैत्योंक करम नीच।।
नीचना बीच रौण दिन रात। भलि न्हिं लागनि तुमुकैं अनीती।।
यसि जागा प्रभु जन हो बास। इहै भौल छौ नरक वास।
कुशल सब आब दर्शन पाय। भगवानैल छाति लगाय।

दोहा–

न्हिं छ्वाड़ जैल न्हॉ कुशल, विषय भोग और काम।
लीन रौय माया मोह। न्हिं भजन श्री राम नाम।।

चोपाई–

मोह माया क्रोध और काम। इनारै बस न्हिं रौनि फाम।।
कमर तरकस, हाथ धनुष बाण। न्हिं रौनि हृदय क्वे पच्छ्याण।
चरण कमलों क दर्शन पाय। सब दुख वीक उभौते गाय।।
जभौते कृपाल भाय अनुकूल, मिटनै जानि यौं त्रिविध शूल।।
पापि रागस मैं नीच स्वभाव। न्हैं भाल करम न्हैं भलै भाव।।
जनुकैं ऋषि मुनि न्हिं जाणि पाय। प्रभुल मैं कैं छाति लगाय।।

दोहा–

ब्रह्म, शिव ध्यान करनी, मुश्किलैल दर्शन पानी।
धन्य भाग रागस कैंणी, राम ज्यू छाति लगौनी।।

अनुवाद

अच्छु ह्वै

–डॉ0 महावीर प्रसाद गैरोला

सुमन जी !
अच्छु ह्वै
जु तुम झट्ट शहीद ह्वैग्यैं,
नि खै, नि लैक
सब्बू का सामणी
यख न
पल्ल झाड़ीक चलग्यैं
नी त
फजितु भी तुमारु
यख
कम नि होंण थौ,
जनु तुमार हौर दगड़ यों कु ह्वै,
अर मुंडारु भी
तुमू क
यख की क्वांणक्या बात्तू न
भोतकै होण थौ।

भावानुवादः

अच्छा हुआ

कवि ने सामन्तशाही को बड़े नजदीक से देखा है, इसीलिये इस कविता में कवि महावीर प्रसाद गैरोला टिहरी सामन्तशाही के अत्याचारों के विरोध में 80 दिनों तक अनशन में बैठकर प्राण त्यागने वाले शहीद श्रीदेव सुमन से कहते हैं–

सुमन जी, अच्छा हुआ जो आप शीघ्र ही शहीद हो गये न खाकर, न भोग कर। सबके सम्मुख यहॉ से पल्ला झाड़ कर खाली हाथ चले गये। नहीं तो आपकी भी यहॉ बहुत बेकद्री होनी थी, जैसे तुम्हारे अन्य साथियों की हुई। आपको सिरदर्द (तनाव) भी यहॉ की निरर्थक और लज्जित करने वाली बातों से बहुत होना था।

जिन लोगों ने सामन्तशाही के विरुद्ध संघर्ष किया, जो सच्चे वीर थे उनकी दुर्दशा और जो झूठे, चापलूस तथा निम्न श्रेणी के थे उनके घटियापन से हो रही पीड़ा को कवि ने उपर्युक्त शब्दों में अभिव्यक्ति दी है।

बड़ो आनन्द ऊंछी

–वंशीधर पाठक 'जिज्ञासु', लखनऊ

कालि रात स्येति हुनी त बड़ो आनन्द ऊंछी।
कौपि किताबनै खेति हुनी त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
क्यार उगणी फौण्टीन हुनी त बड़ो आनन्द ऊंछी।
पाणिल जगणी लाल्टीन हुनी त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
स्याई का हुना गाड़–गध्यारा त बड़ो आनन्द ऊंछी।
बुद्धि में पड़िये रून छारा त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
भिदुड्डवा फैशन हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।
बागन में पिलसन हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
पात–पतेल लगड़ हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।
रबड़ का लै बगड़ हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
गरीब सब सेठ हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।
सबै रङ् कमेट हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
घरै आपण इस्कूल हुनो त बड़ो आनन्द ऊंछी।
मेजा जाग इस्टूल हूनो त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
रीस मास्टरनै फीस हुनी त बड़ो आनन्द ऊंछी।
सरसुती चार–सौ–बीस हुनी त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
पास हुणी सब फेल हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।
दफ्तर सब झेल हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।।
कानून सब गड़बड़ हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।
सबै कवि 'अनपढ़' हुना त बड़ो आनन्द ऊंछी।।

पढ़ाओ रे इस्कूला

–कृपाल सिंह शीला, सरपटा, अल्मोड़ा

पढ़ाओ रे इस्कूला ,
पठ्याओ रे इस्कूला।
गौं – गौंनु में प्राइमरी ,
तीन मैल में छैं हाईस्कूला।।
पढ़ाओ.....हाईस्कूला ।।
फ्री मजी, किताब छना ,
फ्री मजी ज्वता ।
ननु कैं वजीफ मिलाणौ,
और के चहैं आब ।।
पढ़ाओ.....हाईस्कूला ।।
फ्री मजी वर्दी मिलैणै ,
नी पड़नि फीस ।
फिल्टरक नान पाणि पीनी,
जब लागिछा तीस।।
पढ़ाओ.....हाईस्कूला ।।
नान तुमर आघिल बढ़िला,
दूर ह्वोलि बेरोजगारी ।
घर वाल सब मौज करिला,
नौकरी ह्वोलि सरकारी ।।
पढ़ाओ .....हाईस्कूला।।

कुमाउनी इंटरव्यू

–प्रस्तुति– राजेंद्र ढैला, काठगोदाम

मैं आज आपूं लोगनक् परिचय करूंण लाग रयूँ हमार वरिष्ठ सहित्यकार श्री गोविंद बल्लभ बहुगुणा ज्यू दगड़ी। जनर जनम 8 फरवरी सन् 1951 में ग्राम–बुघाण (मल्ला सालम) जनपद अल्माड़ में इजा स्व.श्रीमती जयंती बहुगुणा व बौज्यू स्व.श्री पं.टीकाराम बहुगुणा ज्यू वां भौ। इनैरी शुरुआती शिक्षा नैनीताल में संपन्न भै। यैं कुमाऊं विश्वविद्यालय बटी इनून स्नातक लै करौ। गोविंद बल्लभ बहुगुणा ज्यू शिक्षा विभाग में 41 सालैकि राजकीय सेवा करते हुए ज्येष्ठ लेखा परीक्षक पद बटी 28 फरवरी सन् 2011 में रिटायर (सेवा निवृत) भयी। प्रस्तुत छन इनन् दगै बातचीताक कुछ अंश... जनर हाल निवास छ चीनपुर,ऊँचापुल हल्द्वाणी (नैनीताल)

सवाल 1– महोदय आपुण खास शौक के–के छन?

जवाब म्यार खास शौक छन पढन–लिखण, हिंदी और कुमाउनी भाषा कें बढावा दिणा लिजी साहित्य सृजन,कवि सम्मेलन व गोष्ठियों में प्रतिभाग करण।

सवाल 2– उ तीन मन्खीनौ नाम बताओ जनूल आपूं कें प्रभावित करौ?

जवाब● शिक्षा क्षेत्र में स्व०जनार्दन जोशी, भू०पू०उप शिक्षा निदेशक कुमाऊ मंडल,नैनीताल। लेखन कें बढ़ावा दिणाक लिजी बाल प्रहरी पत्रिका संपादक ,उदय किरौला ज्यू और कुमाउनी साहित्य में लेखनाक लिजी डा०हयात सिंह रावत ज्यूल प्रेरित करौ ।

सवाल 3– आपुण लोकप्रिय मनखी को छन?

जवाब● माननीय श्री नरेन्द्र मोदी ज्यू।

सवाल 4– कुमाउनी लोकभाषा बचूण किलै जरूरी छ?

जवाब● कुमाउनी भाषा हमरि पछ्याण छ। हमरि मातृ–भाषा छू। यकें बुलाण में यस लागूं जाणि मैं आपणि इज दगड़ि बुलानयूँ। मैं कें कुमाउनी लेखते–लेखते यैक बिना पढ़ी–गुणी यतुक अभ्यास हैगो कि जब में हिंदी में लेखों तो कतु बखत आफी–आफी कुमाउनी शब्द बीच में लेखी जानी। यो महानता छू हमेरि दुदबोलि में।

सवाल 5– आपूं साहित्यकि को–को बिधा में लिखछा और आपुणि लिखणैकि मनपसंद बिधा के छ?

जवाब● मैंन सामान्य हिंदी और साहित्यिकि हिंदी द्वीनै बटी ग्रेजुएसन करौ। रस, छंद अलंकार पढंछी। कविता पढ़न में आनंद ऊँछी। यैक वील मेंकें काव्य विधा भलि लागें। मेरि पैल पसंद कविता छ, निबंध' दुसरि छू।कहांणि – उपन्यास काल्पनिक हुनी यैक वील लेखणक् मन नि करन।

सवाल 6– अगर क्वे नवोदित लेख्वार आबेर आपण लेखन कार्य में सुधार करणाक् लिजी सुझाव मांगलौ कि कौला उधैं?

जवाब● उधें योई कोंन कि पैली भाल विद्वान लेखकोंक किताब पढौ, विद्वत जनोंकि सोबत करौ। आफी जीवनाक हर क्षेत्र में जरूर सुधार आल। आपणि दुदबोलि आपण जनमभूमि–मातृ भाषा दगड़ि लगाव धरौ और आपण ईष्टक हर बखत स्मरण करते रओ। यैल जीवनकि हर क्षेत्र में निश्चित तौर पर सफलता मिलैलि।

सवाल 7– आपणि जिंदगीक एक यादगार किस्स जो सबन दगड़ी साझा करण चाँछा।

जवाब● मैंन नैनताल बै पढ़ाई करै और सरकारि सेवा शुरूआत लै नैनतालै, सचिवालय बटी सन् 1970 में करै। एकबार में सी०आर०एस०टी कॉलेज बटी छुट्टी बाद पुठ में बस्त ली बेर मली सैनिक स्कूलकि चढाइ चढ़नैछी। एक करीब 6 सालक बच्च डाड़ मारनै मली हूं बा्ट लागी भै, मैंकें उ गोंपनक जै लागौ। कां रूंछै कयत कूंण लागौ ''तिराइ कौ तिराइ'' कुनेर भै। भुक जै लै लागी भै ऊकें। मैं उकें आपण दगै घर ली गयूं। वांट खवाई। बस्त धर बेर तली हूँ लि गयूं । ऐगो त्यर घर कयत, तिराइ कौ तिराइ कुनेर भै। ली जाते ली जाते सांस हैगे आब के करछीं निधान्हैं उकें थांण में सोंपन्हं

थाण में ली गयूं। जसै थाण भतेर पुज्यों त थाण में खुशीक लहर छै गै। पुलिस वालौ कै बच्च भै उ, जो राणिखेत गों बटी कुछै टैम पैली नैनताल आई भै। पुलिस वाल खुशि हैगे। यो सन् 1967–68 की बात हुनेलि। आजकि बात जै हुनी इनाम मिलन अखबार में तबलै छपन। मेंलै खुशि है बेर घरहें नसि आई।

सवाल 8– कुमाउनी में प्रकाशित (किताबौं) रचनाओं नाम के–के छन आपुण?

जवाब● 'शिक्षादान' हिंदीकाव्य संग्रह 2008

कुमाउनी काव्य संग्रह 'काव्यांजलि' प्रकाशनाधीन तथा बिभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में समय–समय पर लेख व कविताओं क प्रकाशन।

सवाल 9– लेखन कार्य करते हुए आज तक के सम्मान और पुरस्कार मिलि रयी, सरकारै तरबै लै कभै क्वे मदद मिलै?

जवाब● हिंदी साहित्य सेवाक लिजी ''समग्रता'' शिक्षा–साहित्य कला परिषद,कटनी म०प्र० की ''भारत श्री'' मानद उपाधि अलंकरणकाल वर्ष 2008 में सम्मानित। बाल सहित्य पर बाल प्रहरी पत्रिकाक ''सृजन श्री'' सम्मान। उत्तराखंड भाषा संस्थान देहरादून बटी लोकभाषा साहित्य सृजन प्रमाण पत्र।

कुमाउनी भाषा साहित्य एवं संसति प्रसार समिति कसार देवी अल्मोड़ा द्वारा कुमाउनी भाषा सेवी सम्मान 2014. राष्ट्रीय सर्व शिक्षा अभियान कें सहित्यिक विधा द्वारा सफल बणोंना लिजी शिक्षा विभाग द्वारा प्रशस्तिपत्र।

सवाल 10– आपुण जिंदगी क मूल मंत्र कि छ?

जवाब● सत्यमेव जयते।

सवाल 11– पहाड़ी खाणु में आपूं के खा्ण भल मानछा?

जवाब● घौतक रस भात और घ्यूं चुपड़ी बेडू र्वाट (रूटौव)।

सवाल 12– आपुण मनपसंद कुमाउनी लेख्वार को छी और वर्तमान में को छन?

जवाब● पुराणन् में शिक्षाविद प्रधानाचार्य स्वर्गीय चारु चंद्र पांडे ज्यू और वर्तमान में प्रो० शेर सिंह बिष्ट ज्यू सेवा निवृत हिंदी विभागाध्यक्ष कुमाऊं विश्वविद्यालय शोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा।

सवाल 13– टीवी. में के देखण भल लगौं?

जवाब● रामायण सीरियल पैल पसंद छू। बांकी समाचार भै। काल्पनिक नाटक,सीरियल मारधाड़ भल नि लागन।

सवाल14– आपण शब्दों में साहित्यकि परिभाषा बताओ?

जवाब● यो त भौत कठिन प्रश्न ऐगो

साहित्य समाजक ऐन हूं। समाजकि भावाभिव्यक्ति कें लेखबेर या बुलै बेर प्रकट करन साहित्य भै म्यार ख्याल।

सवाल15– आब् जबकि आपूं सेवा निवृत (रिटायर) है गहा तो आपुणि दिनचर्या कसी बितैं के–के करछा आपूं?

जवाब● मैं अच्यालों कोरोना काल कें छोड़ि बेर रोज रत्तै पांच बाजी उठूं। एक गिलास गरम पाणि पीबेर पांच कि०मी० टहलों। घर ऐ बेर चाड़न कें दांण द्यों। नै–ध्वेबेर पुज में बैठूँ तब हल्की कसरत करों।

फिर नास्ताक बाद अखबार पढ़ूं। यसिक हें दिनकि शुरूआत।

अच्यालों समयानुसार दिनचर्या में एक नई आयाम जुड़िगो। रत्तै मोबाइल में मैसेज चौक करनक। भौत भल लागूँ आपणनकि कुशल बात जाणन और वटसफ में दुहारनकें मैसेज भेजण।

आखिरी सवाल

सवाल16– कुमाउनी बोली–भाषा प्रेमीन हूँ के संदेश छ?

जवाब● कुमाउनी बोली–भाषा प्रेमीन धैं योई कूंण चां कि कुमाउनी कें संविधानकि अठूं अनुसूचि में धरणाक लिजी आब जी ज्यानल ठाड़ है जाओ।

सवाल– क्वे यसि बात जो आपण तरबै कूंण चांछा?

जवाब● उ युवा नयी पीढी धैं कूंण चां जो कुमाउनी बुलाण में शरम करनै कि भई आपणि भाषा कुमाउनी में खुलि बेर बात करो झिझक के बातकि? अगर हम कुमाउनी में आपसम बातचीत करुंल तो समझो कि हम आपण पितरों,आपण मैं बाबूंक सम्मान करनयां। तुम ब्या काजों में कुमाउनी गीतों धुन में खूब नाच लै करछा पर आपण घर भितेर और दोस्तन दगड़ी कुमाउनी बुलाण में किलै शरमाछा?

झिझक छोड़ो
कुमाउनी दगै जुड़ो।
धन्यवाद।

कुमगढ़ में लेखौ कुमगढ़ में लेखाओ
कुमगढ़ बॉचौ और औरन कैंलै बॉचाओ।।

रत्ते क भुली ब्याल घर पूजनयी

—ज्योतिर्मई पंत, गुरूग्राम (हरियाणा)

आज पच्चीस साल बाद नान दा आपुन घर वापस पुज गे ,एकदम शहरी ठाठ वाल ,सब मिलण हुँ ऐ। मन में संकोच ल्हि बेर .पैली ले एक द्वी बेर जब उ गौं अ ईं तो ककैं मुख्य नि लागु नेर भै ,सब लोग गँवार अनपढ़े जस भै उनार लिजी, सिद साद नान्तिनान क ले उपहास करि बेर रुलै दि नर भै र भै । उनार जाइ बाद घरवाल सबन थें माफी मांग ल्हि नेर भै ,आपुन घर में ले सब कामन में रोक टोक 'नै नै ईजा !' तौ दूद की मलाई हथैल किले नि कालन छी , तौ बोज्यू तो सब नान्तिनान के हाथै ल दाल भात ख ऊ नें। कतू धूल मात है रौ सब जाग?

वीक नखार देखि सबै हैरान ! किले तू ले यासीके ठुल। किले सब भूल गोछे ?आपुन जड़न कैं छोड़ी बेर कोई नई पनपन चेला ! ?

पर आज तो औरी बात देखि रै। सबै कोरोना वील दूर दूर ठाड़ है बेर बात करनीं पर आज सबन दगड़ मिल बेर खुशी देखिनों ,ब और तो और आपुनि भाष में बलान सुणी बेर, देखि सबै अचंभित छन , फिर जब शहर शहर गांव गांव में यो कोरोना बीमारी हाल बतै और कसिक वीकी फैक्ट्री ले बंद हेगे .मजदूर घर लौट गे , और जसिक तासिक तीन चार महीन तो कटिगे। पर अघिल के हॉल के निश्चित नी है सक तब उकैं आपुन इज बाबू भै बैनी याद ऐगे।

इज कुनेर भै चेला ! जसिक सब परवर याँ छू तू ले रौले . शहर कतुके भल हो पर आपुन तो क्वे नि हुनेर भाय । दुःख सुख में आपुणें काम ऊनि याँ ले तू के काम करि सकें छे पर तू नि मान ने पै के करूँ मैं यपर जब ले मन हो लो आई जायै। हम आस लगे राखुल तेरी वापसी कि। अब लॉक डाउन में छूट मिलते ही वापस ऐ गे आपुन घरवाली और च्योल दगड। इज बाबू तो खुशी मारी अलबले गयीं और आम तो भौते खुशी हैरै। कूँण लगी हे इष्ट देवो ! सन्मति दे त्वील आज।

और यो कोरोना जै ले छू जस ले छू रे।

ओ कोरोना तू कतु के ले विनाशकारी है बेर ऐ रोछे .पर त्वील सबै मनखीन कें भल सबक सीखे दे। मान ,सम्मान,सद्भावना और संवेदना क पाठ फिर से याद दिल दे ,धन दौलत , लोभ लालच ले कभते व्यर्थ जस है जां, रत्ते भुली ब्याल घरपुज गयीं। तेर ले धन्यवाद।

2—घर वापसी

आज खिमुलि दिदि भौत सालन बाद आपुण गौं में पुजी। घरै क तरफ चढ़ाई शुरू कर छी कि कतुके नानतिन ऐगे " आमा ! काँ जांण छू ?यो सामान दियो हम पूजे दिनु।"

खिमुलि इथकें उथकें चाण लागि। यो आम कथें कूँ ण लाग रईं। फिर आ फी हँसण लागि। ओहो ! मैं तो अब बूढ़ी है गयुं। अब क तु क बखत हैगे जब याँ बचपन बिता।खिमुली—खिमुली दिदि तक। फिर ब्या बाद सरास में कतुके रिस्त कतू के नाम .भैर वालन हूँ आंटी।

घर पूजी बेर वील उ नान्तिनान के धन्यवाद कौ। फिर आपुनि बोज्यू थें के बेर उनू केन चाहा पाणी पिवै. बेर विदा करो। पर वीक मन में आई लै "आमा"सम्बोधन घूमने रो। अब आपु हूँ "आमा आमा "सुनि बेर तो बहुते आश्चर्य हैगे ...खिमुलि बै आमा हुण तक यो उमरक सफर याद करते ही उ कें आपुण बचपन सिनेमाक रील जैस घूमी गे। पुराण जमान में घर गौं में आमक पदवी कतु सम्मान वाली हुनेर भै। घर—द्वार,अड़ोस— पड़ोस कैके के काम काज हो , हारी बीमारी हो ,.के ले परेशानी हो तो पैली आ मक सलाह चौनेर भै। घरेलु इलाज हो ,पूज पाठ हो ,सब जानकारी, गीत संगीत ,कर्मकांड सब आमै बतु नेर भै .आमतौर पर आपस में जो ले मतभेद हो। कहा सुनी है जौ ,पर आम जे ले सलाह देली या फैसला करली। तो सब स्वीकार कर लिछी। किलैकि उ बुजुर्ग और अनुभव वाली हुनेर भै। सबै नानतिन ले आम दगड़ सब बात कर नेर भै। आपुन इज बाबूक शिकायत ले निसंकोच कई दिनेर भै। काथ कहानि क आण नक् खजान ले आमे हुँछि। कोई ले आम सबनकि है जाछी। "जगत आम" है जानेर भै।

गौन में शायद आजि ले यो परंपरा जिंदा हुनली तबै यो अनजान नानतिन खिमुली थें आम बुले बेर मदद हूँ ऐगे।

शहरन में तो बाते और हैगे। आस पड़ोस तो छोडो घर में ले दादी नानी तो अब विलुप्त प्राणी जस हुण लग रई.घर में या तो बेकार सामान जस परिस्थिति ,या घरक काम में मदद गार। च्यल ब्यारिनाक अधीन। अधिकतर आम बड़बाज्यू लोग तो उ म रक अंतिम पड़ाव में .वृद्धाश्रम में जिंदगी काटण हुँ मजबूर छन। खिमुलि तो कुछ समयक लिजी ऐ रैछी। आज नान तिनक संस्कार और गौ वाल नक् प्यार देखि वील याँ रूणक मन बणे हालो।

●●●

कुमगढ़ में लेखी विचार लेखकों क आपण विचार छन। इनूँ पर संपादक मण्डलक सहमत हुंण जरूरी न्हैं।

—संपादक

बखता तेरि बलाई हैगे

–प्रेमा गड़कोटी, अल्मोड़ा

मैसक् करम मैसक ख्वार हैगे
मनखि मनखिकैं देखि डर हैगे
मुख लुकायि फिरणौ कां दिखां
कसि यौहायि तवायि हैगे रे
बखता तेरि बलायि हैगे रे।
कस ज खानु कतु जै खानु हैरैछि
आपुण है पैलि त्यर जै खानु हैरैछि
तू जाछैं मैं जै जानु हैरेछि
हाय कसिका आब खानु हैगे रे
बखता तेरि बलायि हैगे रे।
एक दुहरैकि दुस्मण है गेछि
तु नान् मैं ठुल में रै गैछि
निगुरि मायिक् पछिल पड़ रैछि
आफि आपुण निभुगतैणि हैगे रे
बखता तेरि बलायि हैगे रे।
कुडि बाडि खौनार कर गैछि
दार पतार सब बेचि खैहैछि
ढुंग पाथर उचेडि खै गैछि
घुनमुन टेकने घर लौटि पडि रे
बखता तेरि बलायि हैगे रे।
अधेयि गिरवी जैदाद छुट्याण फैगो
बाजि पडि गडा में हौव जै पड़न फैगो
परदेस जायि च्यल आब लौटि ऐ गो
पहाडा शैद त्यर दिन ऐगि रै।
बखता तेरि बलायि हैगे रे।

गीत

–एम0एन0 गौड़ 'चन्द्रा', सत्ती चौड़, कोटद्वार

मैं डाना रूनै रयूँ, मैं काना रूनै रयूँ।
इकली पराणी ल्ही कां कां नि गयूँ।।
झुर–झुर झुरि रै, यो मेरि काया,
कैल बॅणै ह्वेलि रे यो मेरि माया,
नक दिन ऊॅनी यो लै सुणि छी हौ
आपणीं नि हुॅनी, आपणी छाया।
सोचनै सोचनै टूटो मन को धीर।
रात का सुपीन ल्ही मैं बैठि रयूं।।
मन की नि थामिनि पॉणि लै तीस,
उमर छौ लम्बी नै दिन दस बीस,
भाग को फेर, यसौ होलो मेरो,
विधाता दगड़ि, किलै फेडुं रीस।
कैं कैणी दोष किलै भागी.....दीण।
तुकैं जै य दोष किलै मै दिनयूँ।।
कभै लै नि करणि झुठि रे प्रीत,
झूठी हि छना यो दुणिया की रीत,
मतलबी हुॅनी यॉ अपण विराण
सुद्दै नि करणी, कैकि परतीत,
आपणी सांस अब है ग्ये छ.....भारी।
आपणो हि दोष, आफि हि मैं खैयूं।।
क्या मैं हु बरंखा, क्या मैं हुॅ घाम,
रत्तै ब्यांव छौ मेरो रूॅणो को काम,
सुख नी मिलो त, दुखत मिल लै,
आपण हि हात्ते लै मिटै हॉलुॅ नाम,
माया कि नी खॉणि कभि झुठी सौंऊॅ।
पाथर की रेख जै मैं लेखि गयूँ।।

पच्छांण

— डॉ0 सत्यानन्द बडोनी, देहरादून

छ्वी बिंजा पुराणि छः। एक रजा थौ, जु एक दिन अपणा बजीर, नौकर अर शिकारी कुत्ता लितैं शिकार खेन्न एक घनघोर बण मा चलगि। बण मा फिरफारड़ि अर ढंणकि–ढांणकिक ऊं तैं कखि बि क्वी शिकार नि मिलि सकि। ऊं तीनि बण मा भटकीदि रैन पर कुछ कत्त नि मिलि ऊंतैं। रजा खौळै सि गै।

ऊ बण मा भटकण पर हि था लग्या कि तबर्यौं एक मृग बि मौति मार्युं भटकूदु–भटकूदु ऊनै ऐगि जथैं ऊ तीनि था। कुत्ता मृगा पीछाड़ि दनकीदि–2 कै दूर तलै चलगि। जख एक छप्पर थौ। छप्पर मा एक काणू जोगी बैठ्यूं थौ। कांणा जोगी जाणिक छप्पर का चारि तरफ घुमि तैं तीन पैर धरणी धरै एक पैर आगास, बिना द्यौरौ कु बरखा करे धन हो महाराज, कुत्ता अग्वाड़ि चलगि। वैन सोचि कांणा जोगी तैं मृगा बारा मा पूछिक क्वी फैदा नि छः।

बिंजा देर ह्वैगि कुत्ता बौड़िक नि ऐ तऽ नौकर कुत्ता का खोज मा बण जथैं चलगि। जान्दी दां बाटा मा नौकर तैं बि वीई छप्पर दीखेगि जख काणू जोगी बैठ्यूं थौ। रजौ कु नौकर जु थौ, वैन छप्पर मा जै तैं बड़ी तड़ि मा जोगी तैं पूछि कि '' अबै हो काणा जोगी त्वैन इनै एक कुत्ता जान्दु बि देखि'' नौकरै बात सुणि जोगी तैं गुस्सा तऽ बिंजा आयी पर ! जूंरा देखिक काल डरू वाळि बात थै। जोगी नौकरै कि बात कन्न सि चितैगि थौ कि यु कै रजा कु नौकर ह्वै सकदु। इन बात एक नौकर हि करि सकदु। वैन नौकरै बात नि गणांई अर नऽ क्वी हुंगारू भरि। नौकरा नाक मा जख्या तिड़गिं। पर! करदु क्य। ऊ बि अग्वाड़ि कुत्ता का खोज मा चलगि।

कुत्ता अर नौकर जब बिंजा देर बीटि उण्ड नि आईन तऽ बजीर तैं चिन्ता ह्वैगि कि यी आखिर मा गै तऽ गै कख छन। ऊ बि रजा तैं पूछिक ऊं द्वीयों तैं खोजण चलगि। चलदि–2 बजीर बि घनघोर बण मा चलगि। कखि क्वी नि मिलि। बजीर जी परेशान। बजीर जी अग्वाड़ि चल्दु रैन अर ऊंतैं बि वख वीई एक छप्पर दिखेगि। जख ऊ काणु जोगी विराजमान थौ। मंत्रीजीऽन जोगी तैं प्रणाम करि अर बड़ा विनयभाव सि पूछि कि ''साधु महाराज जी आपन इनै एक कुत्ता अर एक आदमी बि जान्दु देखिन ?'' जोगिऽन ऊनै अपणि धौण हलैक हाथन इशारू करि कि, ऊंथै गैन। बजीर जी बि ऊंका खोज मा अग्वाड़ि चलगिन।

अब तीनि गोळ। रजा ऐखलि छुटगि। घणु बण दोफरौ कु घाम, तीसन गळु उबैगि। रजा का कंठ सुखगिन। घाम, पाणि, दुःख बिमारी अर समै कै तैं नि देखदु। वखमा क्वी रजा हो या रंक। तन बि रजा, कोगळा शरील कु। पर रजै नाकै बात थै। आखिर मा रजा बि ऊं तीन्यौं तैं खोजण तैं बण मा चलगि। भटकि–भाटकिक घणा बण मा चलगि। संजोग सि वख वै तैं बि वीई छप्पर मिलगि,जख जोगी सूरदास जी था बैठ्यां।

रजा खांसी–बासी अर छप्पर मा चलगि। जोगी बाबा तैं बड़ा आदर सि प्रणाम करि। बड़ा आदरभाव सि कांणू जोगी बाबा पूछि '' महाराज आपन इनै क्वी जान्दु बि देखिन ?कृपा करिक बतै द्या।''

जोगिऽन रजा तैं जबाब दीतैं बोलि '' जी हां अन्नदाता। '' रजा असमंजस मा पड़कि कि जोगी तऽ अंधु छः अर ऐन कन कैक पछ्याण्यौ मैं, कि मैं रजा छौ।

जोगिऽन बोलि '' अन्नदाता! एक मृग इथैं बीटि दनकि पर! मृग का पोटका मा बच्चा थौ सैत मा। आपौ नौकर अर मंत्री जी मृग का बाना इथैं गैन। अब अन्नदाता आप अफि यख ऐन तऽ तब बतौणु छौ, नितर मैं जोगी कु कैन क्य कन्न।

जोगी कुछ हौर बोल्दु तऽ इथा मा रजा लगदा–बगदि करिक अग्वाड़ि चलगि। जथै जोगिऽन रजा सनकाई थौ.....। रजा जै बि नि थौ कि ऊ क्य देखदु कि तबर्यौं ऊं तिन्यौन मृग खोजी तैं मार्यालि थौ। रजा जोर सि भट्याई '' ठैर जा रे पैलि। पैलि तुम ऐ मृगै गेर फाड़ा।'' किलै कि वे तै जोगी बात याद थैं। मृगै गेर फाड़ि तऽ ह्वै वीई छः जु जोगिऽन बोलि थौ। मृगै गेर पर एक बच्चा थौ। रजा एक दां तऽ हकभक्क..... । रजा का ज्ञानचक्षु खुलगिन कि आखिर मा जोगी तैं कनै पता थौ कि.....। जोगी जरूर क्वी ज्ञानी पुरूश छः। यांसि पैलि जोगी बाबऽन कुत्ता, नौकर अर मंत्री का बारा मा बतै यालि थौं कि ऊ क्य छन।

रजा सुरकि–सुरकि ऊं तिन्यों तैं छोड़ि काणा जोगी बाबा मा चलगि। जोगी बाबा चितैगि कि रजा फिर किलै आयी। रजऽन जोगी बाबा सि बोलि कि'' बाबा! आपसि कुछ सवाल कन्न था जु तुमारि आज्ञा हो तऽ । '' जोगी बाबऽन मूण्ड हलैक मंजूरी दीलि अर दगड़ा–2 रजा तैं भ्वां बैठणा खातिर सनकैक बोलि।

रजा एक याचकै तरौं जन बाकि मा बाक बुलौण जायूं हो। रजऽन जोगी बाबा सि बोलि कि ''बाबा आपन हम तैं बिना आंखौं ह्वै तैं कन्नै पछांणि? मेरा मन मा आपकु सम्मान बढणु छः। कृपा करिक बता कि आपन बिना ऑखौ ह्वैतैं इन कनै

जाणि कि कु क्य छः। कन छः।''

जोगी महाराजऽन बोलि कि '' अन्नदाता! मृग इनकैक पछांणि कि ऊ डर्यू–डर्यू सि थौ लगणु। मृगै कि दनकदि दां थुम्मक–2 सि अवाज थै औणि। मैंन चितैलि कि मृगा का पोटका मा बच्चा छः। कुत्ता मैंन यान पंछाणि कि ऊ मेरि झोपड़ी का चारि तरफ घुमि अर फुण्ड चलगि। मैंन चितैलि कि यू कै रजौ कु शिकारी कुत्ता छः। नौकर मैंन यान पछांणि कि वैन बिना सोचि समझिक मैं सनै कांणा समझिक निरादर भाव सि भट्याई कि ओ काणा जोगी त्वैन इनै क्वी जान्दु बि देखि। मैं चितै ग्यौं कि यू कै रजौ कु नौकर ह्वै सकृदु। मंत्री जी यान पछांणिन कि ऊन विनम्र भाव सि बोलि कि हे साधु महाराज तुमुन इनै क्वी जान्दु बि देखि। इन एक छोटु आदमी नि एक मंत्री हि बोलि सक्दु।'' रजा छक्क खुश ह्वै अर जोगी कि बात सि खितखित हंसण लैगि।

रजऽन अचाणचक बोलि ''अर मैं तैं''। जोगी धर्मसंकट मा । रजा जु ह्वै। समझ मा नि आलु सर कलम करि देलु। पर जोगी तऽ जोगी ह्वै। वैन बोलि कि '' अन्नदाता ! आपै विनम्र मधुरवाणी अर आदेश का समान बोन्न सि मैं तैं पता चलगि थौ कि आप क्वी जना कना आदमी नि ह्वै सक्दन। इन बात एक रजा ही करि सक्दु'' जोगी बात सुणिं तैं रजा बडु प्रभावित ह्वै अर जोगी बाबा का खुठौं मा लमसठ ह्वै तैं याचना कन्न लगि कि महाराज आप यीं कुटिया तैं छोड़ि मेरा रजवाड़ा मा चला तख आपै नौकर–चाकर खूब सेवा–टौळ करला। मैं बि कबि कबार आपै सेवा करलु। आप आज्ञा द्या'' जोगी बाबऽन आग्रै खातिर हुंगारू भरलि। जोगीन बोलि कि मेरि एक शर्त छः। मैंन एक दां मा छः छटांग खाणौ खाण। शर्त मंजूर छः तऽ, तऽन बोला।'' रजा एक दां तऽ इन शर्त सुणि चकरै सि गै। पर रजऽन धौण ढगडेक शर्त मान्यालि अर बड़ा मान सम्मान सि जोगी तैं रजवाड़ा मा लैगि।

रसौया तैं बुलैक रजऽन बोलि कि '' जोगी बाबा तैं सदानि छः छटांग राशन गाड़िक खाणौं बणैक खलौण छः। यखमा क्वी कमि नि होयीं चैन्दी। रजौ हुक्म थौ तऽ, क्य मजाल कि छः छटांग सि एक रति बि कम ह्वै जाऊ।

सदानि जोगी बाबा तैं छः छंटाग का हिसाब सि खाणौ बंण लगि। इन–2 करिक बिंजा दिन बितगिन। एक दिन रजा जोगी मा आयी अर बोन्न लगि कि '' हे महाराज हैका रियासत मा एक रजै कि एक नौनी छः जु बड़ि स्वांणि छः। वीं तैं मैं प्यार करदौ। वा बराबर मैं तैं चिट्ठी–पत्री देणि रन्दी। मन करदु कि वींसि ब्यौ करौ कि नि करौं। कृपा करिक आप वीं तैं देखिक आवा कि वा कन्न छः।''

अन्नदाता वीं नौनि तैं देखण तैं कै ऑखौं वाळा तैं भेजा दौं, मैं काणा आदमी तैं किलै भेजणा ?'' जोगिऽन हाथ जोड़िक बोलि। रजऽन बोलि कि '' मैं तैं आप पर पक्कु विश्वास छः कि ये काम आप हि करि सक्दन।;; इथा बोलिक रजऽन जोगी बाबा दगड़ि एक नौकर अर नौनि तैं एक प्रेम पत्र दी तैं वे रजा का यख भेज्यालिन।

जोगी बाबा अर नौकर वे रजा का रजवाड़ा मा जै तैं अपणा रजौ कु दीन्यू प्रेम पत्र वीं नौनी तैं दियालि। कुजाणि चिट्टी मा क्य थौ लिख्युं। वींन ऊं द्वीयौं कि सेवा–ठौळ का खातिर कै नौकर चाकर रखिक खूब इंतजाम कर्यालि।

''जोगी बाबा निपट काणा छन'' एक घड़ी नौनी भर्मै सि गै कि आखिर मा रजऽन इन जोगी किलै भेजि होला। नौनी सोचण हि थै लगि कि तबर्यौं जोगिऽन बोलि ''कन्या तू खै–पीकै मेरा कक्ष मा बैठण ऐ जै। त्वैसि मैंन क्वी खास बातचित कन्न।'' नौनी धौंण ढगडेग फुण्ड अपणा कमरा मा चलगि।

घड़ैक मा राजकुमारी वे कमरा मा ऐगि जख जोगी थौ सेयूँ। द्वार ठखटेन अर बिना झिझकिक जोगी का कमरा चलगि। जोगिऽन बोलि '' ऐगि बेटी '' राजकुमारिऽन बोलि ''जी बाबा'।'' जोगिऽन बोलि '' बेटी द्वार लगै दी, बथौं औणु छः। '' वीन द्वार लगै यालिन। जोगिऽन फिर बोलि बथौ सि छः औणु त्वैन क्य छः पैर्यूं ? ''रातै पौशाक'' राजकुमारिऽन बोलि। ''मेरा ऑखा झिलमिलाण छन लग्यां, उजाळु बन्द करदि'' राजकुमारिऽन झटकैक उजाळु बंद कर्यालि। जोगिऽन बोलि ''बेटी तू आज्ञाकारी लगणिं छः, हंसमुख बि लगणि छः तू। ''अब तू जै सक्दि '' जोगिऽन बोलि। राजकुमारी अपणा मन मा बोनि कि जोगी बि क्य सनक्या छः। वा कमर मटकैक अपणा कमरा मा चलगि।

रात खुलि, जोगी नौकर दगड़ि वापस मैल मा ऐगि। रजा तैं तऽ रगर्याठ थौ लग्यूं कि कब जोगी बाबा आलु अर कब कानि सुणालु। रजऽन कतामति सि जोगी पूछि कि ''महाराज मेरि पसंद कन्न लगि ?'' राजकुमारी सुन्दर स्वॉणि, गुणि, आज्ञाकारी छः पर ! .....।'' इथा बोलिक जोगी नैनसुट ह्वैगि। ''महाराज साफ करिक बोला दौं'' रजा एक याचकै तरौ बोन्न लगि।

जोगिऽन बोलि ''अन्नदाता सच्च बडु कडु होन्दु ,ऐ तैं जना–कना पचै नि सक्दन। ''रजऽन फिर बोलि ''बाबा मैं एक रजा छौ, तुम बता'' ठीक छः अन्नदाता आपौ हुक्म सर ऑखौं पर ''महाराज आप जोर देण हि लग्यां छन तऽ बतै हि देन्दौं। वा राजकुमारी कै वैश्य कि दूधै चितेणि छः। मेरू विश्वास नि होणु तऽ कै हौर सि जांच–पड़ताळ करै सक्दन आप। ''

रजा एक घड़ी सुन्नपट ह्वैगि। आखिर मा रजऽन सोचि कि बिना मर्या स्वर्ग नि होन्दन, अर वेश बदलिक अफि वीं राजधानी मा पौंछगि जख राजकुमारी थै। राजधानी मा जै तैं रजा तैं एक बूढया जी मिलगिन। रजऽन ऊंका धोरा बैठीक सेवा–सौळि लगै अर घौर–बौंण कि राजि–खुशि पूछि तैं इनै–ऊनै कि छ्वी लगैक हबरि–2 बोलि ''बड़ा जी! यखा रजै कि कति राणी छन ? बुढ्या जीन बोलि बेटा तऽन छैंछ बि छः अर

ना बि। ''मतलब'' रजऽन बात काटिक बोलि। बुढ्या जीन बोलि '' एक दां रजा वेश्यालै बीटि एक नौनी तैं मोहवश दरवार मा लैगि था अर आखिर मा वा अपणि राणी बणैलि। देखण दर्शनै खूब थै। गुणत्याळि बि थै। रजा जु था। अफि मालिक, अफि सब कुछ। प्यार होन्दु हि अंधु छः। आज रजै कि वीं वैश्य सि एक ज्वान नौनी छः। जु कै स्वर्गै परी सि कम नि छः। अचक्यालु एक रजा वींका धक्कौ पड्युं छः बल। बात सच्चि हो या झूट, मैं नि जाण्दौं..... । तऽन बि बिना फूक्यां कुतराण नि औन्दी।''

खैर रजा छ्वी–बात लगै तैं फुण्ड चलगि। रजऽन मन हि मन सोचि आखिर जोगी मा इन क्य बात छः। सोला आन्ना भर सै होणि छः ऊंकि बात।

रजा मैल मा आयी अर जोगी मा जै तैं बोलि ''बाबा! आपतैं कनै पता कि वा नौनी एक वैश्या कि नौनी छः ? जोगिन बोलि' कि अन्नदाता जब वा आज्ञा सि मेरा कमरा मा आयी अर जन मैंन वींतैं बोलि तनि वीन करि। वीन बिना लोकलाज अर बिना ठिठकिक मेरू बोल्यु मानि यालि। एक ज्वान नौनी कै अपछांण मणस्यारू का कमरा मा कनै जै सक्दि। हमारा पुराण अर बड़ा–बुढ्या बतौन्दन कि ज्वान नौनी–नौनौं कु बै–बुबौं अर भाई–बैणौं दगड़ि ऐखलि सेणु अर रंणु वर्जित छः। हमारा पूर्वज था हि इन बड़ा समझदार। जब कबि इन क्वी नखरि घटना घटि होलि तऽ तबि तऽ ऊंन इन बोलि। इलै मैंन चितैलि कि इन बात एक वैश्य हि करि सक्दि।

इन सुणिक रजा बड्डु खुश ह्वै अर पुळकिक बोलि कि '' साधुबाबा मैं कन्न छौं ?'' जोगिऽन बोलि '' अन्नदाता आप इथा बड़ा रजा छन।'' जोगिऽन सोचि अब तऽ मरग्यौं, बोल्दौं तऽ तब बि अर नि बोल्दौं तब बि घौण कटैण हि छः। कन स्यामत आई मेरि।

रजा चितैगि कि जोगी डरगि। रजऽन बोलि ''बाबा क्य सोचणा, झट करिक बता।'' ''मैं तऽ चितौणु कि आप बि कै बण्यां कि सन्तान छन।'' रजा तैं एक दां तऽ गुस्सा बींजा आई, पर गुस्सा पी तैं रजऽन बोलि '' तुम इन कन्नै बोलि सक्दन ?''

जोगिऽन निडर ह्वै तैं बोलि' ''आप राजमाता तैं पूछि सक्दन सच्च कु सच्च अर झूट कु झूट कु पता अफि चलि जालु। बोल्दा छन कि माता जाणु पिता अर कृश्ण जाणु गीता'' या बात रजा तैं तिमला फूल्यां सि थै लगणि। वे तैं अति गुस्सा ऐगि, गुस्सा का मारा वेका ऑखा लाल–भिताळ ह्वैगिन। वैन अपणि तलवार गाडि अर अपणि बै राजमाता मा गै, अर डूकरताळ मारिक बोलि ''बै मैं तेरि बड़ि इज्जत कर्दौ, बै छः तू मेरि, त्वै तैं मेरा सौं, तू सच्च बतौ, मैं कैकी औलाद छौं ? एक घड़ी राजमाता खौळेगि कि ये तैं आज इन क्य ह्वैगि। भर्मै यालि कै मास्तन। राजमातऽन बोलि ''मेरा रजा बेटा आज इन क्य ह्वैगि त्वै तैं ?'' वेन बोलि बतौन्दी कि ना, नितर आज तेरि धौंण गिन्डारदौं। '' राजमाता भलि करिक जांणदि थै कि रजा तऽ सनक्या होन्दन, यी क्य करद्यौन क्वी पता नि। ऐ मास्त तैं सच्च बतौण हि पड्लु। वीन ऑखी झुकैक बोलि कि ''भौत पैलि कि बात छः, एक दां कबि हम घुमण जांदा था, वखि दुकान पर एक बण्या सि मुलाकात ह्वैगि अर मैं तैं वेसि प्यार ह्वैगि। तू वेकु हि नौन्याळ छः।''

रजा खौळैगि। मॉ थै, क्य करि सक्दु थौ। रजा करौ कि बात, तन बि राणी अर पाणि तैं कु ध्वै सकि। दांतु अग्वाड़ि जीभ नि ऐ सक्दि। रजा आखिर मा जोगी मा गै अर बोलि '' साधु बाबा आपै बात सोला आन्ना भर सै छः। पर आपन इन कनै जाणि ?''

जोगिन बोलि ''अन्नदाता! मैंन दरवार मा औन्दी दां हि कखि कोणा मा एक तराजू लगै यालि थौ। किलै कि बिना तराजू रण पर कम होण पर हौर मंगै सक्दु थौ। बिंजा होन्दु तऽ कुत्ता–बिराळौ तैं खलै देन्दु। पर ! आप तऽ ठीक नापि– तोलिक राशन देन्दा रैन। इन बात एक बणिया हि करि सक्दु। इलै मैंन चितैलि कि आप कै बण्यां कि सन्तान छन। महाराज आप अन्नदाता छन, आपै आज्ञानुसार मैंन जु बोलि सच्च छ। मेरू बोन्नौं कु मतलब यू छः कि आदमी कि पच्छांण वेकि बातचित, बोन्न–चान्न, रणू–खाणू, उठण–बैठण अर चन्न सि पता चलि जांदु। आपौ व्यूहार हि आपै पच्छांण छः। आदमी बातचीत सि हि पच्छांणै जान्दु कि ऊ क्य अर कन्न छः। यांक तऽ बोल्दन कि व्यूहार हि आपौ परिचै छः।

●●●

काथ–क्वीड़–

अरड़ कानि

–शेखर जोशी, इन्दिरा नगर (लखनऊ)

नानि ज्यू कैं बनैन बुणनक भौत सीप छ. उसिक ऊं सिपालि सब्बै चीजन में भईन. ऐपण दिण कऔ, सिंघल पकूण कोऔ, बड़ि हालण कोऔ, रंग्वालि करण कऔ, ढलुक बजूण कऔ...

बेलि मैंल देखौ, ऊं एक पुरबौंव बनैन कें उधड़नैछन. मैंल पुछौ– 'त नई बनैन कें किलै उधाड़नाछा? त तो तुमैल पोरि बेरै ब्वारि हुं बुणौ.'

नानि ज्यू बलाणी– 'आब रत्तै–ब्याल जाड़ हुंण लागि गो. वी बखत वीक दफ्तर ऊंण–जांण हुं. ठण्डलि लकड़ी जैं. पै बनैन नि पैरनि कूंछ. आब अरड़ि कानि (कोल्ड–शोल्डर) वाल बनैन पैरणक फैशन छ. सारि लाल बजार, ठाड़ि बजार छानि बेर ऐगे. पै कैं नि मिल बल. आब यैक बौंवन कानि बै उधेड़ि बेर द्वियै तरफ चड़ाक जस घोल बणैं द्यूलो धैं तब पैरंछ मुढरि.'

ढेपु कमूणि ब्वारि भै. वीक चौल करणें पड़नेर भै. ?

सिमरन की संवेदना

–अश्विनी गौड़, दानकोट रूद्रप्रयाग

नौं –सिमरन
पिताजी– वीर सिंह रावत
माताजी –सुनीता देवी
गौं –रिंगेड, बैनोली जनपद रूद्रप्रयाग
उमर–चौबीस बसंत
पढै– हाइस्कूल अर अगने भी जारी
समाज तै रैबार – नशा मुक्त रा स्वस्थ रा।

सिमरन एक यन बालिका जु शारिरिक अस्वस्थ
ह्वोण का बाद भी कलम किताब से भौत गैरी दगडि कर्दि।
तमाम कोशिश कना बाद भी शरीर स्वास्थ्य मा खास सुधार नी च सामान्य बच्चों चार हिटण घूमण मा दिक्कत च।
सिमरन फिर भी हिम्मत नि हारी अर जीवन की जीवटता का कांडा–मूंडा छंट्ये तै कविता कहानी लिखण पर लगी च।
माँ सरस्वती कि भी यन पा च कि सिमरन की कहानी कविता मा संवेदना रळी–मिली च।
कहानी लिखण पढण मा ––'मैं नीर भरी दुख की बदरी'– महादेवी वर्मा, जन संवेदना निकळन आसान नी पर सिमरन की जीवन का चौबीस साल की जीवटता तैकि कलम किताब मा छपणीं छिन।
लिखण पढण की संसति सिमरन तै आदर्श अध्यापिका डॉ गीता नौटियाल बहिनजी से मिली च, अर नौटियाल बहिनजी की शिक्षा दिक्षा की यन छाप पड़ी च, कि सिमरन जीवन का आदर्श कलम का रंग सब अपडि आदर्श अध्यापिका मु बथै द्यौंदि।
खूब हौंस उलार दगडि गीता दीदी न, सिमरन कु हाथ पकडि तैंतै समै बितौणौ किताब घौर तक पौछेन, अर खूब हुर्से पढण अर लिखणौ तै।
संवेदना दगडि सिमरन खूब पढ़ी अर कविता लिखिन, तब गीता दीदी तक पौछैन।
गीता दीदी की सकारात्मक प्रेरणा से सिमरन लिखदि रै, अब गीता नौटियाल दीदी न सिमरन की रचनौ तै संग्रै बणौण की , छपौंण की भौत कोशिश करिन।
रंगड़–धंगड़ बाटों हिटदि हिटदि श्रीनगर मा आदरणीय गीता असनोडा मैडम से बात करी त काफी हौंसला मिलि अर सिमरन की कलम एक पोथी बणीतै छपी।
आदरणीय गंगा असनोडा दीदी की निस्वार्थ मैनत किताब मा खूब दिख्येणि च।
अबि किताब वैश्विक महामारी का बीच ही फँसी च, पर मजबूत ठंवाण जन खडा गीता नौटियाल अर गंगा असनोडा का सांसू बणौंदि हाथ सिमरन तै खूब सांसू बढौंणा।
सिमरन की पारिवारिक परिस्थिति ज्यादा बेतर भी नी!
पर मां–पिताजी कु छैल बरौबर सिमरन तै मिलणू च, फिर भी सिमरन की विशेष परिस्थिति मा कलम पकड़ी लिखणै डगर मा हम सबुकि मदद ईं बालिका तै फर्श बटि अर्श तलक पौछोणै तागत रखदि।
ईं बालिका का पंख जीवन की ईं धुकधुकि मा भी खूब फैलास ल्यौन,
अबि सिमरन की कलम शब्दों मा भौत सुधार की जरूरत भी च, पर हमुतै यन संवेदनाओं तै अग्वाड़ि बढ़ौण की तरफां हुर्स्योंण चौंदु अर ह्वै सकु त यथासंभव रुआर्थिकरु साहित्यिक मदद जरूर कन चौंद

सिमरन की एक सौदी रचना मा, कल्पना देखा–
——————‘ब्यो’———————

कंडाळि तै ब्यौ कि स्यांणि लगिन
कंडाळि न बोलि मैन ब्यो कन
इसकोस दगड़ि!
समझ नि आई इसकोस तै!
टोपलि उतारि खजाळि
कनै मुंडमा,
ब्योकु न्योतू द्योण बैठी सबुमा,
छुंई लगणी पुंग्ण्यूं सार्यू मा,
अमर्योत आई,
भट्टा ऐन,
चचौंडा गोदड़ी भी।
आलू पिंडाळु तैडु
मौंण गाड़ी भैर,
इसकोस भैजी की बुलाई मीटिंग मा,
गोदड़ी ब्वनू किलै बुलाई
हमुतै आज सारी मा,
इसकोस ब्वन्नू भोल स्वयंबर च
ऐ जाया तुम सबि ब्यो मा,
चचेंडा गोदड़ी न,
कोट पैंट पैरी छे,
आलू पिंड़ाळा पर भी,
धोती खूब जमणीं छे,
अमर्योत भी टोपलि धौंरी
पौंछी स्वयंबर मा,
दयेखी जब ब्योलि कंडाळी त
भभराट ह्वेगी जिकुडि मा।
आपसे मा भिभड़ाट
ह्वोण लगी, भुज्यूं मा,
दारू पीक लिंगड़ू आयूं
गाळी द्योणू सबुमा,
अर ब्वन्नू –
कन कांड़ा लगिन,
कंडाळी तेरा गात मा,
हम त क्वे भी नी औंण्या,
तेरी बरात मा,
कंडाळी तै गुस्सा ऐगि
भुज्यूं पछांण ह्वेगि ,
अर तखि देखदा–देखदि,
भिभड़ाट उठिगि
रुंआ–धुंवा मा, किकलाट मचिगि,
यन स्वयंबर छो कंडाळी कु,
कि
भुज्यूं मा इतिहास बणिग्ये।

साधुवाद

सम्मानित संपादक महोदय,

हल्द्वाणि जस व्यापारिक शहर बटी ‘कुमगढ़ ’ कुमाउनी, गढ़वाली और जौनसारी भाषा कैं ल्ही बेर लोकभाषा कि मासिक पत्रिका निकावण भौत दुस्साहसिक प्रयास छी। 2008 शुरु बटी ‘ पहरू ’ क लिजी लै भौत मिहनत करण पड़ी अल्माड़ में। हालांकि नींव कैं बाद में सबै भुलि जानीं। यो सैद प्रकृतिकै दस्तूर छू।

वसै हल्द्वाणि बटी स्व नवीन चंद्र जोशी, श्री दामोदर जोशी और मी हम तीन जणियोंल शुरुआती प्रयास करौ। माठुमाठ कै आज सतों जनमबार मनौण में खुशिकि के पारावार न्हैं । यो हमार लोकभाषा प्रेमियों क स्नेह , पाठक वर्ग कि आत्मीयता और सुधी लेखक साहित्यकार न क श्रमसाध्य अवदान कै प्रतिफल छू ।

आजक समय में पत्र–पत्रिका निकावण कदुक कठिन छू । सबै मित्र जाणनी । ऐल क बखत में गढ़वाली, कुमाउनी और जौनसारी भाषा न कि काफी संख्या में पत्र–पत्रिका निकवण लै रीं । यो भौत खुशि कि बात छू। यो हमरि लोकभाषा न क उत्थान क काल कई जाण चौं ।

हल्द्वाणि बटी ‘कुमगढ़’ कैं यो टैम पारि बस श्री दामोदर जोशी ‘देवांशु’ ज्यू एकलै देखण रईं ।

उनू कैं भौत–भौत साधुवाद दिण चौं हमूल।

सादर धन्यवाद। साधुवाद सबन कैं।

–रतनसिंह किरमोलिया
अणां–गरुड़ (बागेश्वर)

रिट दाणी

–महेन्द्र मटियानी, पिथौरागढ़

रिट दाणी, कतुकै रिट
त्वील जाण खाड़ में।
नि थकन्या मन माजा हौस छलछलैंछ
पात धरी नौणि कसी उमर बिलैंछ।
माया गॉठ पाड़ि–पाड़ि धाग् पुरी ऑछ।
स्वेणा भरी ऑख्यों माजा हौल भरी औंछ।
खन्यारी–खन्यारी ऐंछ कुड़ि कसि देह की
जाणि कस ध्यूड़ लागूँ धुरि–बॉसि–पाड़ में।
रिट दाणी कतूकै रिट.....
हत्याई ल्वे–धार बगै, ज्यौड़ नि बाटीनौ
खुटा टुटि भियॉ छुटी बॉट् नि काटीनौ।

सुख 'ल्या–ल्या दे–दे' भैछ अदम बाटै मा
सुख–दुखै हाट म्यर दुःख नि सॉटीनौ।
ऑख्योंनाका स्वैण बगा ऑसुनैकि गाड़ में
पराणि नितरि ऐगे सरि डड़ा–डाड़ में।
रिट दाणी कतूकै रिट.....
काल्–स्यात चाडू रोज देई में भै जानी
सॉस–सॉस धड़ी–पल गणि–गणि जानी।
जिन्दगी का बाट् भौत, पराणिक एक्कै भै
कसै लै जतन करौ जाण् वी उज्याणी।
किलै रे ! भरमी रौछै, मन माया–जाल में
गुलाबों की क्यारी बूँछै नाफणी की बाड़ में
रिट दाणी कतूकै रिट.....

सुधी लेखकों से अपील

सुधी लेखक कृपया लेख / कविता आदि WHATSAPP में न भेज कर कुमगढ़ के G-MAIL अकाउंट (kumgarh@gmail.com) में तथा krutidev-10 फॉन्ट में ही भेजने की कृपा करें।

थाती-

कमाऊ स्यैंणी

–मो0 अली अजनबी, अल्मोड़ा

आंपणि घरवाई मैत बटी
आब नि बुलै सकनी कभै
वीक बौज्यू'क, खुट तलि
नि गिड़गिड़ै सकनी कभै
बात इतुक बस मैंन पुछ
बणीं ठड़ीं काहुँ जानें छै
यौ बुढ़ि अकाव में किलै
लोंड मौंडन कै चानैं छै
पट जमै दी द्वी चप्पल
मैं नि बतै सकनीं कभै
आपणि.....

नान तिनेंकि म्यार भाग में
पड़ियै रैगो – अकाव हो
मेरि ठुकाइ'क लिजि द्वी
धरि रेगी मुस्टंड साव हो
हांट–भांट सब टोड़ि हैलि
ख्वर नि उठे सकनी कभै
आपणि.....

छी कमाऊ स्यैणी मेरी
भौत कमाइ वीकि खैं
जुलम अति करण फैटें
धौंस दगै गाइ मुकाइ सैं
वीक कमाइ' कि धौंस कैं
आब नि उठै सकनी कभै
आपणि.....

●●●

धार मेंʻक दिन

—नवीन जोशी 'नवेंदु', नैनीताल

"मिं को छुं, म्यर नौं कि छू, मिं कांहूं लागि रयूं, य बाट मकें कां पुजाल, मकें क्ये पत्त नैं। पोथा ! कि बतूं ? बस् लागि रयूं।" उनार ऑखन में ऑस छी, उनूंल म्यार उज्यांणि चा, मकें यस लागौ म्यर मूंख उं न चांणाय, दूरबीनांक उ द्विऐन चांणयीं, जनूंल दुनीं कें कां बटी—यां जांणे पुजण हेरि राखौ। पांणिक नौव जा्स डबडबाई द्विआंख्, जनूं में पीड़ छी। ए यैसि पीड़, जै कैं क्वे न थै सकन। ए यैसि आग्, जै कैं क्वे न निमै सकन।

रात्ती ब्यॉण अन्यार छनै मैं अल्माड़ बै बा्ट लागि गोछी, ब्याव जांणे हल्द्वाणि पुजंण जरूरी छू। पत्त नै, पुजि सकुंलै—नि पुजि सकुंल। रोड सब बंद छन। पत्त नैं कतू खुटां हिटंण पड़ल। गाड़िकि के भरौस न्हां। रोड ठौर—ठौर पारि टुटि रै। द्योल परलय करि राखौ। यै बातन सोचि, उधरी गाड़—भिड़, धंसी मकान और भतकी बोट—डावन चान चानै मिं लागि रौछी इकल—इकलै, कि करबा्ल पन ए बुड़ मिलि ग्याय। सत्तर—पछत्तर सालाक बुड़, ख्वार में पुंतुरि धरि मांठू—मांठ लागि राछी। मकें लै दगड़ मिलि गोय।

लोधी पुजंण जांणै मकें पटै लागि ग्येइ। कभै हिटियै जै नि भै, आज कसी हिटछी। उसी आजि तीन—चारै हात घाम पुजि रौछी। फिरि लै म्यर मूंख सुकि गोछी। आङैकि बुशकट निचोड़नी हई भइ पश्यणैल। आपंणि दा्स देखि मकैं के कूंणै नि आय। कब्बै स्यूनि गाणी हुनी ऽ ब्याक दिन लै स्यूनि उनि। मैंन अख्बारन में पढ़ि रौछी कि दुनियैकि गर्मी बड़नै कै। सैद सूर्ज भगबान ताति ग्या्स हुन्याल, जसी गैस में धरी तौ्व ढील—ढीलै ता्तते जां। तब्बै यसि रॉफ ऊंणै हुनैलि। बुबुल मकें शीरʻक पांणि प्यवा, मणी ऐराम करि बेर बुब उठि ग्या्य। मिं हुं लै हिट कय। मिं लै ठा्ड़ हो गोय।

"बुबू, तुमर घर कां भय?तुमार ना्न—तिन...?" उना्र पैल जबाबैल मकें उना्र नजिक करि हैछी। उना्र बारि में पुछंण है मिं आपूं कें रोकि नि सक। उं के नि बलाय, उनार आ्ंख सैद सब बतूंण चांणाछी। पर मिं उनूंकें पढ़ि नि सक। ए फ्यार आजि उना्र आंखन बै आंसना्क तौहण लागि ग्याय।

"कि बतूं पोथा ! सबै तिर छी। कि नि छी। के बातैकि कमी नि छी। पर आ्ब के न्हां। के लै की नैं। सब खतम.....।" उ फिरि रूंण ला्ग।

उनर डाड़ मारंण देखि मकें लै र्वे ऊंणि लागि। पर वी बखतै म्यार भितेर बै शहरी, पढ़ी—लेखी, समाज में रूंणाक तौर—तरिक सिखी एक आधुनिक मैंसैल आपंण मुनई भ्यार निकाई। "कै कै डाड़ मारणैल मकैं के मल्लब ?बुड़ैल बा्ट लागनै मूंड खराब करि हालौ...।" पर तांलै बुब आपंणि रामका्थ सुणूंण लागि ग्याछी।

"मिं एक सरकारि इस्कूलक मांस्टर छी बबा, 10—12 साल पैली रिटैयर भयूं। सोचि रौछी—आपंण घर, आपंण गौं—गाड़ जूंल, हौर बांकि जिंदगीक दिन वै चैनैल गिणूंल। पर, नानतिननैकि इच्छा छी—पिनसिनाक डबलनैलि शहर में मकार बड़ै ल्येई जाओ। पिरमू त अल्माड़पन जा्ग लै देखि ऐ गोछी। गौंक पुरांण मकान लै कि पितरना्क टैमौक टुटी—फुटी भय। म्यार मन लै वां रूंण न आ्य। हति अल्माड़ ऐ ग्या्य। सारि उमरैकि जमा—पूंजी खर्ची ग्येइ। मणीं उधार लै ल्हिंण पड़। और जसी—तसी है ग्येइ हमरि द्विखानी कुड़ि तय्यार...."

"पै क्ये आ्ब तुमर च्यौल तुमूंकैं दगाड़ नि रूंण दिंणय ऽ ?" उनरि का्थ सुणि मिं लै उनारै दगाड़ अघिल बड़ंण ला्ग। म्या्र भितेरक आधुनिक मैंय उनैरि का्थ में पत्त नै कब हिलै—बिलै गोछी। आ्ब उनैरि हुत्ती का्थ कें मिं एक छींकै सुंणण चांणौछ्यूं। उनूंल म्या्र उज्याणि चा। "इजा ! तस नि कओ, म्यर पिरमू तस नि भय। उ ए मांस्टरक च्यल छी....।" 'मांस्टर' आंखर कूंण बखत उना्र मूंख पारि गर्व और सम्माना्क भाव साफ देखींणाछी।

"त ऽ कि ब्वारी ऽऽ ?" जब उं मणीं सजोलिणा मैंल पुछ। "न इजा ! उ त म्येरि चेलि है लै बड़ि बै छी। तसि के बात नि भै। सैद शहरैकि तवाई जिंदगी ऽ मकें वाजिब नि आइ। सारि उमर गौन में नौकरी पछिल कटी। आ्ब बुड़्यांकाव शहरी बड़णौक रफत चड़ौ। जि भौ—सब नकै भौ। क दिनै प्याट पीड़, क दिनै मुना पीड़, क दिनै मलेरी, क दिनै के, क दिनै के। सुक कै दिन नि रौय। मैन नानतिनों थें आपंण गौं—घर वापिस लौटणैकि सला लै करी, पर क्वे मनसाए नैं। बुड़ी जरूर कूंणैछी—मिं तुमरै दगाड़ ऊंन। वीक ह्यि में लै म्यारै चारी गौंकि मिठि—मिठि फाम छी। उ अरड़ा

दिनानौक कटकी चहा, उ बांज्याक हाङनैकि, तैड़ाक जाड़नैकि स्यौंत्याक ठिंठनैकि हउवा–हऊ रांफ, उ ह्यूं गूड़्याक डा्व, उ पिरूवा्क स्यौंत में पाकी दुदक्या्व, उ गूड़ैकि चौखंडी भेलि, उ मनुवा्क र्वाट में धरी घ्यू–गूड़ैकि डइ, उ पूसा्क रातौंक आ्ड़–का्थ, उ रजुवा–बफौल, उ राजुल–मालुशाइ, उ झ्वाड़–चांचरि–बैर–भगनौल–कौतिक–जागर.....'' एक–एक आंखर पारि उं झुमि जांणाछी। उना्र आंखन में मैंन ऐल पैल फ्या्र हंसि देखछी। सैद उं आपंण गौं लौटणाछी। लेकिन, इकलै ऽ ? मैंल उनूंथें पुछौ, ''किलै हौर झंणि नि आया ऽ तुमा्र दगाड़ गौं हुं'',। उं के नि बलाय। मैंन उना्र उज्यांणि चा। आंखन में हंसि लापता छी। ''सब खतम हैगो पोथा !'' उं हराई–चुराई जा्स बलाय। ''बुबू ! तुमि ठीक कुंणाछा, सब खतम हैगो। देखणाछा य अजुगुति कैं ?आ्ब अल्माड़ बटी हल्द्वाणि पैदल हिटंण पड़णौ य जमा्न में। सरकार कूंणै–हम इकाइसूं सदी में जांणयां बल। के इसीकै पैदलै जूंला हम उ नई सदी में ? यै अल्माड़ में तीस रुपें प्लेट खिचैड़ि बिचांणै। सोल रुपें किलो आलु बेचाण्यीं। कब तक ज्यान रौलि इसिक। हौर य अशाण मांथौ्क द्यो ऽ। बुबू ! मिं लै तुमारै दगाड़ तुमा्र गौं ऊंन'' म्या्र परेशान हा्री शहरी मनैंण आपंण फैसल सुंणै दे।

''नैं, इजा नैं। तुमि कि करला वां। मैं त धार मेंक दिन भयूं। कसीकै पड़ि रूंल वां इकलै। कसीकै मन रमै ल्यूंल। य शहर में नि रै सकुंल आ्ब, सब तिर आपंण आखोंल देखि बेर। न जांणि कतू मकान ढइ ग्येईं–कतू ज्यान है न्है ग्येईं। म्यर कुड़–म्येरि जनम भरैकि कमै सब गाड़ बगि गे। म्या्र ना्नतिनों–म्येरि बुड़ी कें लै खै गो यो द्यो–दानव....।'' उं एकसांसै कै ग्या्य सब। उनूंकैं हिकुरि लागैणि लागि। पर उं चुप लै रि रै सक। ''य सब हमा्रै करमनक बि छु पोथा ! जि हम बूंल–वी त ल्यवूंल। देखंणाछा, दुनी में कतू पाप बड़ि गो ? आदिम–आदिम कें काटि खांणौ। कि ह्वल ? यसै ह्वल। सब मरा्ल इसी कै....., परलय आल। क्वे छेरू लागि बेर मरा्ल, क्वे भूखै्ल मरा्ल। कै कै तें हा्व–बया्व काव बड़लौ ऽ, कै कै तैं द्यो–दानव। क्वे सुख पड़ि बेर सुखल ऽ, क्वे गाड़ में बै गाड़ियल, और क्वे भूचाल में च्याप्यल। सब मराल.. .।'' बुब डाड़ मारंण फैटि ग्याछी। उनूंल म्या्र उज्यांणि चा। ऐला फ्या्र उना्र आंखन ए आंस लै नि छी। उ बखतै पत्त नैं कि भौ, जांणि किलै उ हंसण लाग जोर–जोरैल। मैंल उना्र उज्यांणि चा। उनैरि हंसि पार स्या्इ देविक धार बै पलटि बेर दुबारि–तिबारि सुणींणैछी। वी बखतै मांथाक भ्योव बटी एक ढुंङ–लोड़ घुरीते ऐ पड़ौ। मिं चाइयै रै गोयूं। के नि करि सक। धार में'क दिन, दिन छनै धार पार पुजि गोछी।

–(आंखर–अक्टूबर–नवंबर 1995 अंक बटी साभार)

●●●

थाती–

न्योली गीत

–एम0डी0 अंडोला, बनकोट, पिथौरागढ़

ऊँची डाई काफलै की, घुघूती घुरॉ छ।
खालि धुरा नजर पड़ी, जिकुड़ी झुरॉ छ।।

गैलि घाटी पातवै की, न्यौली डड़्योंनै छ।
जंङवों की दशा देखि, ऑसू ख्यड़नै छ।।

द्विजौंया घुघुती उड़ी, भुबरी गई भूड़ा।
जेठा म्हैंणा बर्खा धारा, सौंण पड़ी रूड़ा।।

अलग्वाज बासुई बाजी, हुड़की का संगा।
बगन्या पाणी मैली हैगै, हिमालै की गंगा।।

लकड़ै की केड़ी न्यॉती, वार–पारा का धुरा।
घटनै गई धुर–जङवा, बढ़नै गै परिवारा।।

बासि गै कफईं चड़ी, पुरै पोथी पुरा।
लगै जैं निसास चड़ी, उदासीला धुरा।।

शिब ज्यूका कैलाश सुवा, डमरू बाजैं छा।
घर – बणां सुकाव ह्वल, बोट लगाओ कौंछा।।

द्विहरिया बोट लगॅूल, चौमासी म्हैंणा।
हातों की बलाईं ल्यॅूलो, फूल कसी दैंणा।।

न्हें गईं

–प्रभात उप्रेती, कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी

ओहो ! आंखिर क्रांतिकारी अभिवादन, 'लाल सलाम' लिजी यो लै एगो। कभी कभार मथै सैम्पैथाइजर समझबेर चंदा ली छी और क्रांति करछी।
देखणचाण नर्स कोन में ठाड़ि हरै। मैसक असल भावना कब्भै खत्म नि हूनीं। मरण वकत लै नर्सकि खूबसूरती कै मैं चैणईं। दुनिक सारी खचर बचर मैल सब कुड़दान में डाल हालीं। सार संबंधनक कै मैं एक्कै बाद एक डीलिट करणईं। डाक्टर कुणों कोरोना तो न्हां पर अब ज्यादे जिंद नि रौल। जतु खिंच सकछा खिंचौ। मैंके भौत रीस ऐ! अैरे कि मैं कोई रबर छूं कि खिंचुल। उसी लै मैं जनम भर रबड़ै तो बणि रयीं।

स्टैथकोप लटकै बेर डॉक्टर न्हेगो। योई डॉक्टर मेर डैथ सार्टिफिकेट बड़ाल। यै लिजी मेर चोल उकै पहूंचूणि न्हेगो। सबनैकि अपण पहचान भै, पै! सब्बै अपण पहचना कंधन में डाल राखनीं। पहचाणक लिजी भेष तो बणूणें भै होय पै! दर्जी, इंच टेप, गायक कवि शौल... डॉक्टर स्टैथस्कोप। जो ,जो लटकाल उई उ है जाल।

ओह! मरण वकत मैं कस कस कस,सोचणई। सैंणी बिचारि उदास है बेर दूर बैठी रै। ब्वारि उण जांण वालन कै चहा पिलूणें। पली तो कोई न उणोंछी। सबन के हैरौछी कि कईं मैंके कोरानालै तो नि है रे! पर सार रिपोट निगेटिव ए गईं तो कुछ पुराण लोग उण लागै रईं। नैतर जब तक रिपोट नि ए छी कुकुर छोड़ बेर कोई लै सामण नि उणों छी। के जमान ऐगो ! के जो यो कोरोनालै कर हालौ! पलि लोग बिमार हुणें बाद कूंछी पौजेटिव हौवो। विल–पॉवर बणयि रखियो। अब कूंनी पौजेटिव जनहैया हो !नैतर...।

और नानतिननक सेणिलै अपण अपण नानतिननन में ब्यस्त छन। मेरे नानतिन भितर भैर भिते करणईं। कब्भै भेर खेलण जाणईं तो कब्भै मैंगै बड़ गौरलचांणईं।
मेर खोपड़ी मरण वकत लै खूब जागृत छू। बस बुलांण न सकणईं। मैं सब जो आसपास हुणों उकै समझणईं। यो बात नि भै पुर चेतना भै।

द्वी अधेड़ आपस में बात करणईं कि सब भगवानैकि मर्जी छू हो बिष्ट ज्यू! जतु सांस मलि बटि लै रईं उतू तक यो जिंदगी भै..। जस सबनैकि सांसनक कोट निश्चित भगवानलै कर रक्खौ। सांस नि भै राशन कार्ड भै और जिंदगी जस आधार कार्ड भै। उसि डॉक्टरल कै हालौ ज्यादा से ज्यादा छः घंटकि मैं जियूंल।

उसि जोशी जो ज्यूल मेरि कुडंली देख बेर पलियै बतैहाल छी कि यो साल काल सर्प योग छू। उनल एक अनुष्ठान करणलिजी लै कौछी। पर आग लगूंण यो कोरोना है गो।

ओह्! यो पुराण याद ए गईं। पुराणं यादन कै लै अल्लै उनरे उण छी के!। मुशकिल भै कि जनम भर उननकै बणाओं, पै फिर मरण वकत होमवर्क चार उननकै याद करौ। कूंनी मरण बखत याद फ्लैश हुणन लगजानी।

एक्टिविस्ट सौज्यू लै एगइगईं । एस लागणों पूर तैयारी कर बेर ऐरईं। सोचणई हुनल के बौद्धिक युवा योगेश कै मरघट में फूकोयामा पै और राज्यकि दुर्दशा और निवारण पै एक लैक्चर दिबेर उकै क्वैश्चन पुट– अप करणलिजी प्रेरित करला। अगर उ उनर आर्गेनाइजेशन में आजाल तो उनर एक्टिविटी और बढ़ैलि। यो युग में यो 'एक्टिविस्ट' शब्द भल आ। लोग अपुण कै एक्टिविस्ट कूंण भल माननी। हिंदी में आंदोलनकारी में उ दम नि भै।

चार दिन बटि मैं अब मरूं तब मरूं हैरईं। घरवालनबटि, भैर वालन तक सब बोर है गईं। सौ ज्यू कै निराशा होली जब उननकै पत्त चलल कि कि मैंल अपुण देह अस्पताल कै दान दि हाली। पै! अस्पतालक कर्मचारी दिखाई नि दीणईं। पत्तनै मेर मरणक बाद उ मेर श्देह कै लिजाला या निलजाल। नौकरशाही भै! उसी मैं कबीर तो छू न्हां कि मेरे मरणक बाद मेरी देहक लिजी छीना झपटी हौ।

सौ मुर्दनक जलूण बाद इन्द्रासन पाणैकि की लालसा वाल चनु लै ऐगो। उक झोल में जरूर अंडर वियर, तौली और ताशक गड्डी और के पत्त एक बोतल लै होली। पर बिचार निराश है जाल जब उकै मालूम होल कि मैल अपुण देह दान दिहाली। मैं चांनू कि मैं मरणक बाद प्रगतिशील कईजां। तब्बै मैल अपुण देह अस्पातल कै दान दे। ओह यो वासना! योगी ठिक्के कूंनी – मरणक बाद लै वासना नि जानि। मरणक बाद उ सूक्ष्म शरीर में ट्रांसफर हैं जां। और लै योगी बतूनीं कार्य श्शरीर, कारण श्शरीर ... अब तो सब भूल गईं। जस आजकल सब अपुण बोलि भूल गईं।

मैं इतू फेमस नि भईं कि मेरी मरणक बाद मीडिया में मेरि खबर आऔ। पर इस लै नि भै क्षेत्रीय अखबारक लायक तो लियाकत मेर भैई। त...!

लियो अपुण कै तान बेर पत्रकार घोषित करणवाल हीरासिंह लै एगो। अपुण बीस मेघापिकसल डिजिटिल कैमरल मेरी फोटो खीचल और फिर अपुण अखबार में लिखल– नहीं रहे...। के पत्त! मेर बार में एक आर्टिकल लिखल कि के छी, कांछी,जस लिख दे ... उनर मरणनरल अपूरणीय क्षति भै। उसि मैंल टैम टैम पै येक भल दावत कर रखी। उक मोटर साइकिल, जमै 'प्रेस' लिखि रूं मैलै सस्त में दिलै रक्खी।

मोहल 'मैं मुक्त छूं ;; ऐस मैं नि कैसकूं बिचारि अपुण सैंणि के देख बेर दया लागी रै। पर मेर मरणक बाद एडजैस्ट करलेलि। एक बार पीताम्बर जू ल मैंके जल्दी मरणक प्रेरणा दिते हुए बताय कि मैस सैंणी मरणक बाद एडजैस्ट करण में देर लागीं पर जनाना लोग जल्द एडजस्ट करलिनी।

जां तक मोहक बात छू येई छू कि रोज रतैब्याण अखबार नि पढ़ सकूंल। और जो एक वाहियात सीरियल सालों बटि कथा उपकथा उपउप कथा कै बेर द्वी साल बटि चलणों उकै न देख सकूंन। फेसबुक नि कर सकूंन और मोबाइलैल हर दा थै फसक नि मार सकूंन। उसि मैंकै गोविंदाक और दक्षिण भारतीय फिल्मलै भल लागनी।

और लै मोह भ्या पै! पर इति नै कि डाड़ मारण लागजूंल। मैंल सामान्य, परम्परागत जीवन जियौ,परम्परागत ब्या करौ, परम्परागत नानतिन पैद करीं और उत्तराखंडीनक परम्परागत सरकारि नौकरी करी। मैं मनोवैज्ञानिक 'एक्सैप्टेंश' वाल हाल में छूं। पुनर्जनम पै विश्वास न्हां पर अब इच्छा छू हैजालौ तो बढ़ि हून।

मरण बाद मेरी आत्मा सारी दुनिया में बढ़ि गर्भ तलाश करैलि। कई कोई टैस्ट टयूब में जै बेर नि बैठ जा। अगर च्वाइस होलि तो भले ही कस्सै यो उत्तराखंड राजनीतिज्ञनल बणें हालौ, मैं यई जनम फिर लिहण चां। देव भूमि भै पै यो! कई राक्षस भूमि में जनम होलो तो एसतेसि हैजालि। उसी कोई लै जमीन के नि हुनि। उकै तो वांक रूण वाला बडूनीं।

ओहो! लियौ पंडिज जी लै एगइं इननकै कैल बुला! यानी सब चानी बूढ़ जल्दी जल्दी निकल जाऔ तो चैन आल। पर उ मेर के संस्कार करौल! मैंले तो अपुणि बाडी दान दि हाली। पर के पत्त उ कोई नई विधान निकलाल कि फलां पुराण में यैक जिक्र छू जस कोरनाक जिक्र कैले पुराण में छौ वल, बत्तै रक्खौ। मैडिकल कालेज में धूपबत्ती तो करी द्याल।

मैंकै ! नानतिनान बटि मरघट में मैसकि कुकरगत्त देख बेर डर लागछी। पर बाद में सीप ऐगे। मैंल वां लोगनकै वां मैसनकै बिजनस डील करते हुए, ब्या फिक्स करते लै देखौ। मैल आफि लै मरघट में भल डील करीं। मेरी एक किताब तो यईं मरघट में दीप्ति प्रकाशनक प्रकाशक थै बात करण बाद छपि । मरघट दुनि में सबनहैबेर बढ़ि जाग छू । वां मैंस मुणि मुणि आध्यात्मिक है बेर कुछ उदार है जानीं। आलू गुटक बढ़ि चटनी साथ खै बेर तो गदगद है जानीं।

उसि मेर तो इच्छ छी कई एकांत में मरू। न डाड़ मारणवाला,न सब झंझट। पर यो भे कि एकांत में मरूल तो सेंणि के फैमली पेंशन नि मिलैलि। उसी लै हर साल वां ट्रैजरी में जे बेर सिद्ध करण हूं कि मैं आइ जिंद छूं। उसी तो भौत से लोग जिंदगी में कई बार मरनी फिर लैं पेंशन खानि।

मेरी सांस खूब चलणें। तकलीफ बढ़िगे। मैंगें अंदाज एगो कि अब जाणक वकत ऐगो। पर मैंकै कोई यमराज या रौशनि जस नि दिखणई! जस लोग बतूनीं। मैथे सौज्यू जी गम्भी है बेर पूछणईं कस लागणों। कोई उननथै कूंणो छी– अब उ सुणन न्हाथिन ...सौज्यूल ने ओफ कौ और मेरे कपाल में हाथ रख दे। उ सोचणईं छी कि कोई सीन कै फिल्मी टाइप है जाओं। मेर गाल में आंसू लुढ़क जाऔ पर मैगे डाड़ उनेरे नि भै। पर कब्भै टीवी में खास दृश्य देख बेर कब्भै कब्भै जरूर ए जानेर भै। धन्य काल भै डायरेक्टरनक।

विद्रोह पत्रिका क सम्पादक सौज्यू असमजंस में छी। के पत्त यो सोचणईंछी मेरे मरण बाद के के मेर लिजी लिखुंन। उसि आदिम मैं भलै भईं। खास तो मैंल नि कर पर संगीत गोष्ठी होलि बैठक कनूरै भै। खूब मिठाई , ग्वाज, समोस खिलूनैरेभै। कब्भै कब्भै विरोध प्रदर्शन लै करि भै। फेसबुक में सक्रीय भै। मैं उनर पत्रिकाक संरक्षक लै दस हजार दि बेर छीं।

मोह धीरे धीरे खतम हूणौंछी । अब भोल सूरज नहीं दिखल,गरम भात नि खै सकुंन। अखबार नि पढ़ूंल। मैंकै लागणों छी सब मेर इति देर बचणक दिख बेर बोर हैं गईं। कां आठ घंट में मरणक बात छी मैल द्विदिन खिंच हालीं। जसि प्लेटफार्म में छोड़न गयीं मेहमान तब बोर है जानिं जब गाड़ि खिसकैई नैं। सारि बात है गईं,सब हिदायत लै दी हाली आइलै गाड़ि रूकी छू तब जस हैं जां कि के करूं नि करूं उस मेर लिजी लै सबनक हाल हैगईं गंगा जल जो इतु

देर रखण बाद अपुड़ मटमैला पन नही छोड़ पाणों छी पेरशान लगणों छी। मैंके हूंण लागी मैं किलै नि मरणईं!

तब्भै एक बूढ़ा ऐ बेरे मैथें लिपट गो। बूढ़ अपुण लार अपुण पोपल मुंख बटि मेर उपर गिरोंणों छी। ऊक घबराहट ऐस छी जश अब ऊक बारि छू। पलि मैल उकै पहिचाण नैं फिर मेर चोलल मेर कान में कौ, '' यो अपुंक दगड़ी जगदीश हैप्पी छन। '' ओह यो खबीस फसकी कां बटि ऐगो! फोंस मारण में माहिर! यो मेर क्लास– फैलो नानतिनक दिनैक भै। यो उई जगदीष भै जो हमेशा मैथें डबल उधार लिजै बेर कब्भै वापस नि दिनरे भै। उ समझछी मेर पास निमखण डबल छन। खूब फसक मारबेर अपुण खराब हालत बतै बेर खूब यैल मेर डबल खाईं ,उड़ैईं। उसी यो बात भै गरीबै भै। हालात भल नि भै। पर दिमाग चार खूब भै। भौत ज्ञान और दिमाग कम्प्यूटर जस भै। स्कूल में मास्सैप बोर्ड में हिसाब बाद में लिखछी यो जबाब पलियै बतै दिछी। पर नानतिनै बटि मौक नि मिलौ तो गेंगगिरी लै करी। अरणापट्ट जाण में हयू पड़न में लै काम करि भै। फिर मुम्बई लै भाजौ। सब काल करीं पै गरीबैकै गरीबै रैऔ।

उ फसक मारनेर भै कि मुम्बई की फिल्म लाइन मैं खूब रैईं। वह मुम्बई गया है। जब उथै अपूं पुछ ला कि गोविंदा के जांणछै उ कुछ टैम तक खूब हांसल फिर कौल, '' गोविंदा....! अरे सबनहै बेर पली उई तो मेर पास बांन्द्रा में आ उ भूखल बिडौज हरौ छी तो मैल उकै पलि खांण खिला फिर डायरेक्टर थै के बेर चांस दी।'' उ पास काथ कूंणक, फसक मारणक गजब टेलैंट भै। अगर उकै मौक मिलन तो आज कां हुन! उ पास फसक और डबल मांगणक गजबक स्टाइल भै। जब मैं उकै डबल दी छी उ कौल, ''डबल तो दिंणों छा दाज्यू! पै पैली यो बताऔ कि कब वापस करूण छन, तब्बै ल्यूहून। '' मैं कुनेर भईं ,''अरे के बात छू जब लै तेर पास हैजाल तब दिदियै।''पर उ स्टाइलल कूनेर भैं, '' नै तसनिहुन पली बताऔ तब ल्यूहून।'' तब मैं कुनेर भयीं, ''ठीक छू द्वी महेंण बात दिदिये।'' तब उ कौल, '' होय पै। अब भै न मर्दन वालि बात। ठीक छू पैलीक डबल चार हजार य है गयीं, एक हजार अबैक। कुल टोटल भै पांच हजार । यो पांच हजार मई म्हैंण में तुमर मेज में व्हाल '' उक उप नाम तो हैप्पी भै पर भौत दुःखी उ करनेर भे। सार घर वाल उकै देख बेर रीस करनेर भै। फिर उ डबल कब्भै वापस नि हुनेर भै। और अचानक वह वापस आया और अपने साथ वह मुम्बई की फिल्मी दुनिया के किस्से लाया। अपने इस पुराने क्लास फोलौ की प्रतिभा के लिए मैं कोई शेर याद करना चाह रहा था कि एक परम्परागत शेर नकारात्मक रूप में जिसे अक्सर लोग सभाओं में भी कोट करते हैं वह आया। क्या है वह!– सालों नरगिस... कुछ ऐसा ही। मैंने मुश्किल से अपने पुराने क्लास फैलो का हाथ अपने कांपते हाथों से पकड़ा।

उ प्रगतिशील मैस लै भै। जब उक सैंणि मरी तो और सैंणि लोग कूंण लागीं कि यो सौभाग्य शाली भै। तो उल डांठ बेर कौं ,''के हूं यो सुहागिन! अरे मैस कतु डरपोक भै उ अपुण मरण है बेर पलि अपुण सैंणि के मरण देखण चां। के मजाक छू!''

आज उ मेर हाथ थाम बेर डाड़ मारणों छी। मैंके लैगो कि एल उ अपुण एक्टिग नि करणों, न उक आंसू नकली छन। मैंल तब अपुण तकिक भितेर बटि तीन हजार निकाल बेर उक हाथ में थमईं। मैं अटक बिटकै लिजी तकी भितर डबल सम्भाल दी छी। तीन हजार डबल देख बेर पली तो उ हूकी गो, फिर तो उल गजबै कर दी। नैनै कैबेर उल डाड़ल, बिडौल कर दी। कूंण लागौ –दाज्यू ! दीणोछा ये वजेल लीणईं नि ल्यून तो अपुं कै नक लग जाल। मैके मालूम छी कि आपूं के मालूम भै ये ठगणो पै आपुं ठगणक मज लिन्हेर भै। मैं नि जानणू आपूंक खेल!'' उल कोटल अपुण नाक और आंख दोनों पोछ बेर डबलसम्भाल बेर अपुण फटी कोटैकि भितरक खिस में रख लीं। यो कोट मैलई उकै दी छी । नोट सम्भाल बेर उल मुक्त है बेर फिर पूरि आजादील दहाड़ मार मार बेर कौ –दाज्यू ! मैके आप जनम जनमका करजदार छोड़ बेर जाणों छा।।! तुम पैद है जालै दाज्यू मैं पिछण बेर मैं लै उणईं। कर्ज तुमर अधिल जनम में उतराणें भै। योई विधाताक कानून भै। और.... ।''ओह! मरण बाद लै ये पिछ नि छोड़ल, मैंल सोचि।

मैल उचक बेर देखो कि स्टोर रूमक दरवाज चौधाणपट्ट कर रक्खौ। अन्यार मुणि मुणि हूंण लागौ। ब्वारी भैर सुखई लुकुड़ लूणें। और तब्भै एक अधेड़ पड़ौसी मैंके देख बेर कूणों ,''अब रत्तैब्याणैं की बात गे। यानी अब मरघट नि लै जै सकौ।

अब कोई जिंदगी का सफर ये कैसा सफर .... जिंदगी क्या है बैकग्राऊंड गीत नि बाजि रौ। मैके लागणों माठू माठू मेर यात्रा खतम हुनेर वाल छू। आंख मुजणईं। डॉक्टरल मेर आंख में टार्च मारि बेर खोर हिले दी। यो देख बेर सामणी चनू भाजि बेर खूब खुश हैबेर इंतजार करण वाल लोगन थै चहक महक बेर कूंणों

''न्है गईं''

●●●

लोक कथा

तपौ उजाळु

–डॉ. उमेश चमोला, एस.सी.ई.आर.टी. देहरादून, उत्तराखण्ड

एक ऋषि कु बौण मा आश्रम छौ। तैकि एक नौनि छै। तैंकु नौ सुचित्रा छौ । स्या दिखेण दरशने भी ठिक छै अर पढ़े लिखै मा भी अव्वल। जब स्या ब्यवोण लैके ह्वे तैंका बुबा ऋशिन सबु मू रैबार पठ्ये दीनि , '' जु भी मेरि नौनि तैं शास्त्रार्थ मा हरै द्योलु मी अपणि नौन्यो ब्यौ तै सै ही करि द्योलु।''

यीं छ्वीं सूणी देश परदेशा नौना सुचित्रा से शास्त्रार्थ कनौ ऋश्या आश्रम ऐ गिन। क्वी भी सुचित्रा अगनै टिक नि सैक्यां। रवि प्रकाश नौ कु एक नौनु भी शास्त्रार्थ मा आइ छौ। सुचित्रा दगड़ि तैकु शास्त्रार्थ भौत लंबु चलि । स्वे छौ जैन सुचित्रा हरै दीनि। ऋषिन सुचित्रौ ब्यौ रवि प्रकाश से कर दीनि ।

अब सुचित्रा रवि प्रकाशा घौर रौण बैठी। रवि प्रकाश विद्वान त छौ पर स्वो लबारचारि भी कर्दु छौ। ब्यौ का बाद भी स्वो कै लबार नौन्यों का धोरा जाणू रैन्दु छौ। एक दौं स्वो भौत लंबा बग्ता बाद घौर आइ। सुचित्रान तैते येकि वजै पूछि। वह टाल मटोळ कनू रै। कुछ दिन तक स्वो सुचित्रा दगड़ि अपणा घौरे रै। पर बोदन कि कुकरै पुछिड़ि बल बंगि कि बंगी रै। स्वो अजि लबार नौन्यों का धोरा जाण बैठी। एक दिन यन भी आइ जब तैन सुचित्रा गौणा पाता भी तौं नौन्यों तैं दी दीन्यां। सुचित्रान यन कनो ना बोलि। तैन सुचित्रा तैं नट्टिट सट्टिट बोलि। द्वी चार दिन्वां बाद तैन सुचित्रा अपणा घौर से भैर करि दीनि। सुचित्रा अपणा बुबा का आश्रम मा चली छै । ऋशिन भी सुचित्रा कु ही दोश मानि। सुचित्रा न अपणा बुबाऽ आश्रमा धोरा अपणु आश्रम बणै दीनि। स्या तै ही आश्रम मा रौण बैठी।

सुचित्रा से जुदा होणा बाद रवि प्रकाश तैं लगि कि अब क्वी मेरु पुछदरु नी छ। तैन लबारा छोर्‌यों का धोरा औण जाणू बढ़ैलि छौ। तै मू जतगा माया छै तैन तौं नौन्यों पर लुटेलि छै। तौं नौन्योन रवि प्रकाश मू हौर धन मांगि। रवि प्रकाश मू त अब कुछ बच्यूं के नि छौ।तौन रवि प्रकाश तैं मन्नो अपणा आदिम तैका पिछनै लगै दीन्यां। तौन रवि प्रकाश मारी तैं घैल करी छोडिलि। होश मा औणा बाद पूछदा पुछदि स्वो सुचित्रा आश्रम पौंछी। सुचित्रा न आश्रमै धोरे जड़ी बूटी कूटी तैं लेप बणै दीनि । रवि प्रकाश तै लेप से ठिक ह्वेगि। तैन सुचित्रा से माफी मांगि।

रवि प्रकाश न सुचित्रै पूजा कनै जगा पर अपणु चित्र देखि । तैन भोंचक ह्वे बोलि, ''तुम्हारि पूजा कन वाळि जगा पर कै देवि द्यब्तों कि मूरत नि छ दिखेणी ?

'' मीन तुमी द्यब्ता मान्यां। इलै द्यब्तों कि मूर्त्यो सवालै नि उठदु ।

सुचित्रै यीं छ्वीं सूणी रवि प्रकाश भौत पछताणि । तैन सोचि, '' मी कुकाजौं मा ही रम्यूं रैंयुं। मीन यीं तैं कतगा खैरि दीनि। या नारि कतगा महान छ।'' तैन मनै मन मा सोचि कि स्वो सुचित्रै इज्जत परमता वास्ता अपणा ज्यू जान भी दी देलु ।'' रुमुक का बगत जब स्या योग ध्यान छै कनी त तैन पूजा वाळि जगा पर धर्‌यां अपणा चित्र बटिन उजाळु लौंकदु देखि।

''देवी! म्यारा चित्र से उजाळु ?''

''हौं! स्वामी ! मी कै सालु बटि तुमारा ये ही चित्र तैं अंठ मा धैरी योग मुद्रा मा बैठदु अंयुं। ये चित्र से लौंकण वाळु उजाळु म्येरा तप कु ही तेज छ।'' रवि प्रकाशा पूछण पर सुचित्रान बोलि।

मो.07895316807 ●●●

मिशाल

–जोतसिंह नेगी 'उत्तरांचली', कुलाई खान्द पौड़ी

1. कामि–काजि आलसी नासी,
   बामण कुनि स्वान्दु दासी !
   संत–भगत कु हैंसण नासी
   चोर थैं नि स्वान्दु खॉसी !
2. डॉडि–कॉठयूँ म बॉज–बुरांश,
   तौं पर बैठयॉ गॉदा हिलांश !
   तौंकि बोलि म बडु मिठास
   जिकुड़ि मेरि नि रैन्द उदास !
   पात पतन्यालि मखमलि घास
   ठंडी हव्वा म ठंडी सांस
   चैता कु मैना रैन्द खास,
   ठंडु पाणि जिन्दगी कि आश
   हव्वा–पाणि म देवतों कु बास
   बिन हव्वा–पाणि कु सर्वनाश !

पहाड़ि बोलींक व्याकरण : 5.प्रत्यय प्रकरण

–डा0 भवानीदत्त काण्डपाल, हल्द्वानी

शब्दाक अन्त में जुड़िबेर वीक अर्थ में बदलाव या विशिष्टता प्रकट करणक लिजी प्रत्ययोंक प्रयोग करी जाँ। प्रत्ययोंक प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि सबै शब्दोंक अन्त में हुँ। इनर प्रयोग शब्दै में जुड़िबेर हुँ, अलग स्वतंत्र प्रयोग न मिलन। पहाड़ि बोलीं में अनेक भाषाओं बटी आयाक प्रत्ययोंक साथ–साथ कुछ स्थानीय देशज प्रत्ययोंक लै प्रयोग मिलें। अधिकतर प्रत्यय संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी आदि आर्य भाषाओं बटी आयाक छन। पहाड़ि बोलींक मुख्य प्रत्यय इन छन–

1.अ प्रत्यय– संस्कृतक अनेक प्रत्ययोंक स्थान पर **अ** शेष रों। घञ् प्रत्ययक **अ** जुड़िबेर बणी शब्द पहाड़ि बोलीं में तत्सम, तद्भव सबै रूपों में मिलनी। जसिकः– मेलः–**मेल**(एकता), रोगः–**रोग**(बीमारी), जागरः–**जागर**(देवगाथा), ज्वरः–**जर**(बुखार), कासः–**खाँसि**(खाँसी), आकाशः–**अगास**(आसमान), अर्धाः–**आद**(आधा), गीतकारः–**गिदार**(गायक) आदि।

अच् प्रत्ययक **अ** जुड़िबेर बणी शब्दोंक प्रयोग लै पहाड़ि बोलीं में मिलें। जसिकः– गोष्ठः–**गोठ**(गोशाला), अक्षरः–**आँखर**(अक्षर), कीटः–**किड़**(कीड़ा), घटः–**घड़**(घड़ा), घोटः–**घोड़** (घोड़ा), पिण्डः–**पिण**(पिण्ड), दण्डः–**डंड**(डंडा) आदि।

अण् तद्धित प्रत्ययक अ जुड़िबेर बणी शब्दोंक लै पहाड़ि बोलीं में प्रयोग मिलनी। जसिकः– औषधं–**औखाद**(दवा), धौम्रः–**ध्वाँर**(कालिख), भाद्रः–**भदौ**(भादौ माह), यौवनं–**जोभन** (जवानी), श्राद्धं–**सराद**(पितृ–तर्पण), तैलं–**तेल**(तेल) आदि।

2.अन प्रत्यय– ल्युट् संस्कृत प्रत्ययकि जाग अन है जाँ। ल्युट् प्रत्ययक अन जुड़िबेर बणी अनेक शब्द पहाड़ि बोलीं में प्रयुक्त मिलनी। जसिकः– गणनं–**गणन**(गिनना), हिण्डनं–**हिटण**(चलना), हसनं– **हँसण**(हँसना), खननं–**खणन**(खोदना), चशणं–**चाखण**(चखना), चर्वणं–**चबूँण**(चबाना), गलनं–**गवण**(गलना), दंशनं–**डासण**(डसना), पालनं–**पावण**(पालना), उद्घाटनं–**उघाड़न**(खोलना), चालनं–**चलूँण**(चलाना), कण्डूयनं–**कण्यून**(खुजलाना), तोडनं–**टोड़न** (तोड़ना) आदि।

3. त प्रत्यय– भूतकालकि क्रियाक बोध करूँणा लिजी संस्कृत में क्त प्रत्ययक त जुड़ें। पहाड़ि बोलीं में भूत कालक बोध करूँणा लिजी त प्रत्ययकि जाग औ प्रत्ययक प्रयोग मिलें। जसिक– दृष्टः–**देखौ**(देखा), हिण्डितः–**हिटौ**(चला), कृतः–**करौ**(किया), जितः–**जितौ**(जीता), पिष्टः–**पिसौ**(पीसा), पृष्टः–**पुछौ**(पूछा) आदि।

पहाड़ि बोलीं में बिती घटनाओं कैं याद करणा लिजी त प्रत्ययक स्थान पर यक प्रत्यय प्रयुक्त हुँ। जसिकः– भुक्तः–**भुग्त्यक**(भोगा हुआ), चष्टः–**चाख्यक**(चखा हुआ), हिण्डितः–**हिट्यक** (चला हुआ), खेलितः **खेल्यक**(खेला हुआ) आदि।

भूत कालक त प्रत्यय जोड़िबेर पहाड़ि बोलीं में कुछ संज्ञा शब्दोंकि लै रचना करी जैं। जसिक– लग्नं–**लगन**(मुहूर्त), ऋणं–**रीण**(कर्ज), घृतं–**घ्युँ** (घी), दुग्धं–**दूद**(दूध), खातं–**खात**(ढेर) आदि।

4. ति प्रत्यय– क्तिन् संस्कृत प्रत्ययक ति जुड़िबेर पहाड़ि बोली में अनेक तत्सम और तद्भव शब्दोंक प्रयोग हुँ। जसिकः– कुमतिः–**कुमति**(कुबुद्धि), सुमतिः–**सुमति**(सुबुद्धि), विमतिः–**विमति**(दुर्बुद्धि), कुगतिः–**कुगत**(दुर्गति), युक्तिः–**जुगुत**(व्यवस्था), दृष्टिः–**डीठ**(नजर), यष्टिः–**जाँठि**(लाठी), रीतिः–**रीत**(परिपाटी) आदि।

5. स्त्री वाचक प्रत्यय– पुरुष वाचक शब्दों कैं स्त्रीवाचक बणूना लिजी संस्कृतक टाप् प्रत्ययक **आ** अक्षर शब्दाक अन्त में न जुड़िबेर शुरू में जुड़ि जाँ। जसिकः– लज्जा–**लाज**(शर्म), कथा–**काथ**(कहानी), खट्वा–**खाट**(पलंग), दशा–**दास**(दशा), जटा–**जाट**(जटाएँ), दूर्वा–**दुब**(दूब) आदि।

संस्कृतक ङीप् प्रत्ययक ई कि जाग पहाड़ि बोलीं में इ जुड़ें। जसिकः– देवी–**देवि**(देवी), पार्वती–**पार्वति**(पार्वती) राज्ञी–**राणि**(रानी), पुटी–**पुड़ि**(पुड़िया), कुटी–**कुडि** (मकान), क्षुरी– **छुरि**(छुरा), घटी–**घड़ि**(घड़ी) धरित्री–**धर्ति**(भूमि) आदि।

इन प्रत्ययोंक अलावा अनेक स्थानीय प्रत्यय लै पहाड़ि बोलीं में प्रयुक्त हुणी। जसिक–

6.बेर प्रत्यय– एक काम पुर हुण पर दुसर काम शुरु करणक लिजी पहाड़ि बोलीं में बेर स्थानीय प्रत्यय जुड़ें। जसिकः– हिण्ड्–**हिटिबेर**(चलकर), हन्–**हाणिबेर**(पीटकर), चुर्–**चोरिबेर** (चोरकर), तुल्–**तोलिबेर**(तोलकर), या–**जैबेर**(जाकर), पिब्–**पीबेर**(पीकर), कथ्–**कैबेर**(कहकर) आदि।

7. णेर प्रत्यय– काम करणेरक बोध करूँणा लिजी पहाड़ि बोलीं में णेर प्रत्यय जुड़ें। णेर लै देशज प्रत्यय छ। जसिकः– कृ–**करणेर**(करने वाला), भृ–**भरणेर**(भरने वाला), धृ–**धरणेर**

(रखने वाला), हृ–**हरणेर** (हरने वाला), हस्–**हँसणेर** (हँसने वाला)। णकारान्त आदि क्रियाओंक दगड़ णेर प्रत्ययक ण कि जा्ग न है जाँ। जसिक– श्रु–**सुणनेर** (सुनने वाला), मन्–**माणनेर** (मानने वाला), पठ्–**पढ़नेर**(पढ़ने वाला) आदि।

8. ऐ प्रत्यय– निरन्तरता बतूणा लिजी क्रियाक द्विबारी प्रयोग करण बखत बादै क्रिया में ऐ प्रत्यय जोड़ी जाँ। जसिक– **करण–करणै**(करते–करते), **खाण–खाणै**(खाते–खाते), **हँसण–हँसणै**(हँसते–हँसते), **हिटण–हिटणै**(चलते–चलते), **बुलाण–बुलाणै**(बोलते–बोलते), **रुण–रुणै**(रोते–रोते) आदि।

9. ओं प्रत्यय– हिन्दीक **वाँ** प्रत्ययक जा्ग पहाड़ि बोली में **ओं** प्रत्यय जुड़ें। जसिकः– सप्तमः– **सतों**(सातवाँ), अष्टमः–**अठों**(आठवाँ), नवमः–**नवों**(नवाँ), दशमः–दसों(दसवाँ) आदि।

10. ई प्रत्यय– विशेषणोंक संज्ञा शब्द बणूनाक लिजी पहाड़ि बोलीं में ई प्रत्यय जोड़ी जाँ। जसिकः– भौल– **भलाई,** बुर–**बुराई,** महँग– **महँगाई**, साँच–**सच्चाई** आदि।

यही प्रकाराक अनेक स्थानीय प्रत्ययोंक प्रयोग पहाड़ि बोलीं में मिलनीं। इनर परिचयक लिजी एक–एक उदाहरण दिनयाँ। जसिकः–मिठ+**आस**=मिठास, पागल+**पन**=पागलपन, लू+**आर**=ल्वार, टिक+**आऊ**=टिकाऊ, पुज+**आरि**=पुजारि, मिला+**वट**=मिलावट, घुम+**अक्कड़**=घुमक्कड़, झगड़+**आलू**=झगड़ालू, बिगड़ी+**ऐल**=बिगड़ैल, पंच+**ऐत**=पंचैत, शराब+**इ**=शराबि, रङ+**इल**= रङिल आदि। यसीकें हजारों स्थानीय प्रत्ययोंक प्रयोग अलग–अलग पहाड़ि बोलीं में अलग–अलग प्रकारलि करी जाँ। टाइपिस्ट और प्रकाशका्क हिन्दी फौंट में अन्तर हुणक कारण लेख में श और श अर्ध वर्णोंक गलत प्रयोग होलत क्षमा करिया।

समाचार

नई शिक्षा नीति कैं मंजूरी

हमरि केन्द्र सरकारल 34 साल बाद मानव संसाधन विकास मंत्रालयक नौं फिर शिक्षा मंत्रालय करते हुए नई शिक्षा नीतिकि मंजूरी दी हाली। यै नई शिक्षा नीतिक अनुसार पचूँ दर्ज तककि पढ़ाई मातृभाशा या क्षेत्रीय भाषा में होलि। आब शिक्षा पर जीडीपी का छै प्रतिशत खर्च करणक लक्षय छु। पैंल बार सरकारि और प्राइवेट इस्कूलों लिजी एकै नियम बणाई गो। यैल प्राइवेट इस्कूलों कि मनमानी फीस पर लगाम लागलि। मिड डे मील दगाड़ नाश्ता लै मिल और इस्कूली नानतिनौकि मेडिकल जॉचै व्यवस्था लै होलि। नई शिक्षा नीति पर आपणि प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ज्यूल कौ कि शिक्षा नीति समानता, गुणवत्ता और जवाबदेही क खामन में ठाड़ि छु। यैल देश में शिक्षा व्यवस्था में बेहद बदलावआल और बहुमुखी प्रतियाक धनी छात्र तैयार ह्वाल।

राफैल ऐ गईं

देश कैं रक्षा कवच मिल गो। फ्रांस बटि संसारक श्रेश्ठ व आधुनिक तकनीक वाल पॉच राफैल युद्धक जेट विमान भारत ऐ गईं। यै विमान में इतुक खूबी छन जो ऐल तक दुणियांक कै लै देशकि टेकनीक में आई तक छई न्हां। आई त 31 विमान और ऊँणी छन। भारतकि यो बढ़ती शक्ति कैं देखि बेर दुश्मणनाक कल्ज कॉमण लाग रईं।

अयोध्या मंदिरक् भूमि पूजन सम्पन्न

अयोध्या, माया (हरिद्वार), मथुरा, काशी, कॉची, अवन्तिका, द्वारिकापुरी मोक्ष दिणी यो सात पवित्र पुरियों में एक श्री राम कि नगरी अयोध्या में 'राजकाजु कीन्हें बिनु मोहि कहॉ विश्राम' कूँणी प्रधानमंत्री मोदी ज्यूल हनुमान गढ़ी में भगवान श्री हनुमान ज्यूकि आज्ञा ल्हीबेर वैदिक मंत्रोच्चारणा साथ करोड़ों लोगोंक स्वैणों कैं साकार करतें हुए 5 जुलाई 2020 हुँ त्रिलोकेश्वर भगवान श्री राम ज्यूक भव्य दिव्य एवं अद्भुत मंदिरक निर्माणक वास्ते रामजन्म भूमिक गर्भ गृह में नौ शिला पूजन व भूमि पूजन करौ। अभिजित मुहूर्त छी उ बखत। वॉ उनुल पारिजात एक पेड़ लै लगा। यै अवसर पर उनुल उपस्थित लोगों कैं संबोधित करौ। 'सबका साथ सबका विकाश' पर जोर दें। उ0प्र0 राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री, मोहन राव भागवत, नृत्य गोपाल दास व सबै धर्मनाक धर्मगुरु यै मौक पर उपस्थित छी।

'जय गोल्लज्यू''

अविचल प्रकाशन की ओर से

।। स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ।।

अब पूर्णतः उत्तराखण्ड की वाणिज्यिक राजधानी
हल्द्वानी (नैनीताल) से संचालित।

हमारा उद्देश्य रचनाकारों की सुविधानुसार कम–से–कम लागत में उनकी पुस्तकों का प्रकाशन कर पाठकों तक पहुँचाना और साहित्य क्षेत्र में स्थापित करना है।

निदेशकः डॉ. गजेन्द्र सिंह 'बटोही' (अवै.)
सचिवः डॉ. अखिल चिलवाल (अवै.)
मो. 9412714210/8279460590

अविचल प्रकाशन

''सावित्री'' 15–वृन्दा विहार, निकट अमृत आश्रम, काठगोदाम बायपास
पो. कुसुमखेड़ा, ऊँचापुल, हल्द्वानी–263139 (नैनीताल) उत्तराखण्ड,
E-mail: avichalprakashan@gmail.com/drgsbatohi@gmail.com

For Data Analysis & Ph.D. Thesis Work
Contact Dr. Akhil Chilwal (Statistics), Mo. 9411883705

पैलि रचनाः

उजेई किड़

उजेई किड़
ढुनणौछी मनख्योव
य धरति में
पर यां मनख्योव उकैं
आजि तांलै नि मीलि ।
तब बटी
जगूनै में रै गो
झवू झवू कनै
सलाइ की तीलि ।।

दुसरि रचनाः

कुरसी

यो कुरसी बड़ी बेगानी छू
नेता ज्यूल यो ठानी छू ।
आब कुरसी कभैं नि छोडू
य तो राजनीति कि निशानी छू ।

तिसरि रचनाः

इसी कै मारि भजै घूंल तुकैं

कोरोना रे कोरोना
को छै तू
कांबै आ छै तू
तस रिसैल
तस बिखैल
सारि दुनी
हलकै है त्वैल
सारि दुनी
करि है घैल
कुछ तो रहम कर रे
आब तो तू मर रे
य दुनियै कि हाइ जालि कां रे
इतराई बाग गोइ खां रे
इतरै के रै छै तदुक तू
देख वैकसीन बणण दे
तब खालै हमार हाताक बुदुक तू
नि इतरा तदुक तू
पैली पैली त्यार ठगण में ऐ ग्याय
तबै सबै ध्वाक खै ग्याय
आब तो सबै चिताव है गईं
तू है जादे छाव है गई
होसल रयै मारि भजै घूंल
हम त्यार भुताड़ नचौ घूंल
सोशल डिस्टेंस अपनै रौ हमूल
घर में रौण
मुख पारि माव
हात धूणक नियम बणै रौ हमूल
आब तू के नि करि सकलै हमू कैं
हम इसी कै मारि भजै घूंल तुकैं ।।

–रतनसिंह किरमोलिया
अणां–गरुड़ (बागेश्वर)।

प्रेषक - सम्पादक 'कुमगढ़'
प0 खेड़ा (काठगोदाम) नैनीताल-263 126, मो-9719247882

प्रतिष्ठा में,

डाक पंजीकरण संख्या यू0ए0 नैनीताल-275/2018-2020

बादल भिना

—दामोदर जोशी 'देवांशु', पूर्व प्रधानाचार्य

बादव भिना बादव भिन
जथकै जॉछा उथकै तिन
तक धिना तक धिना धिन
भाजि गईं आब रुढ़िक दिन
जथ देखौ उथ गाड़ै गाड़
बाटि घाटिन में खाड़ै खाड़
च्वींण भैगो य कुड़िक खन
बादव भिना बादव भिन।।
जब लागडज्ञ हो तुम धार
घाम दिदि तब ऐंछ वार
रङी जॉछा तुम रत्तै ब्याल
मनम फुटनी कतु ख्याल
बरसि बरसि मरि जॉछा
धर्ति कैं पाणिल भरि जॉछा
हुणि खाणिक तु छै चिन
बादव भिना बादव भिन।।
सार अगास कत्थप छोपीं
सूर्ज अगासै खाव में चोपी
कौतिकै कौतिक त्यारै त्यार
छाजि जॉछौदेबिक दरबार
धर्ति दगाड़ करछा प्यार
हंसण भैजैं सारी सार
झड़ पाड़छा दिंछा कच्यार
पाणिक मालिक तुम होशियार
दिया न कभै परलया दिन
बादव भिना बादव भिन।।

ETHOS SERVICES, HLD. # 9719000998